मौसम

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
धनबाद	30.2	17.2
जमशेदपुर	30.2	15.6
डालटनगंज	28.8	13.1

तापमान डिग्री सेल्सियस में.

* *

धनबाद, रांची एवं पटना से प्रकाशित

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

www.lagatar.in | रविवार, 18 फरवरी 2024 ● माघ शुक्ल पक्ष 09, संवत 2080 ● पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹ 6 ● वर्ष : 1, अंक : 301 | आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

मंदी के फेर में फंसे दुनिया के 9 देश, चीन, जर्मनी और अमेरिका की भी हालत है खस्ता

जापान और ब्रिटेन में छाया मंदी का दौर

शुभम संदेश नेटवर्क

शुभम संदेश संडे खास

जापान और ब्रिटेन की इकॉनमी में दिसंबर तिमाही में गिरावट आई है. इसके साथ ही ये दोनों देश मंदी में फंस चुके हैं. इसकी वजह यह है कि जुलाई-सितंबर तिमाही में भी इन देशों की जीडीपी में गिरावट आई थी. टेक्निकली अगर किसी देश की इकॉनमी में लगातार दो तिमाहियों में गिरावट आती है, तो इसे मंदी कहते हैं. इस समय जापान और ब्रिटेन समेत दुनिया के नौ देश मंदी में फंसे हैं. इनमें डेनमार्क, एस्तोनिया, फिनलैंड, लक्जमबर्ग, मोल्दोवा, पेरू और आयरलैंड शामिल हैं.

दिलचस्प बात है कि मंदी में फंसे नौ देशों में से सात यूरोप के हैं. इस लिस्ट में अफ्रीका और नॉर्थ अमेरिका का कोई देश नहीं है. एशिया से केवल एक देश जापान मंदी से जूझ रहा है, जबकि दक्षिण अमेरिका का देश पेरू भी इस लिस्ट में है. मंदी में शामिल होने वाले देशों की लिस्ट में जापान और ब्रिटेन का नाम सबसे ताजा है. दिसंबर तिमाही में जापान की इकॉनमी में 0.4 फीसदी गिरावट रही. इससे पहले जुलाई से सितंबर तिमाही में देश की जीडीपी में 3.3% गिरावट आई थी. इसके साथ ही जापान दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं की लिस्ट में तीसरे से चौथे स्थान पर खिसक गया है. उसकी जगह यूरोप की सबसे बड़ी इकॉनमी जर्मनी अब तीसरे नंबर पर आ गई है.

ब्रिटेन के ऑफिस ऑफ नेशनल स्टैटिस्टिक्स के मुताबिक दिसंबर तिमाही में ब्रिटेन की इकॉनमी में 0.3% गिरावट रही. इससे पहले जुलाई से सितंबर के दौरान इसमें 0.1% की गिरावट आई है. ब्रिटेन इस समय दुनिया की छठी सबसे बड़ी इकॉनमी है. इस तरह दुनिया में टॉप 10 में शामिल दो अर्थव्यवस्थाएं मंदी की चपेट में आ चुकी हैं. कई और देशों पर भी इसका खतरा मंडरा रहा है. इनमें जर्मनी भी शामिल है. यूरोप की यह सबसे बड़ी इकॉनमी कई मोर्चों पर संघर्ष कर रही है.

देश में एनर्जी की कीमत चरम पर है और किसान आंदोलन कर रहे हैं. इसी तरह चीन के हालात भी लगातार खराब होते जा रहे हैं. देश में बेरोजगारी चरम पर है, लोग खर्च करने के बजाय बचत करने में लगे हैं, विदेशी कंपनियां और निवेशक मुंह मोड रहे हैं और अमेरिका के साथ तनाव चरम पर है. साथ ही अमेरिका पर भी कर्ज लगातार बढ़ रहा है और यह जीडीपी का 125 परसेंट पहुंच चुका है. यूरोप की सबसे बड़ी इकॉनमी जर्मनी के लिए भी हालात ठीक नहीं हैं.

जापान में क्या हुआ

कमजोर घरेलू मांग ने जापान पर असर डाला है और लगातार दूसरी तिमाही में इसमें गिरावट आई है, जिससे इस साल अपनी आसान नीति से बाहर निकलने की केंद्रीय बैंक की योजना के बारे में अनिश्चितता बढ़ गई है. जर्मनी अब दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हो गया है. परिवारों और व्यवसायों द्वारा तीसरी तिमाही में खर्च में कटौती से जापान की अर्थव्यवस्था पिछले साल डॉलर के मामले में चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई. आईएमएफ ने पिछले साल अक्टूबर में अनुमान लगाया था कि अमेरिकी डॉलर में मापने पर जर्मनी दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जापान से आगे निकलने की संभावना है. हालांकि, रैंकिंग में बदलाव की घोषणा आईएमएफ द्वारा तभी की जाएगी, जब दोनों देश अपने आर्थिक विकास के आंकड़ों के अंतिम संस्करण प्रकाशित कर देंगे. इसने 1980 में अर्थव्यवस्थाओं की तुलना करते हुए डेटा प्रकाशित करना शुरू किया.

ब्रिटेन का क्या हाल है

ब्रिटेन 2023 की दूसरी छमाही में हल्की मंदी की चपेट में आ गया, जिससे पता चलता है कि प्रधान मंत्री ऋषि सुनक अब तक अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के अपने वादे को पूरा करने में विफल रहे हैं. राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के जारी आंकड़े बताते हैं कि चौथी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद 0.3% गिर गया, जो अर्थशास्त्रियों के पूर्वानुमान से 0.1% की गिरावट से अधिक है. इसके बाद पिछले तीन महीनों में अपरिवर्तित 0.1% की गिरावट आई, जो अर्थशास्त्रियों की मंदी की तकनीकी परिभाषा, या संकुचन की लगातार दो तिमाहियों को पूरा करती है. पूरे वर्ष अर्थव्यवस्था में अभी भी 0.1% की वृद्धि हुई है, यह महामारी के पहले वर्ष को छोड़ कर, 2009 के बाद से यूके में देखा गया सबसे धीमा वार्षिक विस्तार था. ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था ने पिछली बार पिछले साल के पहले तीन महीनों में एक चौथाई वृद्धि दर्ज की थी.

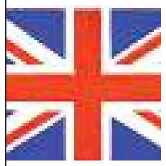

आम आदमी के लिए इसके क्या मायने हैं?

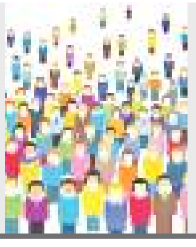

मंदी आम आदमी के लिए बुरी है. बीबीसी के मुताबिक, कंपनियों द्वारा कर्मचारियों की छंटनी करने से बेरोजगारी बढ़ सकती है. दूसरों को पदोन्नति पाने या मूल्य वृद्धि के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए पर्याप्त वेतन वृद्धि प्राप्त करना कठिन हो सकता है. हालांकि, मंदी का दर्द आम तौर पर पूरे समाज में समान रूप से महसूस नहीं किया जाता है, और असमानता बढ़ सकती है. निश्चित आय पर जीवन यापन करने वालों को अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, खासकर अगर सरकारें सार्वजनिक उपयोगिताओं पर खर्च कम कर दें.

भारत में कब-कब आई आर्थिक मंदी

1947 से अब तक भारत ने चार बार आर्थिक मंदी देखी है. पहली बार 1958 में.

- 1958 में ऐसा हुआ कि भारत की जीडीपी रो से भी नीचे यानी माइनस में चली गई. बिलों की दर में वृद्धि, इसकी मुख्य वजह बताई गई थी.
- भारत में दूसरी बार अर्थव्यवस्था को झटका लगा 1965-66 में. इस साल भारत में भयकर सूखा पड़ा, उत्पादन में भारी गिरावट आई. लिहाजा देश की जीडीपी फिर से एक बार माइनस में चली गई.
- तीसरी बार भारत में मंदी आई एक इंटरनेशनल कारण से. साल था 1973. पेट्रोलियम उत्पादक देशों के संगठन ओपेक ने उन तमाम देशों को तेल एक्सपर्ट करने पर रोक लगा दी जिन्होंने योम किप्पुर युद्ध के दौरान इजरायल का समर्थन किया था. इस घटना के चलते पूरी दुनिया में तेल की कीमतें 400 परसेंट तक बढ़ गई.
- फिर आया साल 1980. ईरान में अयातुल्लाह ख़ोमैनी के नेतृत्व में इस्लामिक क्रांति हुई और ईरान के शाह मोहम्मद रजा पहलवी को देश की बागडोर छोड़नी पड़ी. ईरानी क्रांति के कारण दुनिया भर में तेल उत्पादन को बड़ा झटका लगा. भारत का तेल आयात का बिल भी क़रीब दोगुना हो गया और भारत के निर्यात में आठ फ़ीसदी की गिरावट दर्ज की गई. साल 1979-80 में भारत का जीडीपी ग्रोथ -5.2 फीसदी रहा.
- साल 2008 को भी मंदी का दौर का दौर कहा जा सकता है. जब पूरी दुनिया ने मंदी की मार झेली थी. लेकिन तब भारत ने अपने मूलभूत मजबूत कारकों के चलते मंदी को बेहतर तरीके से झेला था.

ब्रीफ खबरें

जाऊंगा तो मीडिया को खबर करूंगा: कमलनाथ

नयी दिल्ली। भाजपा में शामिल होने की अटकलों के बीच कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम कमलनाथ शनिवार दोपहर में दिल्ली पहुंचे और कहा कि अगर ऐसी कोई बात होगी, तो वह इसकी जानकारी पहले मीडिया को देंगे.

370 सीटें जीत कर डॉ. मुखर्जी को श्रद्धांजलि दें

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को भाजपा के कार्यकर्ताओं से आगामी लोकसभा चुनाव में 370 सीट जीतने के लिए जी-जान से जुट जाने और इस लक्ष्य को हासिल कर पार्टी के विचारक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने को कहा.

केजरीवाल ने विस में जीता विश्वासमत

नयी दिल्ली। दिल्ली विधानसभा के बजट सत्र के दौरान सीएम अरविंद केजरीवाल द्वारा लाया गया विश्वास प्रस्ताव शनिवार को ध्वनिमत से पारित हो गया. विश्वास प्रस्ताव के दौरान सदन में आम आदमी पार्टी (आप) के 62 में से 54 विधायक मौजूद थे.

इनसैट-3डीएस को इसरो ने किया लॉन्च

नयी दिल्ली। इसरो ने शनिवार को इनसैट-3डीएस को लॉन्च कर दिया. इस सैटेलाइट के जरिए भारत के लिए मौसम की सटीक जानकारी जुटाना आसान होगा. इस सैटेलाइट को श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन स्पेस सेंटर सेलॉन्च किया गया. इसेजियोसिंक्रोनस लॉन्च वाहन एफ14 पर लॉन्च किया गया. इस सैटेलाइट का वजन 2,274 किलोग्राम है.

कांग्रेस के दर्जन भर विधायक नाराज, चले दिल्ली

टेंशन में सरकार

रवि भारती/ प्रवीण कुमार । रांची

झारखंड में चंपाई सोरेन के नेतृत्व वाली झामुमो सरकार में कांग्रेस के 4 विधायकों को मंत्री बनाए जाने को ले विधायकों के एक वर्ग में भारी असंतोष है. कांग्रेस के दर्जन भर विधायकों ने धमकी दी है कि अगर पार्टी के कोटे के मंत्रियों को बदला नहीं गया, तो वे 23 फरवरी से होने वाले बजट सत्र का बहिष्कार करेंगे. शनिवार को दिन में कांग्रेस के नाराज विधायकों ने राजधानी के पास एक होटल में बैठक कर आगे की रणनीति तय की.

कांग्रेस विधायकों ने अपने ही मंत्रियों को नन परफारमर बताते हुए बदलने की मांग की. विधायकों की नाराजगी का पता चलते ही झामुमो के नवनियुक्त मंत्री बसंत सोरेन उनसे मिलने होटल पहुंचे. नाराजगी दूर करने की कोशिश की, पर बात बनी नहीं. इस बीच मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन भी प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के साथ शाम को दिल्ली रवाना हुए. वहां वे कांग्रेस के दिग्गज नेताओं से मिल कर मंत्रिमंडल विस्तार की जानकारी देने के साथ ही कांग्रेस विधायकों की नाराजगी के बारे में भी बताएंगे.

सीएम के दिल्ली रवाना होने के कुछ देर बाद ही कांग्रेस के नाराज 8 विधायक भी दिल्ली कूच कर गए. ये कांग्रेस प्रभारी और अध्यक्ष राजेश ठाकुर से खासा नाराज हैं. उनका कहना है कि दोनों नें उन्हें अंधेरे में रखा, अब वे उनकी एक न सुनेंगे. शिल्पी नेहा तिर्की क्षेत्र में व्यस्त रहने के कारण दिल्ली नहीं जा सकीं, जबकि पूर्णिमा नीरज सिंह मां की तबीयत खराब होने के कारण नहीं जा सकीं.विक्सल कोंगाड़ी बीमार हैं, जबकि रामचंद्र सिंह क्षेत्र में थे. ये रविवार या सोमवार को दिल्ली जा सकती हैं. कांग्रेस विधायकों की नाराजगी से राज्य सरकार टेंशन में है.

मंत्रियों को बदलो, कई विधायक दिल्ली गये

सीएम चंपाई सोरेन दिल्ली गए, कांग्रेस आलाकमान से मिलेंगे

हर प्रमंडल से एक मंत्री बनाया जाए

विधायक कुमार जयमंगल उर्फ अनूप सिंह ने बताया, हम मौजूदा चारों मंत्रियों को बदलना चाहते हैं...चार मंत्रियों और प्रदीप यादव को छोड़ कर हम सभी 12 विधायक एक साथ हैं. हम चार मंत्रियों को बदलने की मांग पर नेतृत्व के फैसले का इंतजार कर रहे हैं. उन्होंने कहा, ''हम चाहते हैं कि हर प्रमंडल से एक मंत्री बनाया जाए और राज्य के सभी पांच प्रमंडल को कवर किया जाए. हम राहुल गांधी द्वारा बनाए गए 'एक व्यक्ति, एक पद' के नियम को भी लागू करना चाहते हैं.''

अपने ही मंत्रियों को नन परफामर बता रहे विधायक

झामुमो के नेतृत्व वाले गठबंधन के पास 81 सदस्यीय विधानसभा में 47 विधायक (झामुमो के 29, कांग्रेस के17 और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के एक) हैं. आलमगीर आलम, रामेश्वर ओरांव, बन्ना गुप्ता और बादल पत्रलेख को दोबारा मंत्री बनाए जाने के कांग्रेस के फैसले से नाखुश विधायकों ने शुक्रवार को शपथ ग्रहण समारोह से ठीक पहले रांची के सर्किट हाउस में हंगामा किया था. उन्होंने शपथ ग्रहण समारोह का बहिष्कार करने की योजना बनाई थी. हालांकि, झारखंड कांग्रेस प्रभारी गुलाम अहमद मीर और प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष राजेश ठाकुर के मनाने पर विधायक समारोह में शामिल होने के लिए राजभवन तो पहुंचे थे, लेकिन अब खुलकर अपने ही मंत्रियों को नन परफार्मर बताते हुए बदलने की मांग आलाकामान से कर रहे हैं.

कांग्रेस की प्रेशर पॉलिटिक्स से टला था शपथ ग्रहण

कांग्रेस की प्रेशर पॉलिटिक्स के कारण ही चंपाई मंत्रिमंडल के विस्तार की तिथि टली थी. पहले तो कांग्रेस नें 12 वें मंत्री पद पर दावेदारी कर दी थी, जिसे लेकर विवाद बढ़ा. यहीं वजह है कि अनुसूचित जाति तबके के वैद्यनाथ राम का अंतिम समय में मंत्री पद का पत्ता कट गया और सीएम ने 12वें मंत्री का पद खाली ही रखा. उधर कांग्रेस खेमे के विधायक पुराने मंत्रियों को नन परफामर बताते हुए बदलने की भी मांग कर रहे थे. कांग्रेस कोटे के मंत्रियों का परफारमेंस खराब होने की शिकायत आलाकमान तक पहुंची थी. लेकिनइस बिना पर अगर कांग्रेस आलाकामन मंत्रियां को बदलने का निर्णय लेता, तो यह सवाल उठता कि परफारमेंस खराब था, तो चार साल तक उन्हें मंत्री क्यों बनाए रखा गया. इससे बचने के लिए आलाकमान ने पुराने मंत्रीयों को ही बनाये रखा. हालांकि कांग्रेस 12 वें मंत्री पद पर दमदार तरीके से दावा कर रहा है.

- शेष पेज 07 पर ...

सरकार और किसानों के बीच चौथे दौर की वार्ता आज

कुमार माधवन

पंजाब-हरियाणा के शंभू बॉर्डर पर पिछले छह दिनों से किसान आंदोलन जारी है. पंजाब के हजारों किसान अलग-अलग शहरों व गांवों से आकर बॉर्डर पर डटे हुए हैं. इस बीच संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) ने चेतावनी भरे लहजे में कहा है कि अगर उनकी मांगें नहीं मानी गईं, तो आने वाले दिनों में किसान आंदोलन और तेज होगा. पिछले दिनों केंद्र के साथ किसानों की हुई तीसरे दौर की बातचीत भी बेनतीजा रही. आज केंद्र सरकार और किसानों के बीच चौथे दौर की बातचीत होने वाली है, जिस पर पूरे देश की नजरें टिकी हुई हैं. वहीं, केंद्रीय कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा ने उम्मीद जताई है कि आज किसान संगठनों के साथ होने वाली बैठक में समाधान निकलेगा.

किसान आंदोलन

- शंभू बॉर्डर पर पिछले छह दिनों से किसान आंदोलन जारी
- **चौथे दौर की बातचीत पर पूरे देश की नजर**
- हाईवे पर दिल्ली की ओर ट्रैक्टर खड़े कर विरोध जताएंगे किसान
- **भूख के आधार पर रोटी तय होगी : राकेश टिकैत**

ये पूंजीपतियों की सरकार है : राकेश टिकैत

किसान नेता राकेश टिकैत ने मुजफ्फरनगर में महापंचायत में कहा कि किसानों पर अत्याचार हो रहा है. देश में जमीनों की कीमतें बढ़ेंगी, लेकिन फसल की कीमत कम होंगी. हमने 13 महीने जो आंदोलन चलाया था, तब भी कहा था कि देश में रोटी पर कब्जा होगा, भूख के आधार पर रोटी तय होगी. यदि ये सरकार अगर अटल-आडवाणी की होती तो हमारी बात मानती, लेकिन ये सरकार पूंजीपतियों की सरकार है. राकेश टिकैत ने कहा कि टिकैत परिवार के किसी सदस्य को आंदोलन में कुर्बानी देनी पड़ेगी. पहले 2008, फिर 2021 और वर्तमान में भी ऐसे ही हालात हैं. लेकिन, हम छाती पर गोली खाने से पीछ नहीं हटेंगे.

21 को 4 जिलों में प्रदर्शन का एलान

किसान आंदोलन के समर्थन में आहूत भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) की पंचायत में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि 21 फरवरी को उत्तर प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड और दिल्ली के जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शन किया जाएगा. इसके अलावा 26 और 27 फरवरी को किसान हरिद्वार से गाजीपुर तक अपने-अपने क्षेत्र में हाईवे पर दिल्ली की ओर ट्रैक्टर खड़े कर विरोध जताएंगे. हाईवे को वनवे कराकर वाहनों का आवागमन भी जारी रहेगा.

सूरते-हाल

रघुवर सरकार ने राजा बंगला की 4.85 एकड़ जमीन की खरीद-बिक्री एवं किसी भी निर्माण कार्य पर लगाई थी रोक

रोक के बावजूद किसके इशारे पर बन रहा चार मंजिला मकान

प्रमोद उपाध्याय। हजारीबाग

जिले में शहर से लेकर गांव तक जमीन पर अवैध कब्जे का मामला लगातार उजागर हो रहा है. अब तो भू माफियाओं का मनोबल इतना बढ़ गया है कि अधिकारी से लेकर सरकार के आदेश का भी इन्हें कोई डर नहीं है. सरकारी रोक के बावजूद भी बोर्ड उखाड़ कर जमीन की खरीद-बिक्री की जा रही है. वर्तमान में राजा बंगला पर भू-माफियों की नजर पड़ गई है.

राजा बंगला के खाता नंबर 15, प्लॉट नंबर 35, 35/ 244 / 35, 245 रकबा करीब 4.85 एकड़ जमीन पर पदमा राजा कामाख्या नारायण सिंह की दावेदारी थी. वे राजा बंगला में बने मकान से किराया वसूलते थे और खाली जमीन की बिक्री भी करते थे. सुप्रीम कोर्ट में लंबे समय तक राज्य सरकार और राजा कामाख्या नारायण के बीच उक्त जमीन को लेकर मुकदमा चला और अंत में फैसला राज्य सरकार के पक्ष में आया. वर्ष 2018 में झारखंड की तत्कालीन रघुवर सरकार ने राजा बंगला की 4.85 एकड़ जमीन की खरीद-बिक्री एवं नवनिर्मित भवन एवं बने हुए मकान पर किसी प्रकार का कार्य नहीं होने का आदेश जारी किया था. इससे संबंधंधित एक बोर्ड भी लगाया गया है. लेकिन राजा बंगला में रहने वाले मकान मालिक इन दिनों सरकार के आदेश को ठेंगा दिखाते नजर आ रहे हैं. बोर्ड को उखाड़ कर फेंक दिया गया है.यहां लगातार चार मंजिला मकान बनाए जा रहे हैं और विभाग मौन है. इससे मकान मालिकों का मनोबल बढ़ता ही जा रहा है. शहर में बालू की भारी किल्लत के बावजूद भी राजा बंगला में कई गाड़ी बालू उपलब्ध हो रहा है. राजा बंगला में रहनेवाले कई लोगों ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि विभाग से मिली भगत से यहां मकान बन रहे हैं. राजा बंगला में रहनेवाले ऐसे कई लोग हैं, जिनका मकान अधूरा है. ये लोग अपने मकान का सुंदरीकरण और दो-तीन मंजिला करना चाहते हैं, लेकिन वे लोग सरकार के आदेश का पालन कर रहे हैं.

विभाग मौन

- भू-माफियाओं ने सरकारी बोर्ड उखाड़ कर फेंक दिया
- 2018 में किसी प्रकार के निर्माण कार्य पर लगी थी रोक

राजा बंगले में धड़ल्ले से चल रहा निर्माण का कार्य.

क्या कहते हैं अधिकारी

तीन माह पूर्व ही मेरा तबदाला हो चुका है. मेरे कार्यकाल तक राजा बंगला में निर्माण कार्य करने या जमीन की खरीद-ब्रिकी करने के संबंध में सरकार का कोई आदेश नहीं आया था. वर्तमान के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है.
- **राजेश कुमार**, पूर्व सीओ, सदर अंचल

अभी मैं शहर में नया आया हूं और मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है. विस्तृत जानकारी मिलेगी, तो हम जांच करवा लेंगे. अगर सरकार द्वारा मकान बनाने का कोई आदेश नहीं दिया होगा, तो दोषियों पर कार्रवाई की जाएगी. - **संतोष कुमार सिंह**, अपर समाहर्ता

गुलजार व रामभद्राचार्य को ज्ञानपीठ पुरस्कार

एजेंसी। नयी दिल्ली

उर्दू के गीतकार गुलजार और संस्कृत विद्वान रामभद्राचार्य को 2023 का ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जाएगा. यह जानकारी सेलेक्शन पैनल नेदी है. दोनों ही हस्तियां अपने-अपने क्षेत्र में काफी मशहूर हैं. जहां गुलजार ने फिल्मों में गीत लेखन के अलावा गजल और कविता के क्षेत्र में मशहूरी हासिल की है. वहीं, जन्मांध जगद्गुरु रामभद्राचार्य संस्कृत और वेद-पुराणों के विद्वान हैं.

गुलजार को हिंदी सिनेमा में उनके कामों के लिए जाना जाता है. उन्हें इस समय के बेहतरीन कवियों में से एक माना जाता है. इससे पहले उन्हें 2002 में उर्दू के लिए साहित्य अकादमी, 2013 में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार, 2004 में पद्म भूषण भी मिल चुका है.

इसके अलावा हिंदी सिनेमा में 5 राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिल चुके हैं. चित्रकूट में तुलसी पीठ के संस्थापक राम भद्राचार्य, आध्यात्मिक नेता, शिक्षक और 100 से अधिक पुस्तकों के लेखक हैं. ज्ञानपीठ कमेटी ने अपने बयान में कहाकि पुरस्कार (2023 के लिए) दो भाषाओं के प्रख्यात लेखकों संस्कृत साहित्यकार जगद्गुरु रामभद्राचार्य और उर्दू साहित्यकार गुलजार को देने का निर्णय लिया गया है. गोवा के लेखक दामोदर मौजो को 2022 के लिए यह प्रतिष्ठित पुरस्कार मिला था.

आबादी से आधा किलोमीटर दूर लगानी होगी रसायन और इलेक्ट्रो रसायन की फैक्ट्री

एक्शन में पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड: रासायनिक उत्पादों की फैक्ट्री रेड कैटेगरी में शामिल

प्रमुख संवाददाता। रांची

झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड एक्शन में आ गया है. शुभम संदेश अखबार में लगातार प्रदूषण की खबर छपने के बाद प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने अब उद्योगों की स्थापना के लिए राज्य में लागू गाइड के प्रावधानों में संशोधन कर दिया है. बोर्ड के मेंबर सेक्रेटरी वाइके दास के हस्ताक्षर से यह आदेश जारी कर दिया गया है. जारी आदेश में रसायन, एसिड और इलेक्ट्रो रसायन के उद्योगों के एनओसी के लिए गाइडलाइन जारी किए गए हैं. जारी गाइडलाइन के अनुसार इस तरह के उद्योगों को रेड कैटेगरी में रखा गया है. साथ पॉल्यूशन इंडेक्स का मापदंड 75 रखा गया है.

शुभम संदेश इंपैक्ट

बोर्ड के मेंबर सेक्रेट्री ने जारी किया आदेश, एनओसी के लिए गाइड लाइन में हुआ संशोधन

सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट पर करोड़ों खर्च, नतीजा सिफर
कचरा और प्रदूषण की मार, झारखंड बेजार
8500 टन फ्लाई ऐश से रोजाना वातावरण में घुल रहा जहर

छपी खबर.

प्लास्टिक उद्योग ऑरेंज कैटेगरी में शामिल

एनओसी के लिए प्लास्टिक उद्योग को ओरेंज कैटेगरी में शामिल किया गया है. इसके लिए पॉल्यूशन का इंडेक्स 50 रखा गया है. इसमें राष्ट्रीय राजमार्ग से 50 मीटर , राज्यमार्ग से 25 मीटर, रेलवे लाइन से 50 मीटर और नदी या तालाब से 50 मीटर की दूरी का मापदंड तय किया गया है. 800 से अधिक आबादी वाले क्षेत्रों से 200 मीटर, वन भूमि से 150 मीटर, वाइल्ड लाइफ सेंचुरी व नेशनल पार्क से 500 मीटर की दूरी की शर्त रखी गई है.

रासायनिक उत्पादों की फैक्ट्री के लिए ये होंगी शर्तें

पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के अनुसार रासायनिक उत्पादों से जुड़े फैक्ट्री के एनओसी के लिए फैक्ट्री को 800 से अधिक आबादी वाले क्षेत्रों से आधा किलोमीटर की दूरी पर फैक्ट्री स्थापित करना होगा. राष्ट्रीय राजमार्ग से 100 मीटर की दूरी अनिवार्य है. राज्य मार्ग से 50 मीटर और रेलवे लाइन से 200 मीटर की दूरी होनी चाहिए. नदी या तालाब से 200 मीटर, वन भूमि से 500 मीटर और वाइल्ड लाइफ सेंचुरी व नेशनल पार्क से 1000 मीटर की दूरी होनी चाहिए. तभी एनओसी मिलेगी.

शराब की फैक्ट्री के लिए पॉल्यूशन इंडेक्स 50 तय

शराब की फैक्ट्री के लिए पॉल्यूशन इंडेक्स 50 तय किया गया है. इसे ओरेंज कैटेगरी में शामिल किया गया है. वहीं राष्ट्रीय राजमार्ग से 50 मीटर, राज्य मार्ग से 25 मीटर, रेलवे लाइन से 50 मीटर, नदी या तालाब से 50 मीटर की दूरी निर्धारित की गई है. वन भूमि से 150 और सेंचुरी व नेशनल पार्क से 500 मीटर की दूरी निर्धारित की गई है. 800 से अधिक आबादी वाले क्षेत्रों से 200 मीटर की दूरी निर्धारित की गई है.

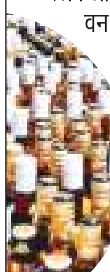

फूड प्रोसेसिंग उद्योगों के लिए एनओसी की शर्तों में हुआ परिवर्तन, पॉल्यूशन इंडेक्स 43.75

झारखंड राज्य पॉल्यूशन कंट्रोल ने फूड प्रोसेसिंग उद्योगों के लिए भी एनओसी की शर्तों में परिवर्तन किया है. इसके लिए पॉल्यूशन इंडेक्स 43 .75 तय किया गया है. राष्ट्रीय राजमार्ग से 50 मीटर, राज्यमार्ग से 25 मीटर, रेलवे लाइन से 50 मीटर, नदी–तालाब से 100 मीटर, वन भूमि से 200 मीटर, सेंचुरी व नेशनल पार्क से 500 मीटर की दूरी निर्धारित की गई है. वहीं 800 से अधिक आबादी आबादी वाले क्षेत्रों से 200 मीटर की दूरी निर्धारित की है.

भाजपा प्रतिष्ठा बचाने में जुटी और झामुमो को नंबर बढ़ाने की चिंता

जदयू हाशिए पर, कांग्रेस में घमासान

रवि भारती। रांची

लोकसभा चुनाव का जल्द ही शंखनाद होने वाला है. पाला बदलने का सिलसिला भी शुरू हो गया है. बयानों के तीर पर तीर चलाए जा रहे हैं. सभी राजनीतिक दलों के लिए अग्नि परीक्षा की घड़ी आ गयी है. राजनीतिक दलों के लिए लोस चुनाव की डगर कठिन भी है. सभी दलों में कमोबेश एक ही स्थिति बनी हुई है. कोई अंदरूनी झगड़े-गुटबाजी से परेशान है, तो कोई अपनी धार तेज करने में जुटा है. कुछ दल महागठबंधन की वकालत भी कर रहे हैं, तो दबी जुबां अकेले दम पर चुनाव लड़ने का भी दावा कर रहे हैं. पॉलिटिकल जोर आजमाइश जारी है. संगठन की मजबूती और जनाधार बढ़ाने पर सभी का फोकस भी है. जानिए झारखंड में दलों का हाल...

हाशिए पर जदयू का वजूद : झारखंड में जदयू का वजूद हाशिए पर है. तीर निशान वाली इस पार्टी का तीर कुंद हो गया है. संगठन कमजोर है. पार्टी के पदाधिकारी इसे पटरी पर लाने के लिए प्रयासरत हैं, पर राज्यस्तरीय चेहरा नहीं है. एनडीए का अहम पार्टनर होने के बावजूद भाजपा की हिकारत का सामना कर रहा है. नतीजतन पार्टी को बचाने की कवायद है. एकीकृत बिहार के मौजूदा झारखंड क्षेत्र से दो सीटों पर जदयू का कब्जा था. समता पार्टी के रूप में छह सीटें भी थीं. बाद में समता पार्टी का जदयू में विलय हो गया.

पॉलिटिकल ड्रामा जारी, संगठन की मजबूती व जनाधार बढ़ाने पर सभी का फोकस

कार्यकर्ताओं की उपेक्षा कांग्रेस की बड़ी परेशानी

- कार्यकर्ताओं को तरजीह नहीं मिलने के कारण नीचे स्तर के कार्यकर्ता दूसरे दलों के लिए काम करने लगे हैं
- **चुनाव के समय टिकट का बंटवारा राष्ट्रीय स्तर पर होता है**
- जुगाड़ व्यवस्था ज्यादा है, जिसका नतीजा है कि पार्टी के पुराने लोगों का मोह भंग होता जा रहा है
- **पार्टी या नेताओं का राज्यस्तरीय आक्रामक तेवर कम दिख रहा है**
- बड़े कार्यक्रम का आयोजन लंबे समय तक नहीं हो सका है
- **सिर्फ न्याय यात्रा के बहाने लोगों को साधने की कोशिश में लगे हैं**

झामुमो को सता रही है गणित की चिंता

कार्यकारी अध्यक्ष हेमंत सोरेन के न्यायिक हिरासत में जाने के बाद झामुमो नेतृत्व की चिंता बढ़ गई है. वहीं गणित की भी चिंता सता रही है. झामुमो के लिए संताल और कोल्हान गढ़ माना जाता है. यहां भाजपा सेंधमारी की कोशिश में लगी है, जिससे झामुमो की चिंता बढ़ रही है. हालांकि झामुमो द्वारा कार्यक्रमों के जरिए जनाधार बढ़ाने की कोशिश की जा रही है. भाजपा ने भी संताल में पूरी ताकत झोंक दी है.

झामुमो की परेशानी का कारण

संताल–कोल्हान में भाजपा की सेंधमारी की कोशिश

गठबंधन नहीं होने की स्थिति में घट सकता है जनाधार

लोस चुनाव : भाजपा की प्रतिष्ठा का सवाल

लोकसभा चुनाव भाजपा के लिए प्रतिष्ठा का विषय है. भाजपा ने बूथ स्तर पर तैयारी शुरू कर दी है. भाजपा में अंदरूनी कलह या यो कहें गुटबाजी भी है. आनेवाले समय में टिकट को लेकर खींचतान से निपटना बड़ी चनौती होगी. हालांकि पार्टी ने कार्यकर्ताओं से कह दिया है कि वे लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुट जाएं. पार्टी नेतृत्व प्रयास कर रहा है कि प्रदेश के नेता एकजुट होकर चुनाव में जाएं. हालांकि, यहां की कहानी कुछ और ही है.

क्या है भाजपा की परेशानी

- पार्टी में गुटबाजी है, पर नेता मानते नहीं
- कार्यकर्ताओं में काफी नाराजगी है
- आदिवासी और गैर आदिवासी के सवाल पर पार्टी में मतभेद है

क्या है आजसू का निगेटिव प्वाइंट

- सत्ता से चिपके रहने का आरोप
- सरकार को समर्थन देने के एवज में सौदेबाजी का आरोप
- पूरे राज्य में अब तक आजसू की पहचान नहीं बन सकी
- आदिवासी वोट बैंक पर पार्टी और इसके नेताओं की पकड़ ढीली

राजद का घटता जनाधार

राजद के लिए सबसे बड़ी परेशानी यह है कि उसका जनाधार घट रहा है. महिला, युवा, छात्र संगठन भी कमजोर हो चला है. यह राजद के लिए परेशानी का सबब हो सकता है. पलामू, देवघर और चतरा में राजद का जनाधार तो है, लेकिन बड़े नेता का कोई कार्यक्रम नहीं हुआ है. राजद ने अब तक कोई बड़ा अभियान भी नहीं चलाया है. फिलहाल झारखंड सरकार में राजद कोटे से सत्यानंद भोक्ता कैबिनेट मंत्री हैं.

जनाधार बढ़ाने को फूंक-फूंक कर कदम बढ़ा रही है आजसू

आजसू जनाधार बढ़ाने में जुटी है. फिलहाल मिलन समारोह का दौर चल रहा है. पिछले चुनाव में आजसू ने गिरिडीह सीट पर कब्जा जमाया था. लेकिन इस बार जयराम महतो सहित अन्य नेताओं की दावेदारी ने आजसू की परेशानी बढ़ा दी है. वहीं सीट शेयरिंग पर भी खींचतान हो सकती है. पार्टी फूंक–फूंक कर कदम रख रही है. राज्य में मिलन समारोह के जरिये कार्यकर्ताओं को पार्टी में शामिल कराया जा रहा है.

गुटबाजी है कांग्रेस की सबसे बड़ी कमजोरी

कांग्रेस में गुटबाजी चरम पर है. संगठन की यह सबसे बड़ी कमजोरी है. झारखंड में सत्ता में रहने के बावजूद कांग्रेस की हनक नहीं दिखती. धरातल पर पार्टी की गतिविधियां नहीं दिख रहीं. बयानबाजी में कांग्रेसी माहिर हैं. अध्यक्ष तक के चयन में केंद्रीय नेतृत्व की परमिशन जरूरी है. मंत्री पद को लेकर अब तक अफरा–तफरी भी मची हुई है. विक्षुब्ध विधायकों ने प्रदेश अध्यक्ष के खिलाफ मोर्चा भी खोल रखा है. दोनों के गुट अलग–अलग हैं, जिसका नजारा समय–समय पर देखने को मिलता है.

हॉर्स ट्रेडिंग में गृह विभाग के अपर सचिव को नोटिस

राज्यसभा चुनाव-2016

संवाददाता। रांची

झारखंड में राज्यसभा चुनाव-2016 में हॉर्स ट्रेडिंग मामले में गृह विभाग के अपर सचिव को नोटिस भेजा गया है. जगन्नाथपुर थाना में दर्ज मामले में अनुसंधानकर्ता की ओर से साक्ष्य की कमी बताते क्लोजर रिपोर्ट एसीबी की अदालत में दाखिल किए जाने मामले में गृह विभाग के अपर सचिव अविनाश चंद्र ठाकुर को एसीबी कोर्ट ने नोटिस जारी कर 16 मार्च को अदालत में उपस्थित होने का निर्देश जारी किया गया है. मामले के अनुसंधानकर्ता ने जनवरी 2024 में क्लोजर रिपोर्ट दायर करते हुए इस केस को बंद करने का आग्रह एसीबी कोर्ट से किया है. इसके आलोक में अदालत ने शिकायतकर्ता को नोटिस जारी किया है.

अनुराग गुप्ता को विभागीय जांच में मिली थी क्लीन चिट : बता दें कि हॉर्स ट्रेडिंग मामले में जगन्नाथपुर थाने में दर्ज प्राथमिकी के आरोपित एडीजी अनुराग गुप्ता पर चल रही विभागीय जांच सितंबर 2021 में पूरी हो गई थी. विभागीय कार्रवाई संचालन पदाधिकारी डीजी एमवी राव ने (सेवानिवृत्ति) 30 सितंबर 2021 को राज्य सरकार को अपनी अंतिम रिपोर्ट सौंप दी थी. इस रिपोर्ट में एडीजी अनुराग गुप्ता के विरुद्ध कोई ठोस साक्ष्य नहीं मिलने के कारण उन्हें क्लीन चिट दे दी गई है.

भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश पर दर्ज हुई थी प्राथमिकी

विशेष शाखा के तत्कालीन एडीजी अनुराग गुप्ता पर वर्ष 2016 के राज्यसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में कांग्रेस की विधायक निर्मला देवी को पैसे का लालच देने का आरोप लगा था. भारत निर्वाचन आयोग ने झारखंड विकास मोर्चा की शिकायत पर इसकी जांच कराई थी. आयोग ने प्रथम दृष्ट्या आरोप को सही पाते हुए उनके विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने का आदेश दिया था. हॉर्स ट्रेडिंग मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम (पीसी एक्ट) जोड़ने का आदेश भारत निर्वाचन आयोग का ही था. भारत निर्वाचन आयोग ने सुनवाई के बाद 2017 में ही हॉर्स ट्रेडिंग मामले में धारा 171बी व 171सी भारतीय दंड विधान के अलावा भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम भी लगाने का आदेश दिया था.

जमीन घोटाला मामला

भानु की रिमांड अवधि खत्म, भेजा गया जेल

रांची । जमीन घोटाला मामले में गिरफ्तार बड़गाईं अंचल का निलंबित उप-निरीक्षक भानु प्रताप प्रसाद की रिमांड अवधि शनिवार को खत्म हो गई. जिसके बाद उन्हें ईडी की विशेष अदालत में पेश किया. इसके बाद कोर्ट ने 22 फरवरी तक के लिए भानु को न्यायिक हिरासत में होटवार जेल भेज दिया गया. ईडी ने भानु प्रताप को रिमांड पर लेकर कुल 12 दिनों तक पूछताछ की. भानु प्रताप पहले से ही बरियातू की सेना की जमीन घोटाला मामले में जेल में बंद है. ईडी ने उन्हें इस मामले में भी गिरफ्तार कर लिया है. दरअसल ईडी हेमंत सोरेन एवं भानु प्रताप को आमने-सामने बैठकर पूछताछ की थी.

रुइन हाउस बार के बाहर दो पक्षों के बीच झड़प के बाद फायरिंग

संवाददाता। रांची

मोरहाबादी मैदान स्थित रुइन हाउस बार के बाहर दो पक्षों के बीच झड़प के बाद फायरिंग की घटना हुई है. यह घटना शुक्रवार देर रात की बताई जा रही है. गोलीबारी की घटना को लेकर बरियातू थाना में प्राथमिकी भी दर्ज करायी गयी है. घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि रुइन बार एंड रेस्टोरेंट में दो पक्षों के बीच विवाद के बाद एक पक्ष की ओर से फायरिंग की गयी. हालांकि इस फायरिंग में किसी को गोली नहीं लगी,लेकिन कुछ देर के लिए मौके पर भगदड़ मच गई.

धनबाद से कुछ युवक जन्मदिन मनाने आये थे

बताया जाता है कि धनबाद से कुछ युवक अपना जन्मदिन मनाने रेस्टोरेंट में आये थे. उसी रेस्टोरेंट में रांची के कांके रोड के कुछ युवक पहले से मौजूद थे. पार्टी के दौरान ही दोनों पक्षों के बीच किसी बात को लेकर विवाद हो गया. मामला पहले गाली-गलौज से शुरू हुआ, जिसके बाद नौबत हाथापाई तक पहुंच गई. इस बीच बार में मौजूद बाउंसर ने दोनों पक्षों को समझाया और बार से बाहर कर दिया. लेकिन बाहर आते ही दोनों पक्ष आपस में भिड़ गये. इसी बीच कांके रोड के एक युवक, जिसका नाम अमित सिंह बताया जा रहा है कि उन्होंने अपने लाइसेंसी हथियार से फायरिंग कर दी. हालांकि गोली किसी को नहीं लगी. मामले की सूचना पाकर जब तक बरियातू पुलिस मौके पर पहुंची, तब तक एक पक्ष के लोग जिन्होंने फायरिंग की थी, वे मौके से भाग चुके थे. पुलिस ने रेस्टोरेंट के बाहर से एक खोखा भी बरामद किया है.

नियुक्ति परीक्षा: सीटेट पास भी कर सकेंगे आवेदन

रांची। जेएसएससी के 26001 पदों पर होने वाली सहायक आचार्य नियुक्ति परीक्षा में अब सीटेट पास अभ्यर्थी भी शामिल हो सकेंगे. जेएसएससी ने परीक्षा के लिए निकाले गये विज्ञापन में आंशिक संशोधन किया है. संशोधित विज्ञापन के मुताबिक, अभ्यर्थी जिस सब्जेक्ट या सब्जेक्ट ग्रुप में शिक्षक पात्रता परीक्षा (टेट) पास होंगे, उसी सब्जेक्ट या सब्जेक्ट ग्रुप में राज्यस्तरीय मेधा सूची के आधार पर सहायक आचार्य के पद पर नियुक्ति के पात्र होंगे.

झारखंड में बार-बार हो रही सांप्रदायिक माहौल बिगाड़ने की साजिश, साल भर में 17 बार की जा चुकी है कोशिश

सौरभ सिंह। रांची : रांची जिले के नगड़ी में प्रतिमा विसर्जन करने जा रहे जुलूस पर कल पत्थरबाजी कर राज्य का सांप्रदायिक माहौल बिगाड़ने की कोशिश की गयी. यह इस तरह की पहली घटना नहीं है, इससे पहले भी कई बार झारखंड में सांप्रदायिक माहौल बिगाड़ने की साजिश रची गयी है. पिछले एक साल की बात की जाए, तो झारखंड के अलग अलग जिलों में 17 बार सांप्रदायिक माहौल बिगाड़ने साजिश रची गयी. कई जगहों पर पुलिस की तत्परता से माहौल शांत कराया गया.

जानें, कब-कब सांप्रदायिक माहौल बिगाड़ने की साजिश रची गयी

16 फरवरी 2024 : रांची के नगड़ी में मूर्ति विसर्जन करने जा रहे जुलूस पर पथराव किया गया. जिसके बाद स्थिति तनावपूर्ण हो गयी थी.
21 जनवरी 2024: धनबाद में भगवा झंडा लगाने को लेकर दो समूहों के बीच मारपीट और पत्थरबाजी की घटना हुई.
08 जनवरी 2024: रांची बरियातू में असामाजिक तत्वों ने देवी-देवताओं की प्रतिमा को क्षतिग्रस्त कर दिया था, जिसके बाद लोग आक्रोशित हो गये थे.
17 नवंबर 2023: रांची के मांडर थाना क्षेत्र स्थित मुड़मा में असामाजिक तत्वों ने चार मंदिरों की प्रतिमा को खंडित कर दिया. प्रतिमा खंडित होने की वजह से ग्रामीण उग्र हो गये और सड़क जाम कर दी थी.
5 नवंबर 2023: बोकारो के ललपनिया थाना क्षेत्र में असामाजिक तत्वों के धार्मिक स्थल में देवी देवता की प्रतिमा विखंडित कर दी थी. इसे लेकर आक्रोशित लोगों ने ललपनिया गोमिया मुख्य मार्ग को जाम कर दिया था.
04 नवंबर 2023: गढ़वा जिला के सदर थाना के बलिगढ़ गांव के धार्मिक स्थल में शरारती तत्वों ने तोड़फोड़ की थी. जिससे लोग आक्रोशित हो गये थे.
30 सितंबर 2023: धनबाद के गोविंदपुर में कुछ युवकों ने धार्मिक स्थल परिसर में तोड़फोड़ कर मूर्तियों को खंडित किया. जिससे लोग आक्रोशित हो गये थे.
17 अगस्त 2023: धनबाद जिले में चल रही शांति समिति की बैठक के दौरान नारेबाजी और पत्थरबाजी की गयी थी. माहौल बिगड़ता देख पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा था.
10 अप्रैल 2023: जमशेदपुर के शास्त्रीनगर में एक धार्मिक झंडे के अपमान के बाद दो गुटों के बीच पथराव के बाद जमकर आगजनी की गयी थी.
15 अप्रैल 2023 : बोकारो के माराफारी थाना इलाके के कसियाटाड़ मैदान स्थित धार्मिक स्थल में असामाजिक तत्वों ने तोड़फोड़ की थी.
04 अप्रैल 2023: जुलूस के दौरान हजारीबाग के इंद्रपुरी चौक स्थित धार्मिक स्थल में तोड़फोड़, आपत्तिजनक नारा लगाने और पथराव करने का मामला सामने आया था.
03 अप्रैल 2023 : साहिबगंज में पटेल चौक के पास एक धार्मिक स्थल में कुछ उपद्रवियों ने तोड़फोड़ की थी.
04 फरवरी 2023 : बोकारो में एक धार्मिक स्थल में चोरी की घटना सामने आयी. इतना ही नहीं चोरों ने धार्मिक स्थल में जमकर तोड़फोड़ भी की थी.
03 जनवरी 2023 : दुमका के शिकारीपाड़ा प्रखंड के ढाका गांव में स्थित धार्मिक स्थल पर असामाजिक तत्वों ने प्रतिबंधित वस्तु फेंक दी थी.

CLASSIFIED

EDUCATION
TO-LET
BUSINESS
REAL ESTATE
RECRUITMENT
MATRIMONY
& Many More
Book your CLASSIFIED ADS IN
हिन्दी दैनिक शुभम संदेश
एक राज्य-एक अखबार
Contact : 9835511272, 9905709361, 9546277001, 7004715743

राज्यभर की खबरों के लिए स्कैन करें

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

www.lagatar.in | रविवार, 18 फरवरी 2024 ● माघ शुक्ल पक्ष 09, संवत 2080 ● पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹ 8 ● वर्ष : 1, अंक : 301 | आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई के लिए सरायढेला **थाने में शव रख किया प्रदर्शन, नारेबाजी**

सरस्वती पूजा विसर्जन में मारपीट के बाद किशोर ने लगाई फांसी

अस्पताल में शव का पंचनामा करने से पुलिस को रोका, परिजनों का आरोप- पुलिस बरत रही है लापरवाही

संवाददाता। धनबाद

सरायढेला थाना क्षेत्र के कोचा कुल्ही में शुक्रवार की रात सरस्वती पूजा के दौरान स्थानीय राजकुमार दास की कुछ युवकों ने पिटाई कर दी. मार खाने के बाद राजकुमार अपने घर पहुंचा और पंखे में फंदे से लटक कर जान दे दी. शुक्रवार की रात ही आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई के लिए लिखित शिकायत की गई, लेकिन कार्रवाई नहीं होने पर शनिवार को राजकुमार का पोस्टमार्टम कराने के बाद शव को लेकर परिजन व गांव वाले सरायढेला थाने पहुंच गए. शव को थाने के मेनगेट पर रखकर पुलिस के खिलाफ नारेबाजी की, बाद में पुलिस की टीम आरोपियों को पकड़ने के लिए गांव गई.

वारदात के बाबत राजकुमार के पिता किशोर उर्फ डबलू दास ने बताया कि शुक्रवार की शाम राजकुमार ने कहा कि वो विर्सजन में शामिल होने जा रहा है. जल्द ही लौट आएगा, इसके बाद उसने मोबाइल पर फोन किया कि उसे बीच टोला के युवक मारपीट कर रहे हैं, थोड़ी देर बाद वो घर आ गया. इसी बीच मारपीट करने वाला एक लड़का आया और उनको घर से बाहर बुलाकर मारपीट के बाबत सफाई देने लगा, राजकुमार घर के अंदर ही था. तब उसने खुद को कमरे में बंद कर लिया और फांसी लगा ली. जब वे घर पहुंचे तो देखा कुंडी लगी है और खिड़की से देखने पर पता चला कि बेटे ने फांसी लगा ली है. कुंडी तोड़कर अंदर प्रवेश किए और उसे उठाकर अस्पताल ले गए, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया. तब उन्होंने सरायढेला थाने में मामले की लिखित शिकायत कर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करने को कहा, लेकिन पुलिस ने पूरी रात कुछ नहीं किया.

रात में ही हुआ बवाल.

थाने के गेट पर शव रखकर बैठ गए ग्रामीण

वारदात की खबर रात में ही पूरे इलाके में फैल गई थी. गांव के लोग अस्पताल पहुंचे. सुबह पंचनामा के लिए पुलिस गई तो गांव के लोगों ने विरोध कर दिया और कहा कि जब तक आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया जाएगा, तब-तक शव को अस्पताल से नहीं ले जाएंगे. दो-तीन घंटे तक विवाद चलने के बाद परिजनों और गांव वाले मान गए और शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया. पोस्टमार्टम हाउस में भी गांव के काफी लोग थे, पोस्टमार्टम के बाद शव को लेकर किशोर दास और गांव वाले सीधे सरायढेला थाने चले गए. यहां पहले उन लोगों ने आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की. टालमटोल जैसा व्यवहार देखकर गांव वालों का गुस्सा भड़क गया और थाने के मेनगेट पर ही शव को रख दिया और सभी लोग बैठकर पुलिस के खिलाफ नारेबाती करने लगे. तब फिर पुलिस उन लोगों के साथ कोचाकुल्ही गई और आरोपियों के घर पर छापेमारी की गई, लेकिन कोई भी आरोपी घर पर नहीं था.

बेटे को पालपोस कर जवान किया, मैट्रिक की परीक्षा दे रहा था... कौन समझेगा तकलीफ

राजकुमार के आंखों से आंसू नहीं रुक रहे थे. थाने की गेट पर रो-रोकर कहने लगे कि एक छोटे से पाल पोस कर जवान किया था, हर तकलीफ झेली थी, दूसरा क्या समझेगा कि उसे कितनी तकलीफ हो रही है. लोग सिर्फ सांत्वना दे सकते हैं, लेकिन उसने जो खोया वह उसे दोबारा नहीं मिल पाएगा. उसने बताया कि बेटे की मैट्रिक परीक्षा चल रही थी, उसकी तैयारी में जुटा था, लेकिन किस्मत ने उसे हमेशा के लिए छीन लिया.

डांस करने को लेकर हुआ विवाद

पूर्व में राजकुमार के साथ कुछ युवकों की मारपीट हुई थी. परिजनों के मुताबिक इस बार भी उक्त युवकों ने ही उसे पीट दिया था, इस कारण राजकुमार को ज्यादा तनाव हो गया था. राजकुमार की मां का भी पूर्व में ही देहांत हो चुका है. राजकुमार इकलौता पुत्र था. इधर, गांव में दो सरस्वती पूजा का विसर्जन था, राजकुमार अपने टोले से थोड़ी दूर पर दूसरे टोले के विसर्जन में शामिल हो गया था. इसी क्रम डांस करने के बाद उक्त टोले के युवकों से नोंकझोंक हुई थी, बाद में फिर उक्त युवकों ने उसे पकड़कर पीट दिया था.

ढुल्लू की गोद में बैठा है आरोपी

राजकुमार कहने लगे कि पुलिस के लिए उन्होंने बहुत काम किए. जब पुलिस को जरूरत पड़ती थी, हाजिर हो जाते थे लेकिन जब बेटे को इंसाफ चाहिए तो पुलिस मुंहमोड़ रही है. वे कहने लगे कि पुलिस कुछ नहीं करेगी, बेटे के शव के मिट्टी में जाते ही बात आई-गई हो जाएगी. क्योंकि आरोपी विधायक ढुल्लू महतो की गोद में बैठे हुए हैं. ऐसे में उन्हें इंसाफ मिलना मुश्किल है.

इनके खिलाफ थाने में की गई शिकायत

किशोर दास ने विश्वजीत महतो, सोनू कर्मकार,रमेश महतो, मोनू कर्मकार, करण महतो, मनीष महतो, गोलू सिंह, आकाश शर्मा समेत अन्य साथियों के खिलाफ मारपीट करने का आरोप लगाते हुए थाने में शिकायत की है. पुलिस आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई में जुट गई है.

एक का सिर कटा मिला, गांववालों पर हत्या का शक

चाईबासा में रेलवे ट्रैक पर 4 शव बरामद

संवाददाता। चाईबासा

डायन-बिसाही के संदेह में पश्चिम सिंहभूम जिले के हाटगम्हरिया थाना क्षेत्र के नुरदा गांव के तुंगबासा बस्ती के एक आदिवासी परिवार के दो मासूमों सहित एक महिला व पुरुष की क्रूरतम हत्या कर दी गई है. हत्या के बाद लाशों को आत्महत्या का रूप देने के लिए बोरों में भर कर कि रेलवे पटरियों पर रख दिया गया था.

सीकेपी रेल मंडल के केन्दपोसी तालाबुरु के बीच रेलवे ट्रेक के डाउन लाइन पर सुबह चार लोगों के शवों को बरामद किया गया. रेलवे ट्रैक पर सभी शव क्षत विक्षत पड़े हुऐ थे. मृतक महिला व दो बच्चों के शव पोल संख्या 343/13-13 ए के बीच पड़े हुए थे. वहीं व्यक्ति का शव दो किलोमीटर दूर पोल संख्या 340/23 पर तथा व्यक्ति का सिर पोल संख्या 340/22 के समीप था. घटना की जानकारी मिलने पर जगन्नाथपुर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी राकेश नंदन मिंज घटनास्थल पहुंच कर जांच मे जुट गये. बता दें कि मृतक महिला के हाथ व पांव रस्सी से बंधे हुए थे. वही सीमेंट की बोरी मे तीन साल की बच्ची व आठ महीने के बच्चे का शव भर कर रेलवे ट्रैक पर फेंका गया था. घटना के बाद डाउन लाइन पर ट्रेन का परिचालन पूरी तरह रोक दिया गया. घटना की जानकारी मिलते ही एसडीपीओ पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे. बताया गया कि सभी लोग एक ही परिवार से थे. शवों की शिनाख्त के बाद पुलिस पूरे मामले की जांच में जुट गयी है. हत्या का संदेह गांववालों पर ही किया जा रहा है.

डायन-बिसाही के शक में की गयी हत्या

इधर देर शाम में मृत परिवार की पहचान बिनु सिंकू के परिवार के तौर पर उसके ही बड़े भाई जुम्बल सिंकू ने की है. बताया की डायन के नाम पर बोहु यानी उसके छोटे भाई के पत्नी को गांव के लोग प्रताड़ित करते थे. पहले भी उनसे मारपीट की गयी थी. एसडीपीओ राकेश नंदन के अनुसार अभी जांच चल रही है. यह सामूहिक हत्या है. इस घटना के बाद से पूरे इलाके में सनसनी फैल गयी है.

हत्या में प्रयुक्त डंडा भी पुलिस ने किया बरामद

घटना में फोरेंसिक टीम एवं डॉग स्क्वॉड टीम की मदद ली जा रही है. पुलिस ने हत्या मे प्रयुक्त डंडा व एक छह फीट की लकड़ी बरामद की है. उसी डंडे से मार कर सभी की हत्या की गई है. चक्रधरपुर खंड के आरपीएफ कमांडेंट पी शंकर कुट्टी ने बताया कि घटना दक्षिण पूर्व रेलवे के चक्रधरपुर खंड में केंदापोसी-तालाबुरु स्टेशनों के बीच की है. प्रथम दृष्टया यह हत्या का मामला प्रतीत होता है.

बैद्यनाथ राम को मंत्री नहीं बनाने पर लातेहार के लोगों में रोष, कहा-

अंतिम समय सूची से नाम हटाना क्षेत्र की जनता के साथ अन्याय

आशीष टैगोर। लातेहार

विधायक बैद्यनाथ राम को अंतिम समय में चंपाई सरकार की कैबिनेट में शामिल नहीं करने पर लातेहार क्षेत्र में मायूसी और रोष देखा जा रहा है. लोगों ने कहा कि बैद्यनाथ राम को मंत्रिमंडल में शामिल नहीं कर क्षेत्र की उपेक्षा की गयी है. यहां के लोगों से किया गया एक भद्दा मजाक है. लोगों ने कहा, बैद्यनाथ राम का नाम फाइनल हो गया था और उन्हें राजभवन से बुलावा भी आ गया था तो किस परिस्थिति में अंतिम समय में उनका नाम सूची से हटाया गया. बता दें कि जब लोगों को पता चला कि राम का नाम सूची में आ गया है और उन्हें मंत्री पद की शपथ लेनी है तो लातेहार विधानसभा क्षेत्र में काफी उल्लास देखा गया. विधायक के समर्थकों ने मिठाइयों तक के ऑडर दे दिये थे. लेकिन जब उन्हें शपथ नहीं दिलायी गयी, तो वे खासे मायूस हो गये.

लातेहार चैंबर ऑफ कॉमर्स ने जताया रोष

लातेहार चैंबर ऑफ कॉमर्स एवं राष्ट्रीय ओबीसी मोर्चा तथा वैश्य महासभा ने संयुक्त रूप से बैद्यनाथ राम को मंत्रिमंडल में शामिल नहीं करने पर रोष प्रकट किया. राष्ट्रीय ओबीसी मोर्चा के जिला अध्यक्ष शत्रुघ्न प्रसाद ने कहा कि अनुसूचित जाति के एक विधायक का अंतिम समय में सूची से नाम काटा जाना दुर्भाग्यपूर्ण है. लातेहार की जनता इसे कतई बर्दास्त नहीं करेगी. उन्होंने कहा कि झारखंड में लगभग 50 लाख अनुसूचित जनजाति के लोग रहते हैं. चंपई सोरेन सरकार में अजा समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं मिलने से लोगों में भारी निराशा है. वैश्य महासभा के जिला अध्यक्ष महेंद्र शौंडिक ने कहा कि इसके विरोध में अगर सड़क में भी उतरना पड़े तो लोग उतरेंगे. विधायक बैद्यनाथ राम को मंत्री नहीं बनाये जाने पर झामुमो नेता व कार्यकर्ताओं में भी खासी नाराजगी देखी जा रही है. ओबीसी नेता पवन कुमार दिलीप, उमाकांत प्रसाद, अंकित पांडेय,विशाल कुमार व आशीष कुमार उर्फ मुनी ने भी आक्रोश जाहिर किया.

नाबालिग से रेप के आरोपी को मिली 20 साल की कैद

धनबाद। नाबालिग से रेप के आरोपी विनोद नगर के सुमित वर्मा को अदालत ने शनिवार को 20 वर्ष कैद की सजा सुनाई है. कोर्ट ने सुमित को 15 फरवरी को दोषी करार दिया था. सजा के बिंदु पर सुनवाई की तारीख 17 फरवरी तय की थी. आरोपी के खिलाफ पीड़िता द्वारा धनबाद थाना में 13 जून 2019 को केस दर्ज कराया गया था. आरोप था कि घटना के दिन शाम को वह हीरापुर पार्क मार्केट ट्यूशन पढ़ने गई थी. उसके साथ उसकी सहेली थी, जो उससे बात करने का प्रयास करती थी परंतु वह उससे बात नहीं करती थी. क्योंकि वह अपने रिश्तेदार से उसकी बात करना चाहती थी. सहेली ने ही आरोपी सुमित से उसकी पहचान करवाई थी. एक दिन आरोपी ने उसका हाथ पकड़ कर उसका मोबाइल छीन लिया तथा उसके साथ रेप का प्रयास करने लगा, इसी बीच उसके भाई ने उसे रोका. पुलिस ने आरोपी के खिलाफ 10 सितंबर 2019 को अदालत में आरोप पत्र दाखिल किया. अदालत में 12 अप्रैल 2022 को आरोप का गठन किया गया था.

60 महिलाओं के नाम पर एक करोड़ से अधिक ऋण फर्जीवाड़ा

भुक्तभोगियों ने शहर थाना पहुंच कर लगाई गुहार प्राथमिकी दर्ज

संवाददाता। मेदिनीनगर

डालटनगंज शहर थाना क्षेत्र के बेलवाटिका कुंजड़ा पट्टी से दो समूह संचालक चरणजीत कौर उर्फ बेबी पति हरजीत सिंह (छोटू) व सोनी देवी पति राजकुमार राम ने 60 से अधिक महिलाओं के नाम पर एक करोड़ रुपए से अधिक ऋण फर्जीवाड़ा किया है. इस मामले में भुक्तभोगी महिलाओं ने डालटनगंज शहर थाना में प्राथमिकी के लिए आवेदन दिया है.

वहीं, शहर थाना प्रभारी दिनेश पोद्दार ने बताया कि आवेदन मिला है, जल्द ही प्राथमिकी दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी. भुक्तभोगी महिलाओं ने बताया कि फाइनेंस कंपिनयों के प्रतिनिधियों द्वारा पिछले तीन दिनों से ऋण भरने को लेकर परेशान किया जा रहा है. वे रात 11-12 बजे घर पहुंचते हैं और डरा-धमका कर उनसे पैसे की मांग करते हैं. फाइनेंस कंपनी के कर्मचारियों की धमकी से पूरा परिवार डरा सहमा हुआ है. इधर, फाइनेंस कंपनियों के प्रतिनिधियों के प्रताड़ना से तंग आकर शनिवार को कुंजड़ा पट्टी में भुक्तभोगी महिलाओं ने बैठक की और फाइनेंस कंपनियों के प्रतिनिधियों के विरोध का निर्णय लिया. बैठक में भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश मंत्री लूडू खान व आजसू नेता कोमल कुमार अंकू भी मौजूद थे. भुक्तभोगी महिलाओं ने बताया कि बेलवाटिका की रहनेवाली चरणजीत उर्फ बेबी उनके नाम पर एक करोड़ से अधिक की राशि निकाल ली है. साथ ही शहर छोड़ कर फरार हो गई है. उन्होंने यह भी बताया कि पूरे मामले का मास्टरमाइंड चरणजीत कौर के पति छोटू उर्फ हरजीत सिंह व उसके पिता महेन्द्र सिंह हैं. दोनों पूछने पर बेटी-बहू के बारे में कोई जानकारी नहीं देते तथा अभद्र व्यवहार करके भगा दिया जाता है. भुक्तभोगी खलिकुन बीवी ने बताया कि बेलवाटिका की चरणजीत कौर उर्फ बेबी पति छोटू उर्फ हरजीत सिंह, उसके पिता महेन्द्र सिंह, भाई काका और सोनी देवी पति राजकुमार राम ने करीब पांच दर्जन महिलाओं को बहला-फुसलाकर व लालच देकर आधार कार्ड, वोटर कार्ड, पैन कार्ड, फोटो लेकर उनके नाम पर भारत फाइनेंस, बंधन बैंक, आरबीएल सहित एक दर्जन कंपनियों से एक करोड़ से अधिक की राशि निकाल ली है. भुक्तभोगी महिलाओं में सोनी देवी, मीना देवी, मिरा देवी, नपसा बीवी, शबाना परवीन, मरियम बानो, रेहाना बीवी, माहेलका खातून, अफसाना बीवी, जैद बीवी, सुनैना देवी, ममता देवी, खुशबू देवी, शमनम खातून, रिजवाना, अनु कुमारी, सरीता देवी, अंजली देवी, करिश्मा देवी, दीपा देवी, अंजू देवी, पारो देवी, कुसुम आदि षामिल हैं. उन्होंने बताया कि किसी के नाम पर तीन से तीन लाख तो किसी के नाम 50 से 35 हजार रुपये लोन लिए गए हैं.

आफत आंदोलनकारियों ने की बीसीसीएल के खिलाफ जम कर नारेबाजी

प्रदूषण के खिलाफ झरिया में सत्याग्रह आंदोलन

संवाददाता। धनबाद

झरिया में बढ़ते प्रदूषण के खिलाफ शनिवार से 24 घंटे का सत्याग्रह आंदोलन शुरू हो गया है. आंदोलन से पूर्व झरियावासी देशबंधु सिनेमा हॉल से पदयात्रा करते हुए चिल्ड्रेन पार्क पहुंचे जहां महात्मा गांधी की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण किया. पुनः देशबंधु सिनेमा हॉल पहुंच कर 24 घंटे के सत्याग्रह आंदोलन की शुरुआत की. इस दौरान आंदोलनकारियों ने बीसीसीएल के खिलाफ जम कर नारेबाजी की और झरियावासी की सेहत से खिलवाड़ करने का आरोप लगाया.

आंदोलन में शामिल डॉ मनोज कुमार ने कहा की झरिया के चारों तरफ आउटसोर्सिंग के तहत कोयला की खुली खदानों में मानक के विरुद्ध खनन कार्य चल रहा है .जिससे झरिया शहर में प्रदूषण का स्तर काफी बढ़ गया है .प्रदूषण के कारण लोगों में रोग प्रतिरोधक क्षमता का ह्रास हो रहा है. लोग स्वांस संबंधित बीमारी जैसे अस्थमा, न्युमोकोनोसिस, टीवी, कैंसर, मानसिक तनाव जैसी गम्भीर बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं. गर्भ में पल रहे बच्चे भी प्रभावित हो रहे हैं. लोगों की औसत उम्र भी कम हो रही है. ऐसे में अब आंदोलन के सिवा कोई रास्ता नहीं बचा है.यह आंदोलन तब तक जारी रहेगा जब तक झरियावासी को प्रदूषण से निजात नहीं मिल जाती है. झरिया राज परिवार की राजवधु माधवी सिंह ने कहा की झरिया में बढ़ते प्रदूषण से लोग त्राहिमाम कर रहे हैं .यहां के लोग कई गम्भीर बीमारियों से ग्रसित हैं . कई बार इसे लेकर बीसीसीएल , जिला प्रशासन और राज्य सरकार तक को लिखित आवेदन दिया गया .बावजूद इसके आज तक झरियावासी को बीसीसीएल के प्रदूषण से निजात नहीं मिल पाया.प्रदूषण की मात्रा दिन ब दिन बढ़ती ही जा रही है . इस बढ़ते प्रदूषण से निजात पाने के लिए झरियावासी सत्याग्रह आंदोलन का सहारा ले रहे हैं .

सुबह तक जम जाती धूल की मोटी परत

झरिया में प्रदूषण ने लोगों का जीना मुहाल कर रखा है. रात में यदि अपना धोया हुआ कपड़ा आप छत पर भूल जाते हैं, तो उक्त कपड़ा सुबह धूल से सना मिलेगा. हर सुबह छत पर मोटी परत जम जाती है. यह हाल झरिया शहर का है. अब आप समझ सकते हैं कि आउटसोर्सिंग क्षेत्र के लोगों का क्या हाल होगा. यहां से लोगों का पलायन तक हो रहा है. बावजूद इसके इस पर नियंत्रण के लिए कोई नीति नही बन रही है .

सदन में चंपाई से हेमंत सरकार के काम का हिसाब मांगेगी भाजपा

प्रमुख संवाददाता। रांची

झारखंड विधानसभा का बजट सत्र 23 फरवरी से शुरू हो रहा है. चंपाई सरकार सरकार वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट को सदन में पेश करने को लेकर तैयारी कर रही है. वहीं विपक्ष सरकार को सदन में घेरने के लिए तैयार है. भाजपा ने अपनी रणनीति तैयार कर ली है. भ्रष्टाचार, जेएसएससी परीक्षा में गड़बड़ी और कानून-व्यवस्था समेत कई मुद्दों को लेकर भाजपा सदन में सरकार को घेरेगी. मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन का कहना है कि उनकी सरकार हेमंत सरकार की पार्ट टू है. वहीं भाजपा का कहना है कि अगर चंपाई सरकार हेमंत सरकार पार्ट टू है तो पार्ट वन सरकार के भ्रष्टाचार और गड़बड़ियों का जवाब सदन में देना होगा.

सत्ता पक्ष के विधायकों की नाराजगी से बढ़ सकती है मुश्किल

विधानसभा के सत्र में सरकार भाजपा से निपटने के लिए तैयार है, लेकिन सदन में सरकार को विपक्ष के साथ-साथ सत्ता पक्ष के विधायकों की नाराजगी भी झेलनी पड़ेगी. कैबिनेट में कांग्रेस कोटे के मंत्रियों के नहीं बदले जाने से कांग्रेस के 12 विधायक नाराज हैं. उन्हें मनाने का दौर जारी है. अगर सत्र से पहले विधायक मान गये तब तो ठीक है, लेकिन चंपाई सरकार अगर अपने विधायकों की नाराजगी दूर नहीं कर पाई, तब बजट सत्र में सरकार की मुश्किल बढ़ेगी.

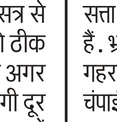

भ्रष्टाचार के मुद्दे पर सरकार को घेरेगी भाजपाः जेबी तुबिद

भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता जेबी तुबिद ने कहा कि झारखंड सरकार के खिलाफ भाजपा की रणनीति वही है जो पहले थी. भ्रष्टाचार और बैड गवर्नेंस के मुद्दे को लेकर भाजपा चंपाई सरकार को सड़क से सदन तक घेरेगी. उन्होंने कहा कि प्रदेश में भले ही नेतृत्व बदल गया है, लेकिन सत्ता में तो वही पार्टी और पुराने नेता हैं. भ्रष्टाचार से इनका पुराना और गहरा नाता है. हेमंत सरकार हो या चंपाई सरकार इन दोनों सरकारों से जनता को कोई फायदा नहीं होने वाला है.

▼ ब्रीफ खबरें

बीसीसीएल कर्मी की मोटरसाइकिल की चोरी

कतरास। ड्यूटी से घर लौट रहे बीसीसीएल कर्मी की मोटरसाइकिल व मोबाइल चोरी चली गई.घटना के भुक्तभोगी एकड़ा निवासी उदय नारायण प्रसाद की लिखित आवेदन के आधार पर जोगता पुलिस ने मोटरसाइकिल व मोबाइल चोरी का मामला दर्ज कर छानबीन में जुट गई है. भुक्तभोगी ने अपने शिकायत में कहा है कि गुरुवार की रात वेस्ट मोदीडीह केशलपुर कोलियरी से अपने ड्यूटी पूरा कर घर लौट रहा था तभी बेलदरिया बस्ती के आगे मोटरसाइकिल खड़ा कर शौच कर रहा था. तभी तीन अज्ञात लोगों ने बाइक की चोरी कर ली.

बाइक के परखचे उड़े बाल-बाल बचा युवक

तोपचांची। शनिवार को तोपचांची थाना क्षेत्र अंतर्गत तोपचांची बाजार स्थित नेशनल हाइवे में निमियाघाट की और आ रही अनियंत्रित ट्रेलर ने बाइक को जोरदार टक्कर मार दी. टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि ट्रेलर का पहिया बाइक के ऊपर चढ़ गया. जिसमें बाइक के परखचे उड़ गए. हालांकि घटना के दौरान युवक अपनी बुद्धिमत्ता के कारण सड़क में बाइक छोड़ का दूर हट गया. जिसे युवक को हल्की चोटें आई. घटना के बाद मौके पर तोपचांची पुलिस घटनास्थल पर पहुंच कर बाइक को अपने हिरासत में ले लिया.

पेयजल समस्या के निराकरण की मांग

मैथन। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सुधांशु शेखर झा ने धनबाद के डीसी वरूण रंजन से मिलकर एक ज्ञापन सौंपा है.झा ने डीसी वरूण रंजन से निरसा विधानसभा क्षेत्र एवं विशेष रूप से आदिवासी बाहुल्य गांव पोड़ाडीह, टुनाघुटु, बरमुड़ी, मंगलमारा में व्याप्त भीषण पेयजल समस्या के निराकरण में उनका प्रशासकीय सहयोग मांगा, साथ ही झा ने ज्ञापन में क्षेत्र की अन्य कई समस्याओं पर भी उनका ध्यान आकृष्ट किया है. डीसी वरूण रंजन से हुई सकारात्मक वार्ता पर वरिष्ठ नेता सुधांशु शेखर झा ने डीसी का आभार व्यक्त किया है.

आंगनबाड़ी भवन का किया गया शिलान्यास

महुदा। डीएम एफडटी मद से बाघमारा प्रखंड अन्तर्गत छात्रुटांड पंचायत मे आंगनबाड़ी केंद्र -01 का भवन निर्माण कार्य का शिलान्यास बाघमारा विधायक प्रतिनिधि शत्रुघ्न महतो ने शनिवार को नारियल फोड़कर किया . इस दौरान विधायक प्रतिनिधि शत्रुघ्न महतो ने कहा कि पूरे बाघमारा में विभिन्न योजनाओं के तहत विधायक ढुल्लू महतो के प्रयास से लगातार विकास का कार्य हो रहा है.जिस पंचायत से समस्या की जानकारी विधायक को मिलता है विधायक तुरंत समाधान की दिशा में पहल शुरू कर देते हैं.

कतराश में निःशुल्क जांच शिविर का आयोजन

कतरास। शनिवार को कतरास बाजार स्थित दुर्गा पूजा समिति,एशियन जालान सुपर स्पेस्लिटी हॉस्पिटल एवं मणिपाल सिग्ना हेल्थ इन्सुरेन्स के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क जांच शिविर आयोजित की गई.शिविर का उद्घाटन कतरास थाना प्रभारी असित कुमार सिंह व ब्रम्हा कुमारी कतरास की संचालिका प्रतिभा दीदी ने संयुक्त रूप से फीता काट कर किया.इस दौरान डाक्टरों की टीम ने शिविर में आंख,शूगर, रक्त चाप एवं स्वास्थ्य जांच की. इस दौरान सामाजिक कार्यकर्ता राजेश स्वर्णकार,प्रदीप गुप्ता,भोला शर्मा सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित हुए.

13 सूत्रीं मांगों को लेकर एआईआरएफ और रेलवे बोर्ड के अधिकारियों ने की बैठक

समस्याओं पर की चर्चा, निराकरण का दिया आश्वासन

संवाददाता।धनबाद

13 सूत्रीं मांगों को लेकर एआईआरएफ और रेलवे बोर्ड के अधिकारियों के साथ विभागीय समिति की संयुक्त परामर्शदातृ संस्था ने बैठक की. बैठक की अध्यक्षता रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष जया वर्मा ने की. एआईआरएफ के अध्यक्ष डॉ एन कन्हैया और संचालन महामंत्री शिव गोपाल मिश्रा ने किया. ईसीआरकेयू के महामंत्री एसएनपी श्रीवास्तव, केन्द्रीय कार्यकारी अध्यक्ष एसएसडी मिश्रा ने प्रतिनिधित्व किया. बैठक में एआईआरएफ के पदाधिकारियों ने 13 सूत्रीं मांगों को पूरा कराने के लिए विस्तार से चर्चा की. जिसमें रेलवे बोर्ड स्तर पर जेसीएम तथा पीएनएम बैठकों का नियमित आयोजन किया जाए, ट्रैक मेंटेनर तथा एस एंड टी के कर्मचारियों के रन ओवर होने की घटनाओं को रोकने के लिए

व्यापक व्यवस्था की जाए. कर्मचारियों की कमी दूर कर तथा अत्यधिक काम का दबाव कम कर ऐसी घटनाओं को रोकने की बात रखी गई.सभी मांगों को रेलवे बोर्ड की अध्यक्ष जया वर्मा ने पूरा करने का आश्वासन दिया.

निष्पादन में दिक्कत: एच आर एम एस के माध्यम से रेलकर्मियों को अपने एपीआर निष्पादन में दिक्कत आ रही है. इसके समाधान के लिए समुचित व्यवस्था करते हुए एक अवसर और दिया जाए. नये खुले सेक्शन, दोहरीकरण तथा तिहरीकरण एवं नये विद्युतीकरण हुए सेक्शन में नये पदों का सृजन करते हुए त्वरित बहाली की जाए. अंतर रेलवे तथा अंतर मंडल रेलवे स्थानांतरण के मामलों का त्वरित निस्तारण की जाए. सुपरवाइजर के लेवल 8 से 9 में पदोन्नति के लिए चार वर्ष की वांछनीय सेवा अवधि को दो वर्ष किया जाए. स्पैड मामलों में जस्टिस खन्ना एवं जस्टिस डीपी त्रिपाठी के सिफारिशों को नजरअंदाज कर दंड के किए गए प्रावधानों को समीक्षा कर ठीक किया जाए. ईसीआरकेयू के धनबाद मंडल के मीडिया प्रभारी एनके खवास ने कहा कि इन निर्णयों से जल्द ही रेलकर्मियों के कई समस्याओं का समाधान होगा. ईसीआरकेयू के नेताजी सुभाष, सोमेन दत्ता,एनके खवास, बीके दुबे, जेके साव, चंदन शुक्ला, पीके सिन्हा, बीबी सिंह, इंद्र मोहन सिंह, बीके साव, परमेश्वर कुमार व रूपेश कुमार ने एआईआरएफ-ईसीआरकेयू के पदाधिकारियों व रेलकर्मियों के संघर्ष को सफल बताया है.

जल्द आदेश जारी किया जाए

लेवल एक के 30 प्रतिशत पदों को लेवल दो में अपग्रेड करने पर बनी सहमति के बाद भी अभी तक आदेश जारी नहीं किए गए हैं, इसे जल्द जारी किया जाए, आउटसोर्सिंग कार्य रेलों के संरक्षित परिचालन के लिए सही नहीं है, इस पर रोक लगाई जाए, भारतीय रेलवे में सत्रह हजार लोको पायलट के पद खाली हैं, इसे त्वरित कार्यवाही से भरा जाए . ट्रैक मेंटेनर तथा सहायकों के रिक्त पदों पर भी बहाली प्रक्रिया पूरी की जाए . जिन कटेगरी के लिए रिस्क और हार्ड एलाउंस देना बाकी रह गया है, उन्हें जल्द शुरू किया जाए, प्वाइंट मैन के पदोन्नति 2800 तक करने के लिए प्रक्रिया पूरी की जाए, एस एंड टी के एम सी एम तथा ट्रैक मेंटेनर को 4200 ग्रेड पे देने के लिए सहमति के बाद भी आदेश जारी करने में अनावश्यक रूप से विलंब हो रहा है . उसे जल्द जारी किया जाए .

बेटी की शादी के सपने को आग ने कर दिया खाक

संवाददाता।धनबाद

बरवाअड्डा थाना क्षेत्र के भेलाटांड में शॉर्ट सर्किट से घर में आग लगने से लाखों की संपत्ति जलकर राख हो गई. घरवालों का कहना है कि घर में राजेश कुमार की बहन की शादी होनेवाली थी. घर में शादी की तैयारी चल रही थी. शादी के लिए तिलक का सामान खरीद कर लाया गया था. कई रिश्तेदार घर में आ चुके थे. इसी बीच शनिवार को घर के तार में शॉर्ट होने से आग लग गई. आग लगते ही घर में अफरातफरी मच गई. पड़ोस के लोगों ने फौरन अग्निशमन विभाग को सूचित किया. खबर पाकर दमकल गाड़ी पहुंची और आग पर काबू पाया गया. दमकल गाड़ी के पहुंचने से पहले स्थानीय लोगों ने आग पर काबू पाने का प्रयास किया, लेकिन आग नहीं बुझी. राजेश की मां ने कहा कि उनका बेटा मजदूरी कर घर परिवार चलाता है.

काफी मुश्किल से दहेज की रकम व सामान की खरीदारी की गई थी. शादी का माहौल को लेकर घर के लोग काफी व्यस्त थे. इसी बीच एक कमरे में शॉर्ट सर्किट से आग लग गई. रिश्तेदारों ने भी शादी के लिए काफी मदद की थी, लेकिन सामान जल जाने से खुशी का माहौल गम में बदल गया.

टाटा झरिया डिविजन में नई तकनीक का प्रयोग

खान सुरक्षा व दक्षता को लेकर पेस्ट फिलिंग टेक्नोलॉजी शुरू

संवाददाता।धनबाद

खान सुरक्षा और दक्षता को लेकर पेस्ट फिलिंग टेक्नोलॉजी शुरू कर दी गई है. टाटा स्टील के झरिया डिवीजन ने हाल ही में खदान के अंदर खाली जगहों को भरने के लिए 10 एम 3/ एच की क्षमता वाला एक पेस्ट फिलिंग पायलट प्लांट शुरू किया गया है.प्लांट का उद्घाटन डिगवाडीह कोलियरी में डीबी सुंदरा रामम वाईस प्रेसिडेंट रॉ मटेरियल्स, संजय राजोरिया जनरल मैनेजर झरिया डिवीजन, टाटा स्टील की उपस्थिति में किया गया. यह भारत में पहली बार है, जहां टाटा स्टील कोयला खदानों की बैकफिलिंग के लिए इस तकनीक का उपयोग कर रही है.

उच्च दक्षता प्राप्त करती है: मौजूदा सैंड स्लरी बैकफिलिंग विधि के विपरीत, जो बोरहोल चोकिंग, पृथक्करण और ढेर लगाने की समस्याओं का कारण बनती है. पेस्ट फिलिंग की तकनीक अपने सेल्फ लेवलिंग और सीमेंटेड फ्लाई ऐश पेस्ट के नियंत्रित प्रसार के माध्यम से उच्च दक्षता प्राप्त करती है. पेस्ट को डिगवाडीह कोलियरी में रेलवे लाइन के नीचे खाली स्थानों में डाला जाएगा. इस परीक्षण की सफलता मौजूदा साइट पर 1 किमी से अधिक लंबाई की खाली जगहों को भरने के लिए मोबाइल सेटअप के विकास और उत्पादन एवं माइन फायर साइट्स पर संभावित अनुप्रयोगों का मार्ग प्रशस्त करेगी.

खास बातें

- भारत में पहली बार हो रहा है इस तकनीक का इस्तेमाल
- पेस्ट को रेलवे लाइन के नीचे खाली स्थानों में डाला जाएगा

दुर्गम स्थानों में सुरक्षा बढ़ाना भी है

यह तकनीक न केवल खदानों को भरने के लिए नदी की रेत का पर्यावरण अनुकूल विकल्प प्रदान करती है . बल्कि इसका उद्देश्य रेलवे लाइनों, राजमार्गों और भूमिगत कोलियरियों के ऊपर स्थित स्थायी संरचनाओं के नीचे दुर्गम स्थानों में सुरक्षा बढ़ाना भी है .टाटा स्टील,सीएसआईआर–सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ माइनिंग एंड फ्यूल रिसर्च (सीएसआईआर–सीआईएफएमआर), और आईआईटी–खड़गपुर के बीच सहयोग से विकसित यह तकनीक भविष्य के अनुप्रयोगों के लिए आशाजनक संभावनाएं दर्शाती है . उद्घाटन के अवसर पर नरेंद्र कुमार गुप्ता, चीफ जामाडोबा ग्रुप, मयंक शेखर, चीफ सिजुआ ग्रुप, राजेश चिंतक, चीफ एचआरबीपी रॉ मैटेरियल्स, डॉ वीरेंद्र सिंह, प्रिंसिपल साइंटिस्ट रिसर्च एंड डेवलपमेंट, टाटा स्टील, और डॉ . प्रशांत, सीनियर प्रिंसिपल साइंटिस्ट, और डॉ . संतोष कुमार बेहरा, सीनियर साइंटिस्ट, सीएसआईआर–सीआईएफएमआर, धनबाद उपस्थित थे .

रणधीर वर्मा चौक पर भूमि बचाओ संघर्ष मोर्चा का मौन धरना

सरकारी भूमि की लूट पर रोक की मांग

संवाददाता।धनबाद

भूमि बचाओ संघर्ष मोर्चा के बैनर तले शनिवार को धनबाद के रणधीर वर्मा चौक पर विभिन्न क्षेत्रों के सैकड़ों ग्रामीणों ने मौन धरना दिया. धरनार्थियों के हाथों में धोखरा में सरकारी भूमि व सीएनटी भूमि की लूट पर रोक,फर्जी दलील पर दाखिल खारिज के मामलों की जांच कर कार्रवाई करने,रिंग रोड मुआवजा घोटालों की जांच, गोलकडीह मुआवजा घोटालों की जांच जल्द पूरी करने आदि के स्लोगन लिखी तख्तियां थी. यह धरना भूमि संबंधी समस्याओं के निराकरण व भूमि घोटालों की जांच की मांग को रमेश कुमार राही के नेतृत्व में दिया गया. रमेश कुमार राही ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि धनबाद जिले में भूमि संबंधी अभिलेखों में बड़े पैमाने पर अनियमितता बरती जा रही है.

भूमि माफिया कोई भी हद पार करने को तैयार

रमेश कुमार राही ने कहा कि भूमि माफिया किसी भी हद तक गुजरने को तैयार हैं . यदि पूरे मामले की गहराई से जांच की जाए तो करीब 1000 करोड़ का भूमि घोटाला सामने आएगा .उन्होंने कहा कि भूमि सम्बंधित विवादों का निपटारा अगर सम्बंधित अधिकारी सही से करे तोएक साथ कई स्तर पर राहत मिल सकती है . हत्या, रंगदारी, ठगी, मारपीट के मुकदमों में भी कमी होगी . भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा और आमजन राहत महसूस करेंगे .मौन धरना में नरेश महतो, जगन्नाथ महतो ,शिवपूजन गोप , मिहिलाल रवानी , जलेश्वर महतो , संजय हांसदा , देवराज मुर्मू , मुनीलाल टुडू ,सहदेव मुर्मू, प्रभु हांसदा , कैलाश महतो, मोहन मुर्मू ,योगेन्द्र दास , अरुण राजवंशी ,बलदेव टुडू भागवत महतो नेपाल महतो आदि उपस्थित थे .

पुल निर्माण का अप्रूवल झारखंड सरकार को करना है: डीआरएम

संवाददादता।बाघमारा

दक्षिण पूर्व रेलवे के आद्रा रेल मंडल के डीआरएम सुमित नरुला शनिवार को बाघमारा के खानुडीह स्थित रेलवे स्टेशन के करीब तेलो टांड साइडिंग में पहुंचे. इस मौके पर उपस्थित लोगों ने उनका बुके देकर स्वागत किया. इस दौरान बाघमारा खानुडीह रेल फाटक में ओवर ब्रिज (ओबी) निर्माण के सवाल पर डीआरएम ने कहा कि पुल निर्माण का अप्रूवल झारखंड सरकार को करना है. उन्होंने कहा कि अन्य निर्णय लिए जा चुके हैं. जबकि अंतिम अप्रूवल झारखंड सरकार को लेना है. जिसके उपरांत ही पुल निर्माण का काम शुरु हो जाएगा. इस मौके पर बाघमारा के विधायक प्रतिनिधि शरद महतो ने डीआरएम को खानुडीह ओवर ब्रिज एवं ट्रेन ठहराव जैसी समस्याओं से अवगत कराया.

केरल में गोलमारा के युवक की मौत

बलियापुर । केरल नौकरी करने गए गोलमारा निवासी 27 वर्षीय प्रसिद्ध कुमार सिंह की मौत रेल दुर्घटना में हो गई. घटना से गांव में मातम है. परिवार में आर्थिक तंगी व पैसे के अभाव में युवक का शव नहीं ला सका. पीड़ित परिवार चांदकुईया पंचायत के मुखिया लक्ष्मी देवी के पास पहुंचा. लक्ष्मी देवी ने डीसी को पत्र देकर लाचार विधवा महिला के आवेदन पर त्वरित कदम उठाने की मांग की. मृतक दो साल से केरल में मजदूरी करता था.

लंबित आवास योजनाओं को समय पर पूरा करने का निर्देश

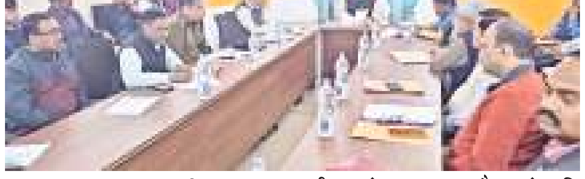

- झारखंड विधानसभा की आवास समिति ने जिले के पदाधिकारियों के साथ बैठक की

संवाददाता।धनबाद

झारखंड विधानसभा की आवास समिति ने शनिवार को परिसदन में जिले के पदाधिकारियों के साथ बैठक की. समिति के सभापति ग्लेन जोसेफ गॉलस्टेन ने बैठक में लंबित आवास योजनाओं को समयबद्ध रूप से पूर्ण करने का निर्देश दिया. समिति के सभापति ने लंबित आवास योजनाओं को जल्द पूरा करने तथा निर्माण कार्य पूर्ण हो चुके भवनों को हैंडओवर का निर्देश दिया गया. साथ ही जहां आवश्यक है वहां भूमि उपलब्ध कराने के लिए अपर समाहर्ता को निर्देशित किया गया. इसके अलावा सभापति ने सभी पदाधिकारी से संवेदक की लापरवाही पर की गई कार्रवाई की रिपोर्ट की मांग की. साथ ही उन्होंने कहा कि अगर कहीं संवेदक की लापरवाही से कार्य में देरी हो रही है तो उन पर शोकॉज करते हुए कार्रवाई सुनिश्चित करें.समिति ने स्वास्थ्य, शिक्षा, भवन निर्माण, पथ निर्माण, पेयजल, परिवहन, राजस्व एवं भूमि सुधार, विद्युत, समेत अन्य सभी जिला स्तरीय विभागीय पदाधिकारियों से योजनाओं की जानकारी ली.

आईआईटी-आईएसएम की जामताड़ा के करमाटांड़ में कार्यशाला

किसानों को सिखाई गई वैज्ञानिक खेती

संवाददाता ।धनबाद

आईआईटी-आईएसएम के संकाय सदस्यों ने शनिवार को जामताड़ा के करमाटांड़ के किसानों को वैज्ञानिक तरीके से खेती करने के गुर सिखाए. संकाय सदस्यों का एक समूह 18 महीने से अधिक समय से जामताड़ा जिले के किसानों को कृषि आधारित उद्यमियों के रूप में विकसित करने के लिए जागरूकता पैदा करने में लगा हुआ है. जिसमें वैज्ञानिक खेती के बारे में एक अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें मिट्टी तैयार करने की तकनीक और बेहतर उपज के लिए उपयोग की जाने वाली बीज के किस्मों के ज्ञान पर ध्यान केंद्रित किया गया. करमाटांड़ परिहायत भवन में प्रबंधन अध्ययन एवं औद्योगिक अभियंत्रण विभाग की सहायक प्रोफेसर रश्मी सिंह के नेतृत्व में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. जिसमें स्थानीय मुखिया सूरजमुनि सोरेन और सरपंच के नेतृत्व में बड़ी संख्या में किसान और कृषि मित्र शामिल हुए. बीरेन चंद्र मुर्मू ने किसानों के सामने आने वाली कठिनाइयों, उचित सिंचाई सुविधाओं की कमी और वैज्ञानिक खेती के बारे में जागरूकता की कमी पर चर्चा की.इस दौरान किसानों को वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की बहुत सारी जानकारी दी गई.

पारंपरिक कृषि तकनीकों पर निर्भर हैं 260 किसान परिवार

260 घरों वाले गांव के अधिकांश किसान तकनीक से अनजान हैं . अधिकांश ग्रामीण अनुसूचित जनजाति परिवारों से हैं . सरकार किसानों के लिए कल्याणकारी योजनाएं चला रही है . अभी भी वे पारंपरिक कृषि तकनीकों पर निर्भर हैं और खेती के लिए अपने स्वयं के बीजों का उपयोग भी करते हैं . प्रोफेसर सिंह ने कहा कि खेती में होनेवाली समस्या का पता लगाने के लिए शनिवार को कार्यशाला आयोजित की गई . जिसमें ग्रामीणों को बहुत सारी जानकारी दी गई . जून 2022 शुरू हुए इस अभियान में अब तक 12 से अधिक गांवों में इसी तरह की कार्यशालाएं आयोजित की गई हैं .

महंगाई के खिलाफ अनोखा प्रदर्शन

धनबाद। कांग्रेसी नेता इजहार बिहारी ने शनिवार को यहां मंहगाई के खिलाफ अनोखा प्रदर्शन किया. उन्होंने गले में लहसुन की माला पहनी और पूरे शहर में भ्रमण किया.कहा कि मोदी सरकार ईडी, आईटी, सीबीआई से थोड़ा ध्यान हटाए और लहसून पर भी विचार करे.

कतरास

पदाधिकारियों को झूठे मुकदमें में फंसाने की साजिश की जा रही है

आजसू की लोकप्रियता से विरोधियों में घबड़ाहट : मंटू महतो

मधुबन (कतरास) ।

आजसू पार्टी की बढ़ती लोकप्रियता व जनाधार को देखकर विरोधियों द्वारा पार्टी पदाधिकारियों को झूठा मुकदमा में फंसाने की साजिश की जा रही है.जिसके विरोध में पार्टी हर स्तर पर उग्र आंदोलन करेगी. आजसू पार्टी के कार्यकर्ता पर भुली थाने में दर्ज प्राथमिकी पर जिला प्रशासन जांच कर निर्दोष का नाम मुकदमे से हटाने की मांग करते हैं.उक्त बातें आजसू पार्टी के जिला अध्यक्ष मंटू महतो ने शनिवार को खरखरी स्थित सांसद आवासीय कार्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता के दौरान कही .

उन्होंने कहा कि पार्टी के केंद्रीय सदस्य मनीष सिंह पर राजनीतिक प्रतिद्वंदी द्वारा भूली थाना में एसटी,एससी का झूठा मामला दर्ज कराया गया.जो सरासर गलत है. जानकारी देते हुए कहा कि भूली स्थित आजसू कार्यालय के समीप गत 29 जनवरी को टेम्पू चालक चंदन कुमार व मंटू कुमार दास के बीच हुई थी.जहां बीच बचाव करते हुए पार्टी के केंद्रीय सदस्य मनीष सिंह ने सामाजिक दृष्टि से मामला को शांत और सुलझाने का प्रयास किया था. परंतु राजनीति प्रतिद्वन्दी द्वारा इस मामले में तूल देकर उलटा मनीष पर ही एसटी,एससी का झुठा मामला दर्ज करवा दिया गया.उन्होंने कहा कि पुलिस पहले मामला दर्ज कराने वाले का जाति प्रमाण पत्र की जांच कर ले तो सारा मामला स्पष्ट हो जाएगा. पार्टी जांच की मांग को लेकर आगामी 28 फरवरी को धनबाद के रणधीर वर्मा चौक पर एक दिवसीय धारण देगी.

मौके पर जिला प्रधान सचिव सह सांसद प्रतिनिधि रामा शंकर तिवारी,बाघमारा प्रखंड सचिव प्रेम तिवारी, बाघमारा प्रखंड उपाध्यक्ष विकाश सरकार,जलाल अंसारी, राजीव सिंह, गोल्डेन तिवारी, ललन रजक,जितन नापित, सिन्टू सिंह मौजूद थे.

खास बातें

- साजिश के विरोध में पार्टी उग्र आंदोलन करेगी
- दर्ज प्राथमिकी की जांच हो निर्दोष के नाम हटाए जाएं

जोगता में दो पक्षों में मारपीट आठ के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज

संवाददाता।कतरास

गुरुवार की देर रात जोगता थाना क्षेत्र के श्यामबाजार कजरीबगान जाने के रास्ते में दो पक्षों में आपसी रंजिश को लेकर जमकर मारपीट हुई . घटना में दोनों पक्षों के करीब आधा दर्जन लोग घायल हुए .इधर एक पक्ष जख्मी अशोक कुमार राम की पत्नी नीलम देवी ने मारपीट व छिनतई की शिकायत पर जोगता पुलिस ने शनिवार को प्राथमिकी दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है. शिकायत के आलोक पर पुलिस ने चार नामजद व सात आठ अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज किया है। जिसमें विशाल चौहान, कोमल चौहान, संतोष चौहान,प्रिंस चौहान को आरोपी बनाया गया है.

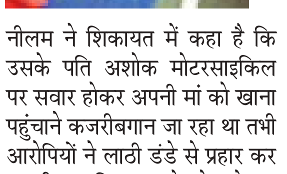

नीलम ने शिकायत में कहा है कि उसके पति अशोक मोटरसाइकिल पर सवार होकर अपनी मां को खाना पहुंचाने कजरीबगान जा रहा था तभी आरोपियों ने लाठी डंडे से प्रहार कर जख्मी कर दिया. उनके जेब से 30 हजार रुपए निकाल लिए, जाति सूचक शब्द कह कर मोटरसाइकिल क्षतिग्रस्त कर दी. इस घटना की जानकारी मिलने के मैं बगल के मोहन लाल नोनियां को बताया. मोहन मेरे साथ पहुंचे तो उनके और मेरे साथ मारपीट की गई.

छात्रा इंस्पायर मानक अवार्ड से सम्मानित

मैथन । भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा अग्रसेन सरस्वती विद्या मंदिर, चिरकुंडा की छात्रा दिव्या त्रिवेदी को इंस्पायर मानक अवार्ड से सम्मानित किया गया है. इसकी जानकारी देते हुए

विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने बताया कि भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा इंस्पायर मानक अवार्ड कार्यक्रम आयोजित किया गया था. जिसमें बच्चों द्वारा विज्ञान से संबंधित मॉडल को प्रोजेक्ट के रूप में बनाकर प्रस्तुत करना था. जिसमें विद्यालय के कक्षा सात की दिव्या त्रिवेदी ने एरोप्लेन क्रैश प्रोटेक्शन नामक एक मॉडल तैयार कर प्रस्तुत किया था.

ब्रीफ खबरें

राजद ने मनायी कर्पूरी ठाकुर की पुण्यतिथि

गिरिडीह। राष्ट्रीय जनता दल द्वारा शनिवार को भारतरत्न स्व कर्पूरी ठाकुर की पुण्यतिथि सादगीपूर्ण तरीके से मनाई गई. गंगापुर स्थित आवासीय कार्यालय में इस मौके पर जिलाध्यक्ष नाथेश्वर ठाकुर की अगुवाई में एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई. जिसमें राजद के नेताओं व कार्यकर्ताओं ने उनकी तस्वीर पर माल्यार्पण किया एवं श्रद्धा सुमन अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित किया. राजद जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में लोगों ने स्व कर्पूरी ठाकुर के पदचिन्हों पर चलने का संकल्प लिया.

चोरों ने की छह घरों से लाखों की चोरी

गावां। गावां प्रखंड स्थित पिहरा पश्चिमी पंचायत के कोहवरावा व सलैयादाह में अज्ञात चोरों ने छह घरों से लाखों रुपये की चोरी कर ली. चोरों ने नगदी समेत लगभग डेढ़ लाख के सामानों पर हाथ साफ कर लिया. उक्त गांव में उगन रविदास, हरि रविदास, यमुना रविदास, महेश्वरी यादव, छोटू महतो, बसन्त यादव, ऋषिदेव महतो के घरों से सोना चांदी के आभूषण बर्तन समेत लगभग तीन लाख की चोरी कर ली.

पंसस 19 से करेंगे अनिश्चितकालीन हड़ताल

पीरटांड़। पीरटाड प्रखंड मुख्यालय में आगामी 19 फरवरी को पंचायत समिति सदस्यों के द्वारा शांतिपूर्ण तरीके से अनिश्चितकालीन धरना दिया जाएगा. जिसको लेकर पंचायत समिति सदस्य के एक प्रतिनिधिमंडल ने अनुमण्डल पदाधिकारी डुमरी को एक ज्ञापन सौंपा. इसमें पंचायत समिति सदस्यों द्वारा लिखा गया है कि आगामी 19 फरवरी दिन सोमवार से शांतिपुर्ण अनिश्चितकालीन धरना आहूत किया गया है.

दो पक्षों में हुई मारपीट कई लोग हुए घायल

गांडेय। अहिल्यापुर थाना क्षेत्र के भादवाखुर्द गवां में शनिवार को दो पक्षों में संघर्ष हो जाने से दोनों पक्षों से आधा दर्जन लोग घायल हो गये. घायलों को ग्रामीणों से बीच बचाव कर सीएससी गांडेय लाया गया. जहां प्राथमिक इलाज के बाद बेहतर इलाज के लिए गिरिडीह भेज दिया गया. प्राप्त जानकारी के अनुसार शनिवार को भादवाखुर्द निवासी सुनील यादव और बसंत सिंह व रवि हजाम के बीच आपसी विवाद को लेकर बहस हो गई.

अनियंत्रित बोलेरो पलटा तीन लोग हैं गंभीर

साहिबगंज। बरहेट थाना क्षेत्र के बरहेट साहेबगंज मुख्य सड़क अंतर्गत रक्सी मोड़ के समीप एक बोलरो अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में जा गिरा. वहीं चंदरगोडा से इलाज करा कर वापस लौट रहे पिकअप बोलेरो वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो गया. जिससे तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए. बोलेरो पिकअप बोरियो थाना क्षेत्र के बांझी से 2 किलोमीटर अंदर बीरबल कांदर मिशन चर्च का बताया जा रहा है. वाहन में सवार चालक फादर रजत दीगर, फ्रांसिस मडैया 50 वर्ष, अजय केरकेट्टा 29 वर्ष गंभीर रूप से घायल हो गये.

जनप्रतिनिधि समाज की नींव होते हैं: हिमांशु

गोड्डा। झारखंड राज्य खाद्य आयोग के अध्यक्ष हिमांशु शेखर चौधरी शनिवार को गोड्डा पहुंचे. इस क्रम में उन्होंने पूर्व सीएम हेमंत सोरेन के विधानसभा अंतर्गत पड़ने वाले जिले के सुंदरपहाड़ी प्रखंड में जनसुनवाई कार्यक्रम में हिस्सा लिया. जनसुनवाई कार्यक्रम का शुभारंभ झारखंड राज्य खाद्य सुरक्षा आयोग के अध्यक्ष, जिला आपूर्ति पदाधिकारी श्रवण राम, जिला शिक्षा अधीक्षक मिथिला टुडू सहित जिला स्तरीय अधिकारियों ने दीप प्रज्वलित कर किया.

डुमरी में शौचालय निर्माण कार्य का हुआ शिलान्यास

डुमरी। डुमरी जिप सदस्या सुनीता कुमारी के पहल पर शनिवार को सत्यम सैनीटाइज ऑर्गनेशन संस्था की ओर से इसरी बाजार नदी पुल के समीप सार्वजनिक शौचालय निर्माण कार्य का शिलान्यास किया गया. इसका शिलान्यास जिप सदस्या सुनीता कुमारी व मुखिया सीताराम तुरी ने नारियल फोड़ कर किया. जिप सदस्या ने कहा कि इसरी बाजार प्रखंड का मुख्य बाजार है. यहां 6 से अधिक बैंक है. प्रत्येक दिन हज़ारों की संख्या में लोग पहुंचते हैं पर बाजार में कहीं शौचालय की व्यवस्था नहीं होने महिलाओं को काफी परेशानी होती है.

कसवागढ़ में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, इस अवसर पर जुटे कई विदेशी मेहमान

महिलाएं अपने हुनर से परचम लहरा रही हैं: राज

संवाददाता। बेरमो

गोमिया प्रखंड के खम्हरा पंचायत के कसवागढ़ स्थित माहेर संस्था कार्यालय परिसर में शनिवार को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया. इस अवसर पर कई विदेशी मेहमान भी यहां जुटे.

कार्यक्रम का उद्घाटन जिला परिषद के सदस्य डॉ सुरेन्द राज, गोमिया थाना प्रभारी राजेश रंजन, आईईएल थाना प्रभारी देवानंद कुमार, फुसरो नगर परिषद के वार्ड पार्षद रश्मि सिंह, मुखिया बंटी उरांव, मुखिया शांति देवी, पंसस कुंती देवी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया गया. वहीं आगंतुक अतिथियों का स्वागत माहेर संस्था के सदस्य, बच्चे एवं महिला स्वयं सहायता समूह के कार्यकर्ताओं ने किया. इस मौके पर गोमिया माहेर संस्था की ओर से राजेश कुजूर ने माहेर संस्था द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम की जानकारी दी. इसके बाद संस्था की ओर से चलाये जा रहे सिलाई- बुनाई सेंटर के महिलाओं ने अंधविश्वास के खिलाफ जागरुकता कार्यक्रम प्रस्तुत किया.

झांकी प्रस्तुत

- कार्यक्रम का उद्घाटन जिप सदस्य डॉ सुरेंद्र ने किया
- आगंतुक अतिथियों का संस्था के सदस्यों ने किया

सर्वोदय होम की महिलाओं के द्वारा नृत्य प्रस्तुत भी किया गया. साथ में बच्चों के द्वारा भी कई तरह की झांकियां और झारखंडी सांस्कृतिक डांस और पर्यावरण से संबंधित कई आइटम भी प्रस्तुत किया गया. इस अवसर पर जिला परिषद के सदस्य डॉ सुरेंद्र राज ने कहा कि महिलाएं आज सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं और अपने हुनर से पूरी दुनिया में परचम लहरा रही हैं. कहा कि यह इस क्षेत्र का सौभाग्य है कि माहेर संस्था झारखंड राज्य में महज दो क्षेत्रीय कार्यालय है. जिसमें से एक गोमिया में है. इस संस्था ने जिस प्रकार गरीबों, असहाय और वंचित महिलाओं और बच्चों की सेवा और शिक्षा का कार्य कर रही है, वह तारीफ के काबिल है. कहा कि उनसे भी जो सहयोग हो सकता है वे करने के लिए तत्पर रहते हैं. विशिष्ट अतिथि थाना प्रभारी राजेश रंजन एवं थाना प्रभारी देवानंद कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किए.

तिसरी में मूर्ति विसर्जन के दौरान दो गुटों के बीच झड़प

संवाददाता। तिसरी

तिसरी थाना क्षेत्र अंतर्गत धावाटांड़ गांव के पास सरस्वती पूजा मूर्ति विसर्जन के दौरान गाना बजाने को लेकर दो गुटों के बीच झड़प हो गई. इसके बाद मामला झगड़ा में तब्दील हो गया. इसी दौरान एक पक्ष के एक सनकी युवक ने डीजे ऑपरेटर के साथ मारपीट करते हुए पत्थर से मारकर सिर फोड़ दिया. जिससे धावाटांड़ गांव के निवासी राजकुमार रविदास गम्भीर रूप से घायल हो गए. इस बाबत भुक्तभोगी ने तिसरी थाना में आवेदन दिया है. बताया कि खोटो गांव के लोग मूर्ति विसर्जन का जुलूस लेकर धावाटांड़ आए हुए थे. राजकुमार उक्त जुलूस में डीजे बजा रहा था. धावाटांड़ गांव के पास जुलूस पहुंचने के बाद वह गाना बदल रहा था,

मामला शांत

- मूर्ति विसर्जन के दौरान गाना बजाने को लेकर हुई बहस
- धावाटांड़ निवासी राजकुमार इसमें घायल हो गये

तभी जुलूस में शामिल तथा कथित लोगों ने गाना नहीं बदलने की बात कही. जो राजकुमार को सुनाई नहीं पड़ी और उसने गाने को बदल कर दूसरा गाना लगा दिया. जिसके बाद वरुण नामक युवक ने राजकुमार रविदास को गाड़ी से उतारकर पिटाई कर दी. इस घटना के बाद गांव के लोगों ने राजकुमार को तिसरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर आए.

झामुमो जिला कार्यालय गिरिडीह में प्रखंड अध्यक्षों की बैठक संपन्न

हेमंत के साथ हुई साजिश का पर्दाफाश करेगा झामुमो

संवाददाता। गिरिडीह

झामुमो ज़िला कार्यालय गिरिडीह में ज़िला समिति एवं सभी प्रखंड के अध्यक्ष/सचिव की ऑनलाइन बैठक (वर्चुअल) शनिवार को केंद्रीय समिति के महासचिव विनोद पांडेय के साथ संपन्न हुई. बैठक में केंद्रीय समिति के द्वारा कई निर्देश दिए गए. पांडे ने 18 फरवरी यात्रा से ज़िले के सभी प्रखंडों के किसी एक पंचायत से पदयात्रा या न्याय यात्रा शुरू करने का निर्देश दिया. कहा कि प्रतिदिन एक-एक पंचायत में जाकर हेमंत सोरेन के साथ किये गए साज़िश और षड्यंत्र का पर्दाफाश करेंगे. साथ ही 04 मार्च को आहुत 51वें स्थापना दिवस सह आक्रोश दिवस में ज्यादा से ज्यादा लोगों को झंडा मैदान गिरिडीह पंहुचने के लिए आमंत्रित करेंगे. ये पदयात्रा सह न्याय यात्रा सभी शहरी क्षेत्र के सभी वार्डों में भी भ्रमण किया जाएगा. कार्यकर्ता पदयात्रा के दौरान पंचायत में दीवाल लेखन भी करेंगे. स्थापना दिवस सह आक्रोश दिवस में ज्यादा से ज्यादा लोगों की भागीदारी हो ये सुनिश्चित करेंगे. इस पदयात्रा सह न्याय यात्रा एवं 51वें स्थापना दिवस की तैयारी के लिए बैठक कर कार्यक्रम सफल बनाने के लिए निर्देश दिया गया.

इस बैठक की अध्यक्षता ज़िला अध्यक्ष संजय सिंह ने किया. वर्चुअल मीटिंग के बाद पार्टी कार्यालय में आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए ज़िला अध्यक्ष संजय सिंह ने कहा कि केंद्र की बीजेपी सरकार के इशारे पर ईडी ने एक फर्जी मुकदमे में राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को गिरफ्तार कर जेल में रखा है. कार्यकर्ता पदयात्रा के माध्यम से गांव-गांव जाकर इस साजिश का पर्दाफाश करे. साथ ही स्थापना दिवस में ज्यादा से ज्यादा समर्थक दिन के 02 बजे तक झंडा मैदान पहुंचे. 04 मार्च को झंडा मैदान से पूरे झारखंड को एक संदेश जाय कि झारखंड की जनता केंद्र सरकार और बीजेपी की साज़िश का जबाव देने को आतुर है. बैठक में ये भी निर्णय लिया गया कि 20 फरवरी को राज्य के मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन का आगमन होने जा रहा. जिसमें संगठन के कार्यकर्ता की भी भागीदारी हो. साथ ही ज़िला समिति एक ज्ञापन देगी. जिसमें गिरीडीह ज़िला के देवरी, गांडेय, तिसरी और पीरटांड़ के मधुबन में सैकड़ों एकड़ गैरमजरूआ ज़मीन, वन भूमि, सीएनटी से आच्छादित भूदान की ज़मीन को फर्जी तरीके से फर्जी कागजातों के आधार पर खरीद-बिक्री की गई है. इस संबंध में तत्कालीन उपायुक्त बन्दना दादेल ने सरकार से निगरानी से जांच के लिए लिखा था. इसमें एफआईआर दर्ज हुई. लेकिन इस जांच में कोई कार्रवाई नहीं हुई. ज़िला समिति मुख्यमंत्री से इस जमीन घोटाले के जांच की मांग करेगी. साथ ही गिरिडीह ज़िला में हुए ज़मीन घोटाले की जांच के लिए एसआईटी गठन कर जांच हो. क्योंकि 8.5 एकड़ जमीन के फर्जी मुकदमे में राज्य के मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी होती है और सैकड़ो एकड़ जमीन घोटाले के लोग आज घूम रहे हैं. झामुमो ईडी से भी इसकी जांच की मांग करता है. बैठक में कई पार्टी पदाधिकारी मौजूद थे.

भोगनाडीह गांव से निकली झामुमो की न्याय यात्रा

साहिबगंज। बरहेट प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत शनिवार को झामुमो बरहेट प्रखंड कमेटी के द्वारा न्याय यात्रा का शुभारंभ किया गया. वहीं ये यात्रा प्रखंड क्षेत्र के सभी पंचायत के सभी गांवों तक पहुंच कर जनता को हेमंत सोरेन को न्याय दिलाने के लिए अपने-अपने नियम संगत रिहाई के लिए पूजा, दुआ व प्रार्थना आदि करने का अपील किया गया. इस यात्रा का शुभारंभ वीर शहीद सिद्धो कान्हु के जन्म स्थली भोगनाडीह से शहीद के प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के पश्चात किया. भोगनाडीह मस्जिद में झामुमो के प्रखंड सचिव मुजीबुर रहमान के नेतृत्व में दुआ मांगी गई, जिसमें अल्लाह से हाथ उठाकर फरियाद करते हुए कहा कि निर्दोष को जालिमों के जुल्म से बचाए. यात्रा भोगनाडीह होकर बड़ा दलदली पहुंचा. ग्राम प्रधान के साथ मिलकर मांझीथान में विधिवत रूप से पूजा अर्चना कर उपस्थित ग्रामीणों से संबोधन करते हुए बताया गया कि हमारे राज्य के आदिवासी भाजपा के टारगेट पर है. यहां की जल, जंगल, जमीन के रक्षक को जेल बंद कर अपने हिसाब से कानून बनाकर हमारे अधिकार को हनन कर रहा है. जिसके बचाव के लिए गुरुजी और उसके पुत्र हेमंत सोरेन के लिए सभी आवाज उठाएं, ताकि राज्य की जनता के सबसे चहेता नेता बाहर आए और हमारे अधिकार को बचा सके. वहीं इस मौके पर झामुमो प्रखंड अध्यक्ष राजाराम मरांडी, सचिव मुजीबुर रहमान, एजाज अली मौजूद थे.

झामुमो अल्पसंख्यक मोर्चा ने की चादरपोशी

गिरिडीह। शहर के मोहनपुर भंडारीडीह स्थित हजरत चुड़ीशाह रहमतुल्लाह अलैहे मजार शरीफ और कर्बला पर पूर्व मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन की सकुशल रिहाई और सूबे में अमन-चैन, शांति और सुकून के लिए शुक्रवार की शाम झारखंड मुक्ति मोर्चा अल्पसंख्यक मोर्चा के जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में गुलपोशी व चादरपोशी की गयी. मौके पर अल्पसंख्यक मोर्चा के जिला अध्यक्ष चंद रशीद अंसारी ने कहा है कि झारखंड के लोकप्रिय नेता जिन्होंने आदिवासी, मूलवासी, पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए कल्याणकारी योजनाओं का सफलतापूर्वक काम करने की वजह से विरोधियों में काफी बेचैनी हो गई थी. इस कारण आनन-फानन में उन्हें फंसाकर जेल भेज दिया गया है. झारखंड मुक्ति मोर्चा अल्पसंख्यक मोर्चा के जिला समिति की ओर से दुआ किया गया कि सोरेन को मुश्किल समय में बेमिसाल हिम्मत और लम्बी उम्र दे, ताकि वे राज्य और राष्ट्रीयहित में काम कर लोगों को सेवा देते रहें. चादरपोशी कार्यक्रम में मो सरफुद्दीन, प्रखंड अध्यक्ष सह बीस सूत्री उपाध्यक्ष मो अनवर, उपाध्यक्ष नूर अहमद, सचिव मो नसीम, मो नौशाद, मो एनुअल, मो शमशेर, मो अल्ताफ, मो हासिम, मो मुस्तकीम आदि समर्थक शामिल थे.

साहिबगंज के खरदांग से झामुमो ने निकाली न्याय यात्रा

साहिबगंज। उधवा प्रखंड झामुमो केंद्रीय कमेटी के दिशा-निर्देश पर प्रखंड अध्यक्ष तमरूद्दीन शेख के नेतृत्व में शनिवार को प्रखंड के मोहनपुर पंचायत अंतर्गत खरदांग मैदान से न्याय यात्रा निकाली गई. झामुमो कार्यकर्ताओं ने सर्वप्रथम भगवान बिरसा मुंडा के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया. कार्यकर्ताओं ने विभिन्न गांव भ्रमण करते हुए जेल का ताला टूटेगा, हेमंत सोरेन छुटेगा व हेमंत सोरेन जिंदाबाद के नारे लगाए. इस दौरान प्रखंड अध्यक्ष तमरूद्दीन शेख ने कहा कि न्याय मार्च से भाजपा का सफाया होगा. कहा कि ईडी के द्वारा मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को झूठे मुकदमे में फंसाकर जेल भेजने की कार्रवाई की गई. उन्होंने कहा कि राज्य की जनता इसका मुंहतोड़ जवाब देगी. मौके पर प्रखंड उपाध्यक्ष जैनुल आबेदीन, सचिव कीनू सोरेन,पूर्व प्रखंड अध्यक्ष एहतेशाम गणी उर्फ चांद, अनवारूल हक, कीनू सोरेन, टीपू सुल्तान, सकल हेंब्रम, हफीजुर रहमान, महबूब आलम, हारून रशीद, मो.सावन, चंद्रराय सोरेन, अंगूर खान, बलाग़त सहित अन्य मौजूद थे.

साइबर अपराध के आरोप में 11 गिरफ्तार

संवाददाता। बोकारो

पुलिस ने चास थाना क्षेत्र के चीरा चास स्थित एक आवास में छापा मारकर 11 साइबर अपराधियों को धर दबोचा. पुलिस ने आवास से 41 एंड्रॉइड एवं कीपैड मोबाइल, जिओ व एयरटेल के 36 सिम कार्ड और एटीएम समेत रजिस्टर, स्टाम्प पैड, मोबाइल चार्जर, लॉटरी कूपन व अन्य सामग्री भी बरामद की. चास अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी प्रवीण कुमार सिंह ने प्रेस वार्ता कर इसकी जानकारी दी. बताया कि एसपी प्रियदर्शी आलोक के निर्देश एवं गुप्त सूचना के आधार पर यह सूचना मिली थी कि चास थाना क्षेत्र के चीरा चास में जवाहर सिंह के मकान में कुछ संदिग्ध लोग छिपकर रहते हैं. वे सभी साइबर ठगी का धंधा करते हैं. इसके बाद छापामारी टीम जब चीरा चास में जवाहर सिंह के ऊपरी तल्ले में पहुंची तो साइबर अपराधी भागने लगे. पुलिसकर्मियों ने सक्रियता दिखाते हुए 11 साइबर अपराधियों को धर दबोचा. इस बीच 3 अपराधी भाग निकले. पकड़े गए सभी अपराधी बिहार के नालंदा, पटना, जहानाबाद व दरभंगा समेत अन्य जिले के विभिन्न थानाक्षेत्र के हैं. बताया कि ये सभी अपराधी बोकारो के चीरा चास में पिछले पांच महीने से रहकर आमलोगों को लॉटरी में कार जीतने का लालच देकर पहले उन्हें विश्वास में लेते थे. उसके बाद उनका डिटेल मंगाकर खाते में पैसा ट्रांसफर करवाते थे. छापामारी टीम में चास थाना प्रभारी खुर्शीद और कन्हैया समेत दो दर्जन पुलिसकर्मियों की टीम शामिल थी.

हुई कार्रवाई

- पुलिस ने 41 एंड्रॉइड एवं कीपैड मोबाइल जब्त किया
- जवाहर सिंह के मकान में रह रहे थे सभी अपराधी

मूर्ति विसर्जन के दौरान दो गुटों के बीच झड़प

तिसरी। तिसरी थाना क्षेत्र अंतर्गत धावाटांड़ गांव के पास सरस्वती पूजा मूर्ति विसर्जन के दौरान गाना बजाने को लेकर दो गुटों के बीच झड़प हो गई. इसके बाद मामला झगड़ा में तब्दील हो गया. इसी दौरान एक पक्ष के एक सनकी युवक ने डीजे ऑपरेटर के साथ मारपीट करते हुए पत्थर से मारकर सिर फोड़ दिया. जिससे धावाटांड़ गांव के निवासी राजकुमार रविदास गम्भीर रूप से घायल हो गए. इस बाबत भुक्तभोगी ने तिसरी थाना में आवेदन दिया है. बताया कि खोटो गांव के लोग मूर्ति विसर्जन का जुलूस लेकर धावाटांड़ आए हुए थे. राजकुमार उक्त जुलूस में डीजे बजा रहा था. धावाटांड़ गांव के पास जुलूस पहुंचने के बाद वह गाना बदल रहा था.

प्रतिमा विसर्जन के दौरान घर पर की गई पत्थरबाजी

संवाददाता। गावां

गावां थाना क्षेत्र स्थित चिह्यूटिया में सरस्वती प्रतिमा विसर्जन के उपरांत असामाजिक तत्वों द्वारा दो घरों पर ढेला पत्थर चलाकर हमला किया गया. हमले में सरयू चौधरी का सिर फट गया. मामले को ले इनौस के जिला सचिव अशोक मिस्त्री ने गावां थाना में आवेदन देकर पवन यादव, मनी यादव, रौशन कुमार, सचिन कुमार, कुंदन यादव, मनीष यादव, आलोक यादव, मंटू यादव, महेश यादव, मानिकचंद यादव, विपिन कुमार, विनय यादव समेत 15 अज्ञात लोगों के खिलाफ गावां थाना में आवेदन दिया है. आवेदन में आरोप लगाया गया है कि उक्त सभी हर्बे हथियार से लेश होकर मेरे घर के सामने आए और जमकर पथराव किया. बाद में उक्त लोगों ने सोनू साव के दुकान पर जाकर मारपीट किया. वहीं सीताराम साव व राखी देवी के साथ भी मारपीट किया. उक्त मामले को लेकर चिह्यूटिया निवासी पप्पू कुमार चौधरी पर पत्थरबाजी करने का आरोप लगाया है.

दिया आवेदन

- असमाजिक तत्वों ने सरयू चौधरी पर हमला कर दिया
- सरयू ने 15 लोगों के खिलाफ गावां थाने में शिकायत की

रेलकर्मी हत्याकांड मामले में तीन गिरफ्तार

संवाददाता। साहिबगंज

नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत नार्थ कॉलोनी स्थित रेलवे क्वार्टर में पिछले दिनों हुई रेलकर्मी राजकुमार चंदन की ग़ोली मार कर हत्या की गई थी. इस मामले का पुलिस ने खुलासा कर दिया. नगर थाना में डीएसपी सह सदर एसडीपीओ संजीव कुमार मिश्रा ने बताया कि हत्याकांड के बाद मृतक की पत्नी रिंकू देवी के फर्द बयान के आधार पर नगर थाना में कांड संख्या 18/24 दर्ज किया गया था. पुलिस कप्तान कुमार गौरव के निर्देश पर उनके नेतृत्व में एसआईटी का गठन हुआ था.

एसआईटी ने पेशेवर तरीके से कांड का उद्भेदन करते हुए मृतक रेलकर्मी की पत्नी रिंकू देवी, मृतक की बड़ी साली उषा कुमारी व पंकज कुमार को गिरफ्तार किया गया. वहीं हत्या में प्रयुक्त देसी कट्टा, एक खोखा, दो मोबाइल व हत्या के समय आरोपियों के पहने गए कपड़े व जूते भी बरामद किया. वारदात से पूर्व आरोपियों के साहिबगंज आने व जाने का सीसीटीवी फुटेज भी पुलिस को प्राप्त है. एसडीपीओ ने बताया कि रेलकर्मी का अपनी पत्नी के साथ सम्बंध अच्छा नहीं था. रेलकर्मी अपनी पत्नी को अकसर मारता-पीटता था. अपनी कमाई का ज्यादातर पैसा अपने घर भेजा करता था. जिससे परेशान होकर रिंकू ने अपने पति की हत्या की साजिश रची. इसमें अपनी बहन उषा कुमारी व उसके पुत्र पंकज कुमार को शामिल किया. वारदात से पहले उषा व पुत्र पंकज रेलकर्मी के घर आया हुआ था. रात में तीनों ने राजकुमार की सोयी अवस्था में ग़ोली मार कर हत्या कर दी. डीएसपी सह एसडीपीओ ने बताया कि उषा उम्र 45 व उनका पुत्र पंकज उम्र 19, बिहार के पटना ज़िला अंतर्गत बाढ़ थाना क्षेत्र के बुढ़नीचक के रहने वाले हैं. जबकि मृतक व उसकी पत्नी रिंकू, बिहार के बांका जिला के बौंसी के पंडाटोला के रहने वाले थे.

बैंक ऑफ इंडिया शिविर में 532 केसीसी एनपीए धारक का एकमुश्त ऋण समझौता किया गया

बीओआई का ऋण चुकाओ और ऋण पाओ शिविर

संवाददाता। कारो

बैंक ऑफ इंडिया (बीओआई) बोकारो अंचल की ओर से शनिवार को मंजूरा पंचायत में शिविर लगाया गया. कसमार एवं खैराचातर शाखा के द्वारा केसीसी से सम्बंधित ऋण चुकाओ एवं ऋण पाओ महाअभियान के तहत शिविर का आयोजन किया गया. शिविर में बैंक के एनबीजी झारखंड के महाप्रबंधक मनोज कुमार, बोकारो अंचल के आंचलिक प्रबंधक अश्विनी कुमार मित्तल, उप आंचलिक प्रबंधक एलएन डागरा, मुख्य प्रबंधक (वसूली) अरुण कुमार उपस्थित थे. बैंक के एनबीजी महाप्रबंधक मनोज कुमार ने उपस्थित कृषकों को बैंक द्वारा दी जा रही योजनाओं को विस्तार से अवगत कराया.

साथ ही कृषकों को विस्तार से यह भी बताया कि कैसे वे समय पर ऋण चुकाकर ब्याज दर पर सरकार द्वारा दी जा रही छूट का लाभ उठा सकते हैं. उन्होंने बताया कि पूरे राज्य में कर्ज चुकाओ अभियान के तहत गरीबों के जनकल्याण के लिए इस अभियान की शुरुआत की गई है. शिविर में काफी संख्या में कृषकों के साथ स्वयं सहायता समूह की महिलाएं मौजूद थीं. शिविर में 532 केसीसी एनपीए धारक का एकमुश्त ऋण समझौता किया गया एवं 136 नए केसीसी के लिए कृषकों से आवेदन जमा कराए गए. शिविर में मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी योजना के तहत कसमार प्रखंड के दो लाभुकों को स्वीकृति पत्र का भी वितरण किया गया. मौके पर कसमार प्रमुख नियोति दे, कसमार शाखा प्रबंधक मंटू कुमार रजक, जोनल कार्यालय के प्रबंधक लक्ष्मीकांत, मंजुरा पंचायत के पूर्व मुखिया नरेश कुमार महतो, खैराचातर पंचायत के मुखिया विजय कुमार जायसवाल, सिंहपुर पंसस विनोद महतो, समेत बैंक बीसी धर्मेन्द्र मुखर्जी, समीर जायसवाल, अजय जायसवाल के अलावा अन्य कृषक व ग्रामीण मौजूद थे.

चापी के तीन विद्यार्थियों को मिला इंस्पायर अवार्ड

संवाददाता। तेनुघाट

भारत सरकार द्वारा संचालित इंस्पायर अवार्ड मानक 2023/24 में पेटरवार प्रखंड अंतर्गत झारखंड पब्लिक स्कूल चापी के तीन विद्यार्थियों लक्ष्मी कुमारी वर्ग अष्टम, योगेश कुमार गुप्ता वर्ग अष्टम एवं साहिल कुमार यादव सप्तम को अवार्ड दिया गया. बता दें कि लक्ष्मी कुमारी जो ओवरलोड व्हीकल रेसिस्टेंस सिस्टम ऑफ ब्रिज, योगेश कुमार गुप्ता ने पावर जनरेटिंग ऑफ शू और साहिल कुमार यादव ने व्हीकल एक्सिडेंट प्रिनेंशन पर अपना प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया था. इसके बाद तीनों का अगले पड़ाव के लिए भी चयन किया गया. भारत सरकार की ओर से संकल्पना आधारित नमूना पेश करने के लिए प्रोत्साहन राशि भी उपलब्ध कराई गई थी. यह जानकारी स्कूल के सचिव दिनेश महतो एवं प्रधानाध्यापक सुरेश यादव ने दी. इस दौरान सभी अभिभावकों एवं विज्ञान विभाग के शिक्षक प्रभात कुमार, गोवर्धन रविदास एवं नीतू कुमारी तथा सभी सहयोगी शिक्षक मिथिलेश कुमार दास, राखी कुमारी के साथ ही सभी सहयोगी कमी कंदर्प कुमार प्रसाद, ने हार्दिक शुभकामनाएं दी.

▼ ब्रीफ खबरें

डीसी ने 3 माह में रेफर मरीजों की रिपोर्ट मांगी

रामगढ़। उपायुक्त चंदन कुमार की अध्यक्षता में शनिवार को समाहरणालय सभाकक्ष में अस्पताल प्रबंधन समिति की बैठक हुई. इस दौरान उपायुक्त ने सदर अस्पताल रामगढ़ में ओपीडी, आईपीडी, नॉर्मल डिलीवरी, सी-सेक्शन सहित विभिन्न रोगों के उपचार हेतु किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की. इस क्रम में सदर अस्पताल के उपाधीक्षक को विगत तीन माह में सदर अस्पताल से रेफर किए गए मरीजों से संबंधित विस्तृत प्रतिवेदन एक सप्ताह के अंदर उपलब्ध कराने को कहा. वहीं अस्पताल परिसर में मरीजों अथवा उनके परिजनों को दिग्भ्रमित कर निजी अस्पतालों में इलाज कराने हेतु प्रेरित करने वाले लोगों पर विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए.

अतिक्रमण हटाने गई वन टीम का विरोध

चौपारण। प्रखंड की भगहर पंचायत के दवारी जंगल में जंगल की जमीन से अतिक्रमण हटाओ अभियान चलते हुए पांच-छह अर्धनिर्मित घरों को तोड़ा गया. बता दें कि दवारी जंगल में वन विभाग द्वारा पौधरोपण कार्य किया जा रहा है. दूसरी ओर जंगल में अतिक्रमण कर अर्धनिर्मित घर बना दिया गया था. वहीं, अतिक्रमण हटाने के लिए वन विभाग की संयुक्त टीम का महिलाओं ने विरोध करते हुए पथराव कर दिया. अतिक्रमण हटाने में प्रयुक्त जेसीबी के शीशे फोड़ डालें. ग्रामीणों का कहना था कि हम गरीबों के पास जमीन नहीं है. ऐसे में हमलोग कहां जाएं. ग्रामीणों ने उन्हें उचित जगह बसाने की अधिकारियों से मांग की.

सड़क किनारे खड़ी हाईवा उड़ा ले गए चोर

केरेडारी। थाना क्षेत्र अंतर्गत भदई खाप सड़क किनारे स्थित एक हाईवा वाहन चोरी होने का मामला सामने आया है. जानकारी के अनुसार, गिरिडीह जिला अंतर्गत पचम्बा थाना क्षेत्र के मनियामंडी निवासी संजय कुमार के हाईवा (एनएल 01 एबी 0360) को बीते 13 फरवरी की रात करीब 8 बजे चालक अनुज कुमार मेहता भदई खाप मुख्य सड़क किनारे खड़ी कर खाना खाने चला गया. वापस लौटने पर हाईवा गायब मिली. चालकों से पूछताछ व काफी खोजबीन करने के बाद भी गाड़ी का कोई पता नहीं चल सका. इस मामले को हाइवा मालिक ने चालक के बयान पर केरेडारी थाने में लिखित शिकायत कर अज्ञात चोरों के खिलाफ हाईवा चोरी की प्राथमिकी दर्ज कराई है.

आजसू की ओर से मृतक के आश्रितों की मिली मदद

रामगढ़। कुंदरूकला पंचायत अंतर्गत नायक टोला निवासी अनु घांसी के निधन पर गिरिडीह सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी व समाजसेवी सुनीता चौधरी के निर्देश पर उनके परिजनों के बीच शनिवार को खाद्य सामग्री उपलब्ध कराया गया. इस दौरान मुख्य रूप से मौजूद रामगढ़ पार्षद धनेश्वर महतो व कुंदरुकलां मुखिया किशुन राम मुंडा द्वारा मृतक के परिजनों को आटा, चावल, तेल, गुड़ व चूड़ा देकर मदद की गई. पार्षद ने कहा कि आजसू पार्टी हमेशा गरीबों को मदद करने का काम करती है. मौके पर उप मुखिया मोहराय महतो, वार्ड सदस्य सघोरी देवी, टेकलाल महतो, अरविंद कुमार, जगदेव महतो, प्रदीप नायक, सुखदेव नायक, संतोष नायक, मुकेश नायक, गोपाल नायक, शिवचंद नायक, बॉबी नायक, जानो देवी, अनिल नायक सहित कई लोग मौजूद थे.

मेडिकल कॉलेज अस्पताल के अधीक्षक से मिले सदर विधायक के मीडिया प्रतिनिधि, अस्पताल की अव्यवस्था से कराया अवगत

बंद बड़े ऑक्सीजन प्लांट को शीघ्र चालू कराया जाए : रंजन चौधरी

संवाददाता। हजारीबाग

अधीक्षक डॉ. विनोद कुमार को अव्यवस्थाओं से अवगत कराते रंजन चौधरी.

व्यवस्था लचर
- अस्पताल में स्ट्रेचर की कमी खराब पड़े हैं कार्डियक एंबुलेंस
- अस्पताल अधीक्षक ने व्यवस्था दुरुस्त करने का दिया निर्देश

झारखंड में सरकार बदल गई, लेकिन व्यवस्था यथावत है. हजारीबाग के शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में प्रबंधकीय लापरवाही पराकाष्ठा पर है. इसका खामियाजा बेहतर सुविधा की आस में यहां पहुंचने वाले मरीजों और उनके परिजनों को भुगतना पड़ रहा है. अस्पताल की व्यवस्था में सुधार को लेकर शनिवार को सदर विधायक के मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी अस्पताल अधीक्षक डॉ. विनोद कुमार से उनके कार्यालय कक्ष में मुलाकात की.

इस दौरान उन्होंने अस्पताल में व्याप्त अव्यवस्था से अवगत कराते हुए तत्काल इन समस्या का समाधान करने का आग्रह किया. विधायक प्रतिनिधि ने आपातकालीन ट्रॉमा सेंटर में स्ट्रेचर की कमी, अस्पताल में स्थापित पीएम केयर फंड से बने प्रेशर स्विंग एडजोर्प्शन (पीएसए) तकनीक पर आधारित दो ऑक्सीजन प्लांट के बंद होने की स्थिति में ट्रॉमा सेंटर सहित अस्पताल के हरेक वार्डों में कम से कम पांच- पांच भरे हुए ऑक्सीजन के जंबो सिलेंडर 24 घंटे उपलब्ध कराने और डीएमएफटी मद से खरीदे गए एडवांस लाइफ सपोर्ट कार्डियक एम्बुलेंस पिछले करीब एक महीने से खराब होने के कारण मरीजों को हो रही परेशानी से अवगत कराते हुए तत्काल जरूरतमंद मरीजों के हित में इसे सुदृढ़ करने की मांग की.

रंजन चौधरी के आग्रह पर तत्काल संज्ञान लेते हुए डॉ. विनोद कुमार ने ट्रॉमा सेंटर में यथाशीघ्र 10 स्ट्रेचर रखवाने, हरेक वार्ड में 24 घंटे 5 भरे हुए ऑक्सीजन जंबो सिलेंडर रखवाने और डीएमएफटी के एडवांस लाइफ सपोर्ट कार्डियक एम्बुलेंस को तत्काल बनाने का आदेश संबंधित कर्मियों को दिया. साथ ही उन्होंने आश्वस्त भी किया कि जरूरतमंद मरीजों के हितार्थ हर जरूरी सेवा जल्द सुदृढ़ करा लिया जाएगा. समस्याओं पर तत्काल संज्ञान लेने पर रंजन चौधरी ने अस्पताल अधीक्षक का आभार जताया है.

स्वास्थ्य मंत्री और सीएम से हस्तक्षेप का आग्रह

रंजन चौधरी ने यह भी कहा कि डीएमएफटी मद का पैसा स्वास्थ विभाग को दुरुस्त करने के लिए लगातार खर्च किया जा रहा है. लेकिन व्यवस्थाओं के रखरखाव और उपयोगिता पर अस्पताल प्रबंधन और जिला प्रशासन विफल साबित हो रहा है. उन्होंने जिला प्रशासन, स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता एवं सीएम चंपाई सोरेन से भी इस मामले में हस्तक्षेप करते हुए तत्काल ऑक्सीजन प्लांट को चालू करने का आग्रह किया, ताकि जरूरतमंद मरीजों को समय इसका लाभ मिल सके और उनकी जिंदगी बचाई जा सके. मौके पर भाजयुमो नेता राजकरण पांडेय भी मौजूद थे.

बच्छई के पंचायत सचिव पर घूस लेने का आरोप

चौपारण। प्रखंड की बच्छई पंचायत के ग्रामीणों ने पंचायत सचिव केदार साव पर अबुआ आवास योजना में समृद्ध लोग का घूस लेकर जियो टैग करने का आरोप लगाते हुए उपायुक्त को ज्ञापन सौंपा है. ग्रामीणों ने आवेदन में लिखा है कि बच्छई के सेवई, ओबरा, चक, मालिकाना, डुमरी एवं बच्छई गांवों के समृद्ध लोग व पक्का मकान वालों से घूस लेकर जियो टैगिंग की गई है. इसकी पारदर्शी रूप से जांच कराकर निष्पक्ष सरकारी कर्मी से पुनः जियो टैग कराने और आरोपी पंचायत सचिव पर विधि सम्मत कार्रवाई करने की डीसी से मांग की गई. इस संबंध मे बीडीओ प्रेमचंद सिन्हा ने कहा कि प्रखंड में कोई भी संपन्न व्यक्ति गलत तरीके या अपना साक्ष्य को छुपा कर अबुआ आवास का लाभ लेता है, तो वैसे लाभुकों पर मामला दर्ज कर राशि की रिकवरी की जाएगी.

युवती के साथ दुष्कर्म कर हत्या के दोषी को कोर्ट ने सुनाई सजा

सश्रम आजीवन कारावास

संवाददाता। कोडरमा

कोर्ट फैसला
- एडीजे दितीय अजय कुमार सिंह की कोर्ट ने सुनाई सजा
- मात्र चार माह के कार्य दिवस में कोर्ट ने की त्वरित सुनवाई

युवती से दुष्कर्म के बाद हत्या करने के एक मामले में अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश द्वितीय अजय कुमार सिंह की अदालत ने अभियुक्त को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है. मात्र 4 माह के कार्य दिवस में त्वरित सुनवाई करते हुए अदालत ने अभियुक्त कोडरमा जिला के शिवपुर, सतगावां निवासी मुकेश कुमार को आईपीसी की धारा 302 के तहत दोषी करार देते हुए सश्रम आजीवन कारावास की सजा सुनाई.

साथ ही 20,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया. जुर्माना की राशि नहीं देने पर एक वर्ष अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी. वहीं आईपीसी की धारा 376 के तहत दोषी पाते हुए 10 वर्ष सश्रम कारावास और 10,000 रुपये अर्थदंड और आईपीसी की धारा 449 के तहत दोषी पाते हुए 5 वर्ष सश्रम कारावास और 5,000 रुपये जुर्माना लगाया. जुर्माना की राशि नहीं देने पर क्रमशः एक साल और 6 माह अतिरिक्त कारावास की सजा भुगतनी होगी. सभी सजाएं साथ-साथ चलेंगी. बता दें कि अभियुक्त 18 वर्ष तक फरार था. पुलिस ने 28 जुलाई 2023 को उसे गुजरात से गिरफ्तार किया था.

अभियोजन का संचालन लोक अभियोजक एंजेलिना वारला ने किया. इस दौरान सभी 8 गवाहों का परीक्षण कराया गया. लोक अभियोजक ने सुनवाई के दौरान अपराध की गंभीरता को देखते हुए न्यायालय से अभियुक्त को अधिक से अधिक सजा देने का आग्रह किया था. वहीं बचाव पक्ष की ओर से एलएडीसी डिप्टी चीफ किरण कुमारी ने दलीलें पेश करते हुए बचाव किया. अदालत ने सभी गवाहों और साक्ष्यों का अवलोकन करने के उपरांत अभियुक्त को दोषी पाते हुए सजा मुकर्रर की और जुर्माना लगाया. बता दें कि न्यायालय ने 15 फरवरी को अभियुक्त को दोषी ठहराया था.

क्या है पूरा मामला : मामला वर्ष 2005 का है. घटना को लेकर मृतका की भाभी करिता देवी ने सतगावां थाना में पड़ोसी मुकेश कुमार पर दुष्कर्म कर हत्या करने के आरोप में मामला दर्ज कराया था. आवेदन में कहा था कि 4 मार्च 2005 को रात्रि में वह अपने कमरे में सोई हुई थी. करीब 4:30 बजे सुबह बचाओ-बचाओ की आवाज पर उसकी नींद खुली. आवाज की ओर दौड़ कर गई तो देखा कि एक युवक उसकी ननद के कमरे से निकल रहा है. उसे पीछे से पकड़ने का प्रयास किया. चेहरा देखा, तो वह घर के पड़ोस में रहनेवाला मुकेश कुमार था. इसके बाद धक्का देकर वह छत की ओर से भाग गया. इसके बाद जब वह ननद के कमरे में गई तो उसे जमीन पर मृत पाया. वहीं, सलवार का नाड़ा भी खुला हुआ था.

क्वार्टर में फांसी के फंदे से झूलता मिला जेई का शव

- शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर मामले जांच में जुटी पुलिस
- गोला प्रखंड में पंचायती राज में पदस्थापित थे जेई सुधांशु कुमार

रामगढ़। गोला प्रखंड में पंचायती राज विभाग में पदस्थापित कनीय अभियंता सुधांशु कुमार (30) का शव शनिवार को उनके कमरे से बरामद हुआ. सीसीएल रजरप्पा प्रोजेक्ट के बी-टाइप क्वार्टर में फांसी के फंदे से शव झूल रहा था. वह मूल रूप से रामगढ़ जिला के भुरकुंडा चिकोर के रहनेवाले थे. बताया जाता है 16 फरवरी को ड्यूटी से आने के बाद वह अपने क्वार्टर में थे.

सुबह देर तक क्वार्टर का दरवाजा नहीं खुलने पर आसपास के लोगों ने दरवाजा खटखटाया, पर अंदर से कोई आवाज नहीं आई. इसके बाद परिजनों को सूचना दी गई. इधर परिजन भी लगातार इसे फोन कर रहे थे, कॉल रिसीव नहीं करने पर परिजनों ने इसकी सूचना रजरप्पा थाना में दी. तत्पश्चात रजरप्पा थाना प्रभारी नवीन प्रकाश पांडेय दल-बल के साथ मौके पर पहुंचे और क्वार्टर का दरवाजा तोड़ कर अंदर घुसे. जहां शव को फांसी के फंदे से उतार कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया. पुलिस मामले की गहन जांच पड़ताल कर रही है. उधर घटना की सूचना मिलने पर बीडीओ संजय उमर शांडिल्य घटनास्थल पर पहुंचे. उन्होंने घटना पर दुःख प्रकट किया. बीडीओ ने कहा कि जेई सुधांशु पर काम का किसी प्रकार का कोई दबाव नहीं था. वे क्षेत्र में एक अच्छे अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे थे.

जिले के 7 थानों में नये थाना प्रभारी पदस्थापित

हजारीबाग। एसपी अरविंद कुमार सिंह ने विभिन्न जिले से स्थानांतरित होकर आए सब-इंस्पेंक्टरो की पदस्थापना शुरू कर दी है. इस कड़ी में जिले के सात थानों में नए थाना प्रभारी तैनात किए गए हैं. इनमें कटकमदाग थाना में पंकज कुमार, चंपारण थाना में दीपक कुमार सिंह, चरही थाना में दीपक कुमार सिंह, कोर्रा थाना में शमशेर बहादुर, बड़कागांव थाना में मुकेश कुमार सिंह, चलकुशा थाना में संजय कुमार और मुफस्सिल थाना में कुणाल किशोर को थाना प्रभारी बनाया गया है. एसपी ने आदेश जारी कर 24 घंटे के अंदर प्रतिनियुक्त किए गए पुलिस पदाधिकारियों को सबंधित थानों में प्रभार लेने का आदेश दिया है.

5.7 लाख लोगों को खिलाई फाइलेरिया रोधी दवाइयां

रामगढ़। मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन अंतर्गत फाइलेरिया उन्मूलन अभियान को लेकर शनिवार को उपायुक्त चंदन कुमार की अध्यक्षता में समाहरणालय सभाकक्ष में द्वितीय जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक हुई. इस दौरान उपायुक्त को जानकारी दी गई अभियान के तहत 10 फरवरी से 25 फरवरी तक 1068687 लोगों को एल्बेंडाजोल एवं डीइसी की दवाइयां खिलाने के लक्ष्य के विरुद्ध अब तक 5.7 लाख लोगों को दवाइयां खिलाई गई है. कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न कराने हेतु कुल 2392 ड्रग डिस्ट्रीब्यूटर्स एवं 131 सुपरवाइजर्स को चयनित किया गया है. बैठक में उपायुक्त ने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर तैयार किए गए माइक्रो प्लान के अनुसार कार्य करने का निर्देश कहा.

वित्त संबंधी समिति को 'संसद महारत्न पुरस्कार'

क्षेत्रवासियों की सेवा करना मेरा परम सौभाग्य : जयंत

- सांसद ने क्षेत्र की जनता को समर्पित किया पुरस्कार

संवाददाता। हजारीबाग

सांसद सह अध्यक्ष वित्त संबंधी संसदीय स्थायी समिति जयंत सिन्हा को सर्वश्रेष्ठ सांसद और उनकी अध्यक्षता वाली वित्त संबंधी संसदीय स्थायी समिति को पांच वर्षों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 'संसद महारत्न पुरस्कार 2024' से सम्मानित किया गया है. जयंत सिन्हा को 17 फरवरी को नई दिल्ली में इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया. इस दौरान जयंत सिन्हा ने निर्णायक समिति के अध्यक्ष केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल और उपाध्यक्ष पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त टीएस कृष्णामूर्ति का आभार व्यक्त किया.

जयंत सिन्हा का सांसद के रूप में लोकसभा में और उनकी अध्यक्षता वाली वित्त संबंधी संसदीय स्थायी समिति का बहुत ही बेहतर प्रदर्शन रहा है. समिति ने 5 वर्षों में महत्वपूर्ण विषयों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसके आधार पर केंद्र सरकार की नीतियां बनीं. यह समिति वित्त मंत्रालय से जुड़े विधेयकों का अध्यन्न करती है और समिति के सुझावों के आधार पर केंद्र सरकार संशोधनों को सदन में लाती है, जिससे देश का कानून बनता है.

सांसद ने 'सेवा परमो धर्मः' को बताया मूलमंत्र

जयंत सिन्हा ने कहा कि मुझसे बहुत लोग पूछते हैं कि आप अपना सफल और प्रगतिशील कॅरियर छोड़कर राजनीति में क्यों आए? इस पर मैं उनलोगों से यही कहता हूं कि मेरा मूलमंत्र 'सेवा परमो धर्मः' है. मैं हजारीबाग लोकसभा की जनता के आशीर्वाद और विश्वास से ही सेवा कर पाता हूं. मेरे क्षेत्र की जनता ने मुझे चुनाव में दो बार ऐतिहासिक जीत दिला कर अपना आशीष दिया है. इसलिए मैं यह सम्मान अपने हजारीबाग व रामगढ़ के परिवार को समर्पित करता हूं.

नए भारत के निर्माण में योगदान देने पर गर्व

सांसद ने कहा कि नए भारत के निर्माण में योगदान देना मेरे लिए अत्यंत गर्व व सौभाग्य की बात है. उन्होंने विश्वास जताया कि 2024 में भी क्षेत्र की जनता उन्हें अपना आशीष देगी. उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में क्षेत्रवासियों की सेवा करना मेरा परम सौभाग्य है. उसके लिए उनका आभार व्यक्त करता हूं.

अबुआ आवास की प्रथम सूची जारी, 388 लाभुक चयनित

संवाददाता। टाटीझरिया

मिलेगा आवास
- टाटीझरिया में सबसे कम और डूमर में सबसे अधिक आवास
- बीडीओ ने पंचायत सेवकों को दिया जियो टैग करने का निर्देश

राज्य सरकार द्वारा गरीब, असहाय व वृद्धों को दिए जानेवाले अबुआ आवास की प्रथम सूची आ गई है. इसमें टाटीझरिया प्रखंड को 388 लाभुकों को यह आवास दिया जाना है. बीडीओ रश्मि खुशबू मिंज ने 388 लाभुकों की सूची पंचायत सेवकों को मुहैया करवाते हुए जियो टैग करने का निर्देश दिया है. साथ ही कहा गया है कि अयोग्य व्यक्तियों के आवास का जिया टैग अथवा पंजीकरण नहीं करना है.

पूर्व में यदि किसी लाभुक को आवास मिला हुआ है, यदि पक्का का मकान है और आर्थिक रूप से सक्षम हैं, तो ऐसे लाभुक को अबुआ आवास नहीं दिए जाएं. पत्र में निर्देशित किया गया है कि अयोग्य लाभुकों को आवास मुहैया कराए जाने पर भविष्य में पंचायत सचिव और मुखिया पर विभागीय और न्यायिक दंडात्मक कार्रवाई की जा सकती है.

प्रथम सूची से बढ़ा मुखिया का सिरदर्द : बता दें कि 388 आवास क्रमशः इन पंचायतों में कोटिवार दिया जाना है. इसमें बेड़म पंचायत में 58, भराजो में 46, डहरभंगा में 50, धरमपुर में 62, डूमर में 97, झरपो में 23, खैरा में 29 और टाटीझरिया में 14 आवास मिलने हैं. इस सूची से मुखिया का भी सिरदर्द बढ़ गया है.

115 रैयतों को मिली वृत्ति पॉलिसी

संवाददाता। केरेडारी

मिला मुआवजा
- एनटीपीसी ने 31 लोगों को विस्थापन प्रमाण पत्र सौंपा
- स्थानीय हितधारकों का योगदान अहम : फैज तैयब

एनटीपीओ केरेडारी व चट्टी बरियातु परियोजना के प्रमुख प्रभारी फैज तैयब एवं केरेडारी परियोजना प्रमुख शिव प्रसाद के मार्गदर्शन में 115 रैयतों को 6.81 करोड़ रुपये के प्रीमियम की वार्षिक वृत्ति पॉलिसी सौंपी गई. वहीं 31 लोगों को विस्थापन प्रमाण पत्र दिया गया. इस अवसर पर महाप्रबंधक फैज तैयब ने कहा कि किसी भी परियोजना की स्थापना में स्थानीय हितधारकों का योगदान महत्वपूर्ण होता है.

उन्होंने आशा जताई कि केरेडारी परियोजना के निर्माण के लिए रैयतों, स्थानीय लोगों, जनप्रतिनिधियों और प्रशासन का सहयोग आगे भी मिलता रहेगा. वहीं केरेडारी अंचल अधिकारी राम रतन बरनवाल ने कहा कि रैयतों के सहयोग को कभी भुलाया नहीं जा सकता है. नियमों के तहत रैयतों की हर संभव सहायता करने के लिए प्रशासन तैयार है. परियोजना प्रमुख शिव प्रसाद ने कहा कि एनटीपीसी कोयला खनन परियोजनाओं में भू-विस्थापित परिवार की कुल अधिग्रहित रैयती भूमि का भुगतान प्राप्त कर लेने की स्थिति में वार्षिक वृत्ति पॉलिसी सौंपी जाती है. इसमें एक से पांच एकड़ तक अधिग्रहित रैयती भूमि के लिए प्रति माह 3,000 रुपये प्रति एकड़ अर्जित भूमि के समान अनुपात में 30 साल तक राशि दी जाएगी. इस राशि में प्रति दो वर्ष में 1000 रुपये की बढ़ोतरी की जाएगी.

वहीं, किसी एक एकड़ से कम भूमि के अधिग्रहण की स्थिति में रैयत को 30,000 रुपये प्रतिवर्ष 30 साल के लिए दिया जाएगा. इसमें प्रति दो वर्ष में 750 रुपये की बढ़ोतरी की जाएगी. मौके पर बड़ी संख्या में ग्रामवासियों के साथ परियोजना के अपर महाप्रबंधक रोहित पाल, एसपी गुप्ता, वरिष्ठ प्रबंधक मुकेश साहू, उप प्रबंधक श्याम कुमार शर्मा, अधिकारी अल्का पांडा एवं अन्य गणमान्य उपस्थित थे.

बस चालक की सूझबूझ से बच गई 50 यात्रियों की जान

संवाददाता। हजारीबाग

हादसा टला
- अमन बस में सवार थे यात्री, समय रहते सभी को उतारा
- कटकमदाग के कुदरी मोड़ के पास बस में धधकी आग

जिले के बड़कागांव भाया टंडवा, हजारीबाग रोड चलते वाली अमन नामक यात्री बस में अचानक आग लग गई. यह बस टंडवा से बड़कागांव होते हजारीबाग आ रही थी. इस क्रम में कटकमदाग प्रखंड के कुदरी मोड़ के पास बस धधक उठी. जैसे ही आग की भनक चालक को लगी, उसने तुरंत बस को रोक कर बस में सवार सभी 50 यात्रियों को नीचे उतार दिया, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया.

बड़कागांव के बस एजेंट ने बताया कि अमन बस टंडवा से आकर बड़कागांव मुख्य चौक से पूर्वाह्न 11 :50 बजे प्रस्थान की थी. इस बस में यात्री भरे हुए थे. कुंदरीमोड़ जाते-जाते इंजन में धुआं निकलने लगा. इसकी भनक ड्राइवर को लगी तो ड्राइवर ने बस रोककर यात्रियों को उनके सामग्रियों के साथ उतार दिया. यात्रियों को उतरते-उतरते बस में आग तेजी से धधकने लगी. यात्रियों ने कहा कि चालक की सूझबूझ से हमलोगों की जान बच गई. उधर, दमकल की मदद से आग बुझाया गया.

विभावि में 'भारत के समक्ष चीन की चुनौती' पर व्याख्यान, सामरिक संबंधों पर वक्ताओं ने रखी राय

भारत को अपनी शक्ति और बढ़ानी होगी : अशोक कंठ

संवाददाता। हजारीबाग

बोले वक्ता
- चार दशक के सबसे कठिन दौर में भारत-चीन का संबंध
- निगरानी राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर हो रहा है ड्रैगन

चीन का आर्थिक विकास दर अब गिर रहा है. कोविड महामारी के बाद उसका ध्यान अपनी अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण पर है. संभव है कि वह अमेरिका से बड़ी अर्थव्यवस्था कभी न बन पाए. उक्त बातें चीन में भारत के पूर्व राजदूत अशोक कुमार कंठ ने कही. वे शनिवार को विनोबा भावे विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में 'भारत के समक्ष चीन की चुनौती' विषय पर व्याख्यान दे रहे थे.

कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के इतिहास एवं राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था. कंठ ने कहा कि चीन शक्ति का सम्मान करता है. चीन के साथ रिश्तों को ठीक करने के लिए भारत को अपनी शक्ति बढ़ानी होगी. उन्होंने आगे कहा कि चीन के साथ पश्चिमी देशों के रिश्ते अब बिगड़ने लगे हैं. इसी बौखलाहट से चीन अब आक्रामक नीति अपनाने लगा है. अब ड्रैगन एक निगरानी राष्ट्र बनने की दिशा में है. इसलिए भारत और चीन के बीच सामरिक संबंध अब सर्वाधिक महत्व रखते हैं. चीन ने विज्ञान एवं प्रविधि के क्षेत्र में प्रगति कर विश्व को चौंका दिया है. परंतु कुछ विद्वानों का मानना है कि अब चीन का भी जापानीकरण हो रहा है. उधर अमेरिका के साथ चीन की सामरिक प्रतिस्पर्धा जारी है.

अब उसे यह भी लगता है कि भारत, अमेरिकी खेमा में शामिल हो चुका है. इसीलिए वह भारत के साथ जबरदस्ती करने का प्रयास करता रहता है. सेना को मजबूत करने के साथ वृहत सामरिक वार्ता में समान विचारधारा वाले राष्ट्रों को गोलबंद कर के इसका सामना किया जा सकता है. उन्होंने यह भी कहा कि

ईंट का जवाब पत्थर से देने को रहें तैयार : यशवंत

अपने संबोधन में भारत के पूर्व विदेश मंत्री सह हजारीबाग के पूर्व सांसद यशवंत सिन्हा ने भारत-चीन संबंध को संचालित करने के तीन सूत्री मंत्र को बताया. उन्होंने कहा कि हमें चीन से सहयोग के साथ ही जरूरत पड़ने पर डट के मुकाबला भी करनी चाहिए. उन्होंने बताया कि चीन का आचरण एक बदमाश राष्ट्र के जैसा होता जा रहा है. अब समय आ गया है कि हम ईंट का जवाब पत्थर से देने की तैयारी करें. इससे पूर्व इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. विकास कुमार ने मुख्य वक्ता का परिचय कराया.

आनंद सोरेन ने क्षेत्र की समस्याओं से सीएम चंपाई को अवगत कराया

संवाददाता। चरही

मांडू विधानसभा के चुरचू प्रखंड क्षेत्र के समाजसेवी आनंद सोरेन ने सीएम चंपाई सोरेन से मुलाकात की. समाजसेवी ने सीएम को पुष्प गुच्छ देकर बधाई दी. साथ ही नवगठित सरकार के मंत्रिमंडल को चुरचू प्रखंड, हजारीबाग और मांडू विधानसभा क्षेत्र की जनता की ओर से बधाई दी.

आनंद सोरेन ने चुरचू, हजारीबाग और मांडू विधानसभा क्षेत्र की कई समस्याओं पर सीएम का ध्यान आकृष्ट कराया. इस पर सीएम चंपाई सोरेन ने आश्वस्त किया कि राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को पारदर्शी तरीके से धरातल पर उतारा जाएगा. उन्होंने कहा कि पूर्व सीएम हेमंत सोरेन द्वारा शुरू किये गये सभी विकास कार्यों को पूरा कराने के लिए नई सरकार प्रतिबद्ध है और इस दिशा में कार्य कर रही है.

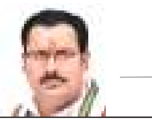

राशिफल
आचार्य प्रणव मिश्रा

मेष पैतृक संपत्ति में वृद्धि का योग है. अपनों से संबंध में सुधार होगा. साथ ही दिन का समय बहुत ही अनुकूल है. कोई छुटा कार्य पूरा कर लें, पर जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें. व्यापार-व्यवसाय लाभप्रद रहेगा. आय में निश्चिंतता रहेगी.

वृषभ सुबह से आय में बढ़ोतरी होगी. शेयर मार्केट में लाभ होगा. व्यापार लाभदायक रहेगा. पारिवारिक सहयोग मिलेगा. घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी. लेन-देन में सावधानी रखें. कोइ अपना हो तो जोखिम लिया जा सकता है.

मिथुन सुबह में खर्च को लेकर मन खिन्न होगा. शाम को अचानक लाभ होगा. सत्संग का लाभ मिलेगा. आत्मशांति रहेगी. यात्रा संभव है. व्यापार ठीक चलेगा. नौकरी में चैन रहेगा. दूसरों की जवाबदारी न लें. गणेश जी पर दूब अर्पण करें.

कर्क समय अनुकूल है. कोई शुभ कार्य होगा. किसी भी प्रकार के विवाद में न पड़ें. जोखिम व जमानत के कार्य टालें. व्यापार ठीक चलेगा. आय में निश्चितता रहेगी. शिवलिंग पर दूध अर्पण करें.

सिंह कार्य होगा और बड़ा लाभ का योग है. क्रोध पर नियंत्रण आवश्यक है. भाग्य और धन का लाभ होगा. नौकरी में मातहतों से अनबन हो सकती है. शारीरिक कष्ट संभव है. जल्दबाजी से हानि होगी. जोखिम व जमानत के कार्य टालें.

कन्या समय थोड़ा अनुकूल नहीं है. किसी वरिष्ठ व्यक्ति का सहयोग मिलेगा. भाग्य अनुकूल है. व्यापार-व्यवसाय में वृद्धि होगी. धन प्राप्ति सुगम होगी. शत्रुओं का पराभव होगा. मंदिर में झाड़ू का दान करें.

तुला सरकारी कार्य में बाधा उत्पन्न हो सकता है. पिता से मनमुटाव होगा. पार्टी व पिकनिक का आयोजन हो सकता है. नौकरी में कार्य की प्रशंसा होगी. जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा. घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी. इत्र दान करें.

वृश्चिक जीवनसाथी का सुख सहयोग मिलेगा. समय अनुकूल है. नौकरी में सहकर्मी साथ देंगे. ऐश्वर्य व आरामदायक साधनों पर व्यय होगा. जोखिम व जमानत के कार्य टालें. जल्दबाजी से बचें. हनुमानजी का पूजन ध्यान करें.

धनु आपके कार्य से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. घर-बाहर पूछ-परख रहेगी. लेन-देन में सावधानी रखें. अपरिचितों पर अंधविश्वास न करें. कारोबार ठीक चलेगा. भाग्य अनुकूल है. समय का लाभ लें. गायत्री मंत्र जाप करें.

मकर शिक्षा में बाधा उत्पन होगा. किसी बड़े काम को करने की योजना बनेगी. आत्मसम्मान बना रहेगा. व्यापार लाभदायक रहेगा. घर-परिवार में कोई मांगलिक कार्य का आयोजन हो सकता है. घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी.

कुंभ माता के स्वास्थ्य पर ध्यान दें. समय अनुकूल नहीं है. धन प्राप्ति सुगम होगी. समय अनुकूल है. जोखिम व जमानत के कार्य टालें. परिवार के साथ समय प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा. शनि को बल दें.

मीन अति आत्मविश्वास हानि का कारण होगा. बिना वजह का विवाद हो सकता है. दौड़धूप से स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है. आय बनी रहेगी. व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा. अन्न का दान करें. गुरु मंत्र जाप करें

झारखंड की वर्तमान सरकार दलित विरोधी: बबन पासवान

लातेहार। भाजपा के अनुसूचित जाति मोर्चा के जिला अध्यक्ष बबन पासवान ने कहा कि झारखंड की वर्तमान सरकार दलित विरोधी है. उनहोने कहा कि इस सरकार में दलित समुदाय का एक भी मंत्री नहीं है. जबकि झारखंड राज्य में अनुसूचित जातियों की संख्या 50 लाख से भी अधिक है. उन्होने आगे कहा कि जिस प्रकार लातेहार विधायक बैद्यनाथ राम का नाम सूची में रहने के बावजूद मंत्री पद की शपथ नहीं दिलायी गयी, यह सरकार के दोहरे चरित्र को उजागर करता है और दलित विरोधी मानसिकता को दर्शाता है. बबन पासवान अपने आवास में प्रेस से बात कर रहे थे. उन्होने कांग्रेस, राजद व झामुमो पर दलितों के नाम पर वोट बैंक की राजनीति करने का आरोप लगाया. कहा कि जब जरूरत होती है ये राजनीति दल दलितों के साथ खड़े नहीं होते हैं.

मुख्यमंत्री राज्य वृद्धावस्था पेंशन पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

चांडिल। नीमडीह प्रखंड कार्यालय के सभागार कक्ष में शनिवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री राज्य वृद्धावस्था पेंशन पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में आंगनबाड़ी सेविका सह बीएलओ, पंचायत सचिव व प्रखंडकर्मी उपस्थित थे. मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी ने मुख्यमंत्री राज्य वृद्धावस्था पेंशन की जानकारी देते हुए सभी लाभुकों तक योजना का लाभ पहुंचाने का निर्देश दिया. उन्होंने बताया कि जिन महिलाओं की आयु 50 से अधिक है और अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के पुरुषों का उम्र 50 वर्ष से अधिक है उन्हें चिन्हित कर योजना का लाभ देना है. प्रखंड विकास पदाधिकारी ने उन्हें चिन्हित करने के लिए मतदाता सूची को भी आधार बनाने की निर्देश दिया. इसके साथ ही सभी बीएलओ को योग्य लाभुकों का आवेदन लेना सुनिश्चित करने का निर्देश दिया. लाभुकों को अपना आवेदन के साथ आधार कार्ड, एकल बैंक पासबुक, वोटर आईडी और 2 फोटो देना होगा.

कई छात्रों और अभ्यर्थियों ने प्रदर्शन में भाग लिया, उच्चस्तरीय व निष्पक्ष जांच की मांग की, राज्यपाल को ज्ञापन सौंपा

पेपर लीक मामले में राजभवन के समक्ष आजसू ने किया प्रदर्शन

संवाददाता। रांची

अखिल झारखंड छात्र संघ (आजसू) ने जेएसएससी सीजीएल परीक्षा पेपर लीक मामले की सीबीआई जांच समेत अन्य मांगों को लेकर राजभवन के समक्ष एकदिवसीय प्रदर्शन किया. प्रदर्शन के बाद आजसू ने राज्यपाल को ज्ञापन सौंपा. राज्य के सभी जिले से आए आजसू के सैकड़ों सदस्यों के साथ कई छात्रों और अभ्यर्थियों ने भी इस प्रदर्शन में भाग लेकर मामले की निष्पक्ष जांच सीबीआई से कराने को लेकर अपनी आवाज बुलंद की.

आजसू के प्रदेश अध्यक्ष ओम वर्मा ने कहा कि आजसू छात्रों के हक, अधिकार और हित से जुड़े सभी विषयों को मुखरता से उठाती आई है. जेएसएससी सीजीएल पेपर लीक मामले को आजसू पार्टी के अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने विधानसभा के विशेष सत्र में रखा और राज्य के लाखों छात्रों के हित में पेपर लीक मामले की उच्चस्तरीय जांच की मांग की थी. उसके बाद सरकार ने आनन फानन में एसआईटी का गठन किया. आजसू के साथ-साथ राज्य के सभी छात्र इस एसआईटी से संतुष्ट नहीं हैं. इसलिए इसकी निष्पक्ष जांच सीबीआई से कराना आवश्यक है.

बता दें, सीबीआई जांच के साथ ही सीजीएल परीक्षा में हुई धांधली को लेकर विरोध कर रहे निर्दोष छात्रों पर हुई प्राथमिकी को अविलंब वापस लेने, झारखंड चयन आयोग के अध्यक्ष सहित सभी अधिकारियों को बर्खास्त करने और गलत तरीके से चयनित परीक्षा एजेंसी को काली सूची में डालने एवं झारखंड नकल कानून के तहत कानूनी कार्यवाही करने की मांग को लेकर आजसू ने आंदोलन किया. प्रदर्शन में आजसू पार्टी के प्रधान महासचिव राम चन्द्र सहिस, केंद्रीय मुख्य प्रवक्ता डॉ. देवशरण भगत, केंद्रीय प्रवक्ता सुधीर यादव, केंद्रीय महासचिव रविशंकर मौर्य समेत रांची विश्वविद्यालय अध्यक्ष अभिषेक शुक्ला, नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय अध्यक्ष अभिषेक राज, विनोबा भावे विश्वविद्यालय अध्यक्ष अनुराग भारद्वाज देवा महतो, कोल्हान विश्वविद्यालय अध्यक्ष हेमंत पाठक धर्मराज प्रधान, सिद्दो कान्हु विश्वविद्यालय अध्यक्ष निर्मल मंडल, सभी जिलाध्यक्ष छात्रसंघ जमाल गद्दी, दीपक दुबे समेत कई छात्र शामिल थे.

युवाओं का भविष्य खराब किया जा रहा है : विशाल

आजसू के प्रदेश महासचिव विशाल महतो ने कहा कि सरकार ने अपनी गलत नीति से राज्य के युवाओं के भविष्य को खराब किया है. राज्य के लाखों छात्रों को न्याय मिले, इसके लिए जेएसएससी सीजीएल पेपर लीक मामले को लेकर आजसू ने चरणबद्ध आंदोलन किया. इसके तहत 12 फरवरी को सभी कॉलेज/विश्वविद्यालय मुख्यालय पर हस्ताक्षर अभियान, 13 फरवरी की संध्या में मशाल जुलूस और प्रदर्शन, 15 फरवरी को सभी उपायुक्तों को सीबीआई जांच की मांग पर पत्र सौंपा. राजभवन के समक्ष एकदिवसीय प्रदर्शन का आयोजन किया गया.

2022 में डीएमएफटी फंड से 40 लाख रुपये की लागत से सड़क का हुआ था निर्माण

डेढ़ साल में सड़क पर दरार ही दरार

गोमिया से लौटकर रजनीश प्रसाद

- ग्रामीण भौंचक, पूछ रहे सवाल- जिम्मेवार कौन अफसर या ठेकेदार
- पुराने डीडीसी ने कहा-नए वाले से पूछिए, बीडीओ बोले- हमें न मालूम

बोकारो जिला के गोमिया प्रखंड की हजारी बस्ती में 2022 में डीएमएफटी फंड की 40 लाख की लागत से सड़क का निर्माण कराया गया था. सड़क बनने के साथ ही कहीं धंसने लगी, तो कहीं दरार पड़ने लगी. डेढ़ साल बाद ही सड़क पर कई जगह दरारें पड़ गई हैं. लगभग 1200 मीटर की सड़क बनी तो है, लेकिन बनते ही उसका दम घुटने लगा है. सड़क पर एक जगह को लगभग 20 मीटर यानी 60 फीट की दरार पड़ गयी है. इस सड़क से होकर गुजरनेवाले लोग नई-नई बनी सड़क में पड़ी दरार देख भौंचक हैं. वे जानना चाह रहे हैं कि आखिर सड़क का दम घुटने के लिए जिम्मेवार आकिर कौन है. सड़क निर्माण करानेवाला ठेकेदार या विभाग के अफसर-बाबू. डीएमएफटी फंड की राशि से सड़क बनी या बनवायी गयी, लेकिन इसकी मॉनिटरिंग की जिम्मेवारी आखिर किसकी थी.

गोरखवर मंदिर से बोकारो नदी तक बनी है सड़क : सड़क गोरखवर मंदिर से बोकारो नदी तक बनी है. इसकी लंबाई लगभग 1200 मीटर है. सड़क बनाने का ठेका रत्नेश श्रीवास्तव और किशोर ठाकुर को मिला था. आसपास के ग्रामीणों का कहना है कि ठेकेदारद्वय से डह उन्होंने सड़क की इस्टीमेट व डिजाइन दिखाने को कहा गया, तो उन दोनों ने दिखाने से इनकार कर दिया. ग्रामीणों से शुभम संदेश संवाददाता को बताया कि सड़क लगभग 40 लाख रुपये की लागत से बनायी गयी है. सड़क का निर्माण कार्य मार्च 2022 शुरू हुआ और सितंबर 2022 ही काम पूरा हो गया, साल भर बाद ही सड़क धंसने टूटने भी लगी. ग्रामीणों का कहना विभाग के अफसरों को घटिया सड़क निर्माण के बारे में मौखिक जानकारी दी गयी है, लेकिन सड़क में पड़ी दरार ठीक करने या कराने की पहल नहीं की जा रही है. ऐसे में तो सड़क की दरार बढ़ती जाएगी और देखते ही देखते गड्ढों में तब्दिल हो जाएगा.

गोमिया के बीडीओ बोले, जानकारी नहीं है

गोमिया के प्रखंड विकास पदाधिकारी महादेव महतो ने बताया कि सड़क पर पड़ी दरार केबारे में उन्हें किसी तरह की कोई जानकारी नहीं है. कहा–रुकिए इसके बारे में पता कराता हूं, फिर आपको बताउंगा. पता लगाउंगा कि सड़क में दरार कहां पड़ी है.

डीडीसी बोले, मेरा तबादला हो गया है

बोकारो के निवर्तमान डीडीसी कीर्तिश्री जी से शुभम संदेश संवाददाता ने जानना चाहा कि सड़क में दरार पड़ने के लिए जिम्मेदवार कौन है, तो उन्होंने कहा कि इसके बारे में उन्हें जानकारी नहीं है. कहा- मेरा तबादला हो गया है, नए डीडीसी से एक घंटा बाद पूछ लीजिएगा. कहा कि शुक्रवार को ही उनका तबादला हुआ है.

ठेकेदारों के अलग-अलग बोल

सड़क का निर्माण करानेवाले ठेकेदारों से जब शुभम संदेश संवाददाता ने पूछा कि सड़क तो बन गयी. लेकिन दरार भी पड़ने लगी है. आखिर इस सड़क की आयु कितनी होगी. कितने दिनों तक सड़क ठीक रह पाएगी. इस पर ठेकेदार रत्नेश श्रीवास्तव ने कहा कि ये उन्हें मालूम नहीं है. सड़क बना दी, देखरेख करने की जिम्मेवारी एक साल ही रहती है. आगे का मैं नहीं जानता. दूसरे ठेकेदार किशोर ठाकुर ने तो दो टूक कह दिया- इस सड़क का काम मैंने नहीं कराया है, तो मैं क्या जानूं.

पुलिस ने मवेशी लदा पिकअप वैन जब्त किया

डुमरी। डुमरी पुलिस ने शुक्रवार की रात जीटी रोड पर कुलगो टॉल प्लाजा के समीप मवेशी लदा एक पिकअप वैन पकड़ा. मौके से पुलिस ने वैन से पांच मवेशियों को बरामद किया. इस संबंध में पुलिस ने एक मामला दर्ज कर मौके से पकड़े गये चालक को गिरफ्तार कर शनिवार को जेल भेज दिया. इस संबंध में बताया जाता है कि पुलिस को सूचना मिली थी कि तस्करी के लिए पिकअप वैन में मवेशियों को लाद कर बिहार से बंगाल की ओर ले जाया जा रहा है. सूचना पर थाना प्रभारी पवन कुमार पुलिस बल के साथ पिकअप वैन की जब जांच की तो उसमें पांच बैल लदा हुआ था. जब मवेशियों के संबंध कागजात की मांग की गयी तो चालक कोई भी कागजात प्रस्तुत नहीं कर सका. इसके बाद पुलिस ने चालक नावाडीह के गुरूटांड़ निवासी मोती महतो को हिरासत में ले लिया.

चार दिनों से लापता युवक का मिला शव

गढ़वा। चार दिनों से लापता युवक बीरबल भुईया का शव शनिवार को रंका पुलिस ने खपरो पंचायत मुख्यालय के हाजी मोइनुद्दीन अंसारी के अरहर के खेत में कुएं से बरामद किया. पुलिस ने बताया कि बिगत चार दिनों से घर के लोग युवक की खोजबीन कर रहे थे. इस संबंध में जानकारी देते हुए यहां के मुखिया प्रतिनिधि जफर अंसारी ने बताया कि हाजी मोइनुद्दीन अंसारी के सूचना के आधार पर रंका थाना प्रभारी को इस बाबत जानकारी दी गई जहां पर पुलिस मृतक के शौक को कुएं से निकालकर पोस्टमार्टम हेतु सदर अस्पताल गढ़वा के लिए भेज दिया गया है.

मुख्यमंत्री आमंत्रण फुटबॉल के तहत 270 खिलाड़ियों को मिली खेल सामग्री

आप खेल पर ध्यान दो, बेहतर प्लेटफॉर्म हम देंगे : सुदेश महतो

संवाददाता। सिल्ली/मुरी

मुख्यमंत्री आमंत्रण फुटबॉल प्रतियोगिता के तहत शनिवार को सिल्ली स्टेडियम परिसर में प्रखंड के 16 पंचायत के कुल 240 बालक एवं 30 बालिका फुटबॉल खिलाड़ियों के बीच खेल सामग्री का वितरण किया गया. मुख्य अतिथि विधायक सुदेश कुमार महतो, जिला खेल पदाधिकारी शैलेन्द्र सिंह, जिप उपाध्यक्ष वीणा चौधरी, प्रमुख जितेंद्र बड़ाइक, बीडीओ रेणु बाला, पूर्व उप प्रमुख शिला साहू समेत पंचायत प्रतिनिधियों ने खिलाड़ियों को खेल सामग्री दिया, जिसमें बूट, मोजा, जर्सी, गार्ड आदि सामग्री शामिल है.

विधायक सुदेश कुमार महतो ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल या शिक्षा के क्षेत्र में आप सभी परिश्रम और मेहनत करो, प्लेटफॉर्म देना मेरा काम है. ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारने तथा एक प्लेटफॉर्म तैयार कर उन्हें राज्य एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी बनाना इसके लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि मेरा प्रयास है कि बेहतर शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को खेल में बेहतर प्लेटफॉर्म दें सके, जिससे वह खेल के माध्यम से भी अपना करियर बना सकें.

जिला खेल पदाधिकारी शैलेन्द्र सिंह ने कहा कि राज्य में विधायक द्वारा यह पहला ऐसा प्रयास हो रहा है कि ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों को खेल के लिए बेहतर प्लेटफॉर्म दिया जा रहा है, जो आने वाले दिनों के लिए उदाहरण बनेगा. विधानसभा में उनके द्वारा किए गए कार्य काफी सराहनीय है. मौके पर गूंज परिवार के संयोजक जयपाल सिंह, अध्यक्ष सुनील सिंह, पूर्व जिप सदस्य गौतम कृष्ण साहू, कोच प्रकाश राम, शिशिर महतो, मुखिया सीमा कुमारी गोंझू , शर्मिला कुमारी, सोमरा मांझी, चंचल भोक्ता, सोमरी देवी समेत पंचायत के खेल प्रभारी समेत अन्य लोग मौजूद थे.

सामुदायिक भवन को रिक्रिएशन सेंटर के तौर पर किया जा रहा है विकसित

बोकारो। बोकारो स्टील प्लांट द्वारा संचालित सेक्टर 3 सामुदायिक भवन को अपग्रेड कर अब इसे बीएसएल कर्मियों के लिए नए लुक के साथ स्टील क्लब एवं रिक्रियेशन सेंटर के तौर पर विकसित किया जा रहा है. नई सुविधाओं से सुसज्जित स्टील क्लब का 17 फरवरी को अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीरेंद्र कुमार तिवारी द्वारा उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर अधिशासी निदेशक (वित्त एवं लेखा) सुरेश रंगानी, अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) राजन प्रसाद, अधिशासी निदेशक (माइंस) जयदीप दासगुप्ता, मुख्य महाप्रबंधक (कार्मिक) हरि मोहन झा, मुख्य महाप्रबंधक (नगर प्रशासन) कुंदन कुमार तथा अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे. नए रूप में परिवर्तित स्टील क्लब एवं रिक्रियेशन सेंटर के भू-तल पर पहले से अवस्थित स्टेज के साथ एक बड़े मल्टी-पर्पस हॉल का जीर्णोद्वार किया गया. जिसका उपयोग इंडोर गेम्स के साथ अन्य कार्यक्रमों के लिए भी किया जा सकेगा. इसके अलावा भूतल में ही टेबल टेनिस, चेस, कैरम जैसे इनडोर गेम्स के लिए अलग अलग कमरे, एक रीडिंग रूम जिसमें पुस्तकें, अखबार व मैगज़ीन पढ़ने की सुविधा, एक फिटनेस सेंटर, एक योगा सेंटर जैसी नई सुविधाएं जोड़ी गई हैं. स्टील क्लब के प्रथम तल पर भी उपलब्ध चार कमरों के साथ एक बड़े हॉल का जीर्णोद्वार किया गया है, जिसका उपयोग अलग अलग कार्यक्रमों के लिए किया जा सकेगा. स्टील क्लब एवं रिक्रियेशन सेंटर परिसर में दो बास्केट बॉल कोर्ट की भी सुविधा प्रदान की गई है.

पुलिस ने दो दिनों में हत्या के आरोपी को धर दबोचा

संवाददाता। लातेहार

गत 14 फरवरी की रात्रि सदर थाना के डेमू ग्राम में उपेंद्र सिंह उर्फ गाडून (25) की हत्या कर दी गयी थी. हत्यारे ने लोहे की रॉड एवं टांगी से वार कर उसकी हत्या की थी. परिजनों के आवेदन पर इस संबंध में लातेहार थाना 15 फरवरी को अज्ञात अभियुक्तों के विरुद्ध मामला दर्ज किया गया था. मामला दर्ज होने के बाद पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन के निर्देश पर मामले के उद्भेदन के लिए पुलिस अधीक्षक ललित मीणा एवं एसडीपीओ अरविंद कुमार के नेतृत्व में एक टीम गठित की गयी. अधिकारीद्वय ने सदर थाना में आयोजित प्रेसवार्ता में बताया कि टीम ने छापेमारी कर एक संदिग्ध अभियुक्त संतोष कुमार, पिता डिबरु उरावं, ग्राम डेमू को पूछताछ के लिए थाना लाया गया. सख्ती से पूछताछ करने पर उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया.

पेज 01 का शेष

टेंशन में सरकार

किसे विधायक के टारगेट पर कौन मंत्री : डॉ इरफान अंसारी के मुताबिक चारों मंत्रियों का परफारमेंस बेहद निराशाजनक रहा है. इसका खामियाजा क्षेत्र में विधायकों को उठाना पड़ रहा है. सरकार में होते हुए भी उन्हीं की पार्टी के मंत्री उनकी बातें नहीं सुनते हैं. इरफान के टारगेट पर आलमगीर आलम हैं. वजह यह है कि आलमगीर आलम का नाम कटने पर ही उन्हें मौका मिल सकता है.

विधायक अंबा के टारगेट में बन्ना गुप्ता हैं. वैश्य और ओबीसी समुदाय की प्रतिनिधित्व का दावेदारी कर अपना मंत्री पद के जुगाड़ में दिल्ली से लेकर जयराम रमेश तक पैरवी की, लेकिन बात नहीं बन सकी.

दीपि का पांडेय सिंह के टारगेट में बादल पत्रलेख हैं. उनके स्थान में दीपिका खुद को फिट पाती हैं. इसलिए बादल का परफॉर्मेंस खराब होने की बात प्रदेश प्रभारी मीर से की थी.

राजेश कच्छप, कोंगाड़ी, भूषण बाड़ा के निशाने पर रामेश्वर : राजेश कच्छप, नमन विल्सन कोंगाड़ी, भूषण बाड़ा और शिल्पी नेहा तिर्की के निशाने पर डॉ रामेश्वर उरांव हैं. सभी उनका परपापमेंस खराब रहने की बात कह रहे हैं. इनकी दलील के अनुसार सरना आदिवासी को मंत्रालय में जगह मिली, तो अब ईसाई प्रतिनिधि को मौका मिलना चाहिए था.

12 वे मंत्री पद पर अनूप सिंह की नजर : कांगेस पार्टी में भी जातीय समीकरण के आधार पर मंत्री बनाया गया है, लेकिन क्षत्रिय समाज से कोई मंत्री नहीं है. ऐसे कांग्रेस की नर्सरी से निकाले अनूप सिंह की नजर 12वें मंत्री पद पर है.

सीएम चंपाई सोरेन कांग्रेस अध्यक्ष के साथ दिल्ली गए : रांची। मुख्यमंत्री चंपई सोरेन शनिवार को दिल्ली रवाना हुए.उनके साथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर भी दिल्ली गए हैं. बताया जा रहा है कि चंपाई सोरेन दिल्ली में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से मुलाकात करेंगे और राज्य में चल रही राजनीतिक गतिविधियों की जानकारी देंगे. मंत्रिमंडल को लेकर कांग्रेस विधायकों की नाराजगी को लेकर भी बातचीत होगी.

घोषणा झारखंड प्रदेश मोमिन कांफ्रेंस की राज्य कार्यकारणी समिति घोषित, अनवार अहमद बने कार्यकारी अध्यक्ष

आबिद अली बनाये गये मोमिन कांफ्रेंस के प्रदेश अध्यक्ष

संवाददाता। रांची

झारखंड प्रदेश मोमिन कांफ्रेंस राज्य कार्यकारणी समिति की घोषणा कर दी गई है. ऑल इंडिया मोमिन कांफ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष फिरोज अहमद अंसारी के अनुमोदन के उपरांत प्रदेश अध्यक्ष आबिद अली अंसारी ने शनिवार को झारखंड प्रदेश मोमिन कांफ्रेंस की नई राज्य कार्यकारिणी समिति का घोषणा की. नई कार्यकारिणी समिति में आबिद अली अंसारी को पुनः अध्यक्ष बनाया गया है. वहीं, अनवार अहमद अंसारी कार्यकारी अध्यक्ष, उपाध्यक्ष मंजूर अंसारी, अब्दुल करीम अंसारी प्रधान महासचिव, मनुव्वर हुसैन कोषाध्यक्ष, नसीम अंसारी , शाहबाज अहमद, मो इमरान प्रवक्ता बने.

महासचिव मो जैनुल अंसारी, प्रोफेसर मंजूर अंसारी, इकबाल हुसैन, गुलरेज अख्तर, मुफ्ती अब्दुल्लाह अजहर कासमी ,सलीम रजा , मोहसिन अंसारी, गुलाम यजदानी, इश्तियाक अहमद, मो सगीर अंसारी ,डॉ नबी अख्तर, इस्लाम अंसारी, जहांगीर अंसारी, सलाम अंसारी, सुभान मियां ,अरशदुल कादरी, अब्दुल रब अख्तर, अनवर अहमद अंसारी, मंजर इमाम, रिजवान अंसारी ,नजीर अंसारी, शकील अंसारी, फिरोज अहमद अंसारी, गुलजार अंसारी, नवाज हुसैन, जावेद इकबाल, गुलाम मुस्तफा अंसारी, सरफराज आलम, मुजम्मिल अंसारी, अयूब अंसारी , महमूद अली , शमीम अंसारी , कुदुस अंसारी व हिफजुर रहमान बनाये गये. सचिव अत्ताउल्लाह अंसारी, मुजाहिर अंसारी, जफर इमाम, तस्दीक अंसारी, अब्दुल कुदुस अंसारी ,कमरुद्दीन अंसारी, अख्तर हुसैन ,फारूक अनवर, ऐ के सुल्तान, मो वलीउल्लाह, यासीन अंसारी , बैबुल अंसारी , जावेद अंसारी, तनवीर आलम, नजरुल हक , गुलाम जिलानी, रहमतुल्लाह अंसारी, कलाम अंसारी, मो जुल्फिकार, जियाउद्दीन अंसारी, महबूब आलम , कुरैश अंसारी, जियाउर अंसारी, जावेद अहमद अंसारी, सलाम अंसारी,असलम अंसारी, मास्टर सिद्दीक अंसारी, मतीउर्रहमान, रशीद अंसारी, साबिर अंसारी, अब्दुल कयूम कबीर अंसारी, आलम अंसारी, मो जमील अंसारी , डॉ रबुल रब्बानी, असगर अंसारी, फरीद अंसारी, फैजल हक अंसारी, साबिर हुसैन, फिरोज अहमद, अशफाक अंसारी, तसव्वर अंसारी, अख्तर हुसैन,शरीफ अंसारी, नसर इमाम, तारिक रजा, शोएब अहमद, मौलाना रकीब रहमानी, जियाउर रहमान, मो खालिद , अख्तर अंसारी व मंसूर अंसारी बने.

कार्यकारिणी समिति में शमशाद अंसारी, अब्दुल्लाह अंसारी, आबिद अंसारी, सनाउल्लाह अंसारी, इसराफिल अंसारी, इमारत हुसैन, आशिक अंसारी, मौलाना साबिर हुसैन अंसारी, असगर अंसारी, शरीफ अंसारी, मौलाना इनायत करीम, प्रो जावेद अंसारी, हाजी सुल्तान अंसारी, मुमताज अली, ताजुद्दीन अंसारी, युनुस अंसारी, करीम अंसारी, सवारत हुसैन, समसूल होदा, शमसुद्दीन अंसारी, युनुस अंसारी, इसराइल अंसारी, ओबेदुल्लाह हक अंसारी, अताउल्लाह अंसारी, मिसबाउद्दीन अंसारी व मो निसार अंसारी के नाम शामिल हैं. प्रदेश अध्यक्ष आबिद अली ने कहा कि झारखंड से राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारी व सदस्यगण एवं सभी जिला अध्यक्ष राज्य कार्यकारिणी के पदेन सदस्य होंगे.

जीत पाया नहीं तो भी हार मानी नहीं!

कविता कलम
डॉ. विनय कुमार पाण्डेय

एक कहावत है-मन के हारे हार है, मन के जीते जीत. यह जीवन तो एक रणक्षेत्र है, जहां हर पल हर व्यक्ति को जीने के लिए संघर्ष करना पड़ता है. संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिल सकता, जिसको निरंतर संघर्ष करने के बावजूद सबकुछ मिल गया हो. इस प्रकार कि उसे अब औरकिसी चीज की अवश्यकता नहीं हो.किसी क्या खूब कहा है-हर किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता,किसी को जमीं तो किसी को आसमां नहीं मिलता.जिन अरबपतियों को हम बहुत सुखी और समृद्ध मानते हैं, उन्हें भी अपने जीवन से संतुष्टि नहीं है. उन्हें भी ऐसा लगता है उन्हें वह मंजिल नहीं प्राप्त हो सकी,जिसकी चाहत में अबतक वे झंझावातों से जूझते आ रहे हैं. इस संदर्भ में **मोहन त्रिपाठी** की यह कविता प्रासंगिक हो जाती है-

राम से सीखो तो रावण बला है!
हर-पग मुसीबतों से जीवन ढला है,
चांद में शीतलता तो सूरज जला है,
कर्म कर अपने इसी में भला है!
कर्म में रमना असली सम्मान है
जीवन संग्राम है!
जीवन युद्ध है श्रीकृष्ण बुद्धि है।
कर्म अर्जुन तो वासना कौरव है!
रण मे जीतना खुद का गौरव है!
बेबस लाचारी की कोई न पहचान है!
जीवन संग्राम है, रण का मैदान है!

कवि की यह उक्ति अत्यंत सटीक है-जीवन संग्राम है रण का मैदान है.जिस सड़क में मोड़ नहीं हो उस सड़क पर चलने में मजा नहीं है, क्योंकि तब एकरसता आ जाती है. हालांकि यह असंभव है, लेकिन यदि किसी के जीवन में कोई भी समस्या न हो, तो उस जीवन का कोई अर्थ नहीं है. हम जीवन की जिस सड़क पर चल रहे होते हैं, उसमें पड़नेवाले मोड़ हमें आगाह करते हैं, चढ़ाई और ढालान दोनों ही हमें सावधानी बरतने की सीख देते हैं. जीवन एक संग्राम है, जहां कभी जीत हो जाती है तो कभी हार भी, लेकिन अंततः जीत उसी की होती है, जो हार कर भी कभी हार नहीं मानता और कवि अटल बिहारी वाजपेयी के इस मंत्र से अपने आपको और मजबूत कर लेता है-हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा. इस क्रम में दुमका के कवि **तेजनारायण राय** की इस कविता का स्मरण होता है-

मैंने हार कर भी हार नहीं मानी
हारा कभी, पर हौसले मेरे हारे नहीं
हर हार पर गिरा मैं जरूर
पर गिरकर पड़ा रहा नहीं.
मेरी स्थिति भांपकर सबने कहा
हार गया, तू हार गया
लेकिन प्रण पक्का कर मैं
उठा धूल झाड़, छलांग मार गया.
हर हार पर मुझे हार तो मिली
पर हार में भी एक सीख मिली
पांव धरा पर मजबूत कर मैं
डेग-डेग बढ़ता चला
मेरा हौसला इतना बुलंद था
लड़खड़ाकर भी मैं तेज चला
लहूलुहान शरीर में दर्द इतना था
दर्द सहकर भी मैं बढ़ता चला
कितनी आंधी कितने आये तूफान
पर किसी से मैं डरा नहीं
मंजिल जो पाना था मुझे
इसलिए किसी की मार से मरा नहीं.

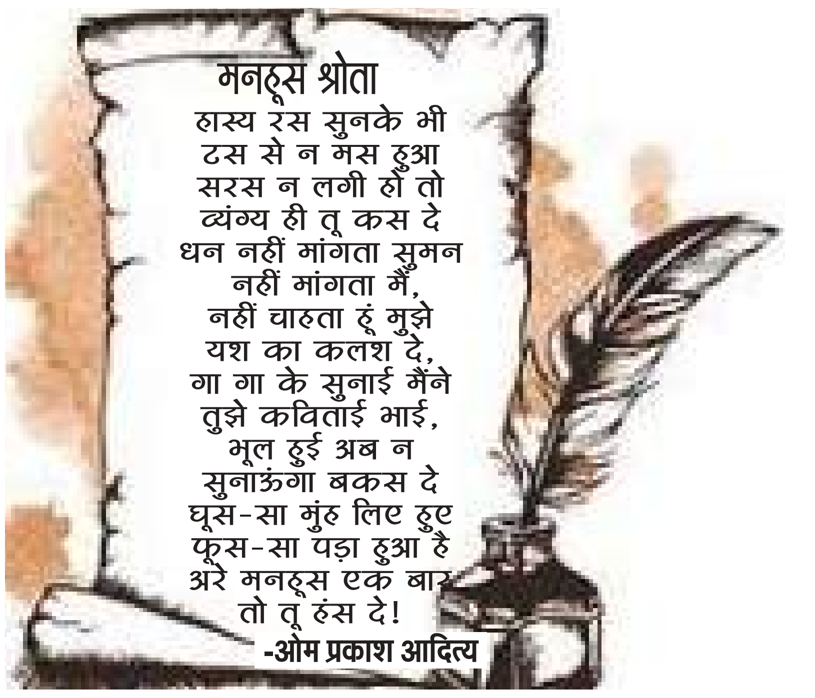

कवि तेज नारायण दुमका के कुल्हडिया मध्यविद्यालय के अध्यापक हैं. इनकी यह रचना उनके लिए प्रेरणा का स्रोत है, जिनके पांव विपरीत परिस्थितियों में डगमगा उठे हैं. व्यक्ति जब साहस के साथ खड़ा हो जाता है तो भाग्य और भगवान दोनों उसकी सहायता के लिए पूरी शक्ति के साथ खड़े हो जाते हैं. मनुष्य का काम प्रयास करना है, फल तो ऊपरवाले के हाथ में है, फिर भी दिनकर जी के शब्दों में मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है. जोर लगा कर पत्थर को बनाने का उदाहरण देखना हो तो झारखंड की उभरती कवयित्री **जसिंता केरकेट्टा** को देखना होगा, जिसकी साहित्य की विभिन्न विधाओं में दर्जन भर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं. उसके शब्दों में अद्भुत अभिव्यक्ति क्षमता है. उदाहरण के लिए उसकी इस कविता पर नजर डाली जा सकती है-

मां
एक बोझा लकड़ी के लिए
क्यों दिन भर जंगल छानती,
पहाड़ लांघती, देर शाम घर लौटती हो?
मां कहती है जंगल छानती,
पहाड़ लांघती, दिन भर भटकती हूं
सिर्फ़ सूखी लकड़ियों के लिए.
कहीं काट न दूं कोई ज़िंदा पेड़!

आश्चर्य होता है कि इतनी कम उम्र में यह कविता, कहानी, रिपोर्ताज, शब्द चित्र आदि विधाओं में पारंगत कैसे हो गयी.जिसे अपनी मातृभाषा पर गर्व है. मातृभाषा की मौत की बात हो तो कितनी हृदय विदारक है, कोई भी सहृदय व्यक्ति समझ सकता है. मातृभाषा की मौत शीर्षक कविता में उसकी यही व्यथा अभिव्यक्ति पा रही है.

मां के मुंह में ही मातृभाषा को क़ैद कर दिया गया
और बच्चे उसकी रिहाई की मांग करते-करते बड़े हो गए.
मातृभाषा ख़ुद नहीं मरी थी उसे मारा गया था
पर, मां यह कभी न जान सकी.
रोटियों के सपने दिखाने वाली संभावनाओं के आगे
अपने बच्चों के लिए उसने भींच लिए थे अपने दांत
और उन निवालों के सपनों के नीचे दब गई थी मातृभाषा.
मां को लगता है आज भी एक दुर्घटना थी मातृभाषा की मौत.

जसिंता जी मेधावी साहित्यकार हैं और उनसे हिंदी साहित्य को बहुत आशा है. विश्वास है कि ये उस आशा को अवश्य ही पूरा करेंगी. इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं.

विद्यार्थी जीवन से चलकर पत्रकारिता के पड़ाव पर कदम रखते हुए साहित्य के धरातल पर मजबूती के साथ पांव जमानेवाली जसिंता खाई खंदक से भरी जमीन पर वीरांगना की भांति चलती रही हैं. इन्हीं की भांति जमशेदपुर के कवि **नरेश अग्रवाल** भी अपना उदाहरण देकर समस्याओं और संघर्ष से विचलित युवा वर्ग को इस प्रकार प्रेरणा दे रहे हैं-

सरल मार्गों का अनुसरण कब किया मैंने
खाई- खन्दक से भरी जमीन पर
योद्धा बन कर गुज़रा हूं मैं धूप में तपकर
अनगिनत रूपों में ढला हूं मैं
वक्त ने सौंपे जो भी काम
हंसते हुए पूरा किया उन्हें
कभी थका नही पहाड़ों पर चढ़ते हुए
लोहा बन गया हूं मैं झेलते- झेलते.
मैं अपने छोटे-छोटे कदमों से कैसे नाप सकूंगा
तेरी इस सर्वोपरि विशालता को?
मेरी आंखों की रोशनी दूर-दूर तक भटकती है तेरी खोज में
और हर रात हारकर वापस लौट आती है.
मेरे कान अभी कच्चे हैं
वे तेरे मीठे स्वर एवं कोलाहल में विभेद नहीं कर पाते.
मेरा मन अतिशय भौतिकता में
लिप्त होकर कठोर हो गया है,
वह तेरी फूलों जैसी कोमलता को
आलिंगन करने में असमर्थ है.
मुझे थोड़ा सा वक्त दे
अपने आप को तेरे काबिल बनाने के लिए.

नरेश जी की यह रचना आध्यात्मिक प्रेरणा से परिपूर्ण है, जो राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में युवाओं को प्रोत्साहित करती है-नर हो न निराश करो मन को, कुछ काम करो, कुछ काम करो. यह जीवन है किस अर्थ अहो, समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो, कुछ तो उपयुक्त करो तन को, नर हो न निराश करो मन को. इन्हीं शब्दों के साथ दीजिए आज्ञा. जय हिंद! जय झारखंड!!

भारतीय लोकतंत्र में लोक की महत्ता

चौराहा
प्रमोद कुमार झा

बचपन से हम सबों ने किताबों में पढ़ा था कि विश्व में सबसे पहले लोकतंत्र का प्रारंभ भारत में ही हुआ था. समय गुजरता गया और धीरे धीरे लगने लगा कि बचपन में पढ़ी सारी बातें सिर्फ किताबी होती हैं. लिच्छवि गणतंत्र की सुंदर कहानियां अच्छी लगती थीं, पर प्रायः अब मात्र कहानियां ही रह गयी हैं. कहते हैं दुनिया भर में लोकतंत्र की शिक्षा और प्रेरणा भारत से ही मिली थी. इसे विडंबना ही कहिए कि दुनिया में अधिकांश लोकतंत्र भारत से बेहतर ढंग से कार्य कर रहा है. क्या आपने इंग्लैंड, अमेरिका, पाकिस्तान, जर्मनी, फ्रांस, इटली इत्यादि देशों में राजनीतिज्ञों को पार्टियां बदलते सुना है? कोई व्यक्ति अपनी पसंद से और सोच के अनुसार किसी पार्टी की विचारधारा से संतुष्ट होकर उसका सदस्य बनता है. और फिर चाहे जैसी भी परिस्थिति हो वह उस राजनीतिक दल का सदस्य तबतक बना रहता है, जब तक वह सार्वजनिक जीवन में रहता है! अपने सम्पूर्ण राजनैतिक जीवन में वह अपने राजनीतिक दल को छोड़कर दूसरे किसी राजनैतिक विचारधारा से जुड़ने का वह सोच भी नहीं सकता! उसी तरह अपराधी, सजायाफ्ता होने पर कोई भी राजनैतिक पार्टी उसे अपना उम्मीदवार नहीं बनाता है. आपको विश्व में इतना अधिक पारिवारिक सत्ता का लोकतंत्र भी शायद कहीं नहीं न मिलेगा! देश के लगभग सौ परिवार भारतीय लोकतंत्र के संचालक हैं! आज़ादी के बाद ₹स्वतंत्रता आंदोलन में योगदानकर्ता₹ के रूप में आम लोगों ने उन्हें अपना जनप्रतिनिधि चुना. कालांतर में वह लोकसभा, राज्यसभा, विधान सभा, विधान परिषद की सीट उनकी 'खानदानी' सीट बन गयी. उनका भाई, बहन बेटा, बेटी, बहू, पोता, पोती, नाती, नतनी, परपोता, परपोती , परनाती, परनतनी इत्यादि सभी पार्टियों द्वारा वहां उम्मीदवार बनाये गए और अक्सर जीतते रहे! ये लोकतंत्रीय व्यवस्था पुरानी जमींदारी व्यवस्था की तरह बिल्कुल खानदानी मिल्कियत बन गयी! इस राजनीतिक पार्टी बदलने के खेल से भारत की अब कोई भी पार्टी बची नहीं है. प्रायः दस पंद्रह प्रतिशत राजनीतिज्ञ ही होंगे, जिन्होंने अपनी राजीनीतिक पार्टी में परिवर्तन नहीं किया होगा! सबसे बड़ा विश्वासघात तो मतदाताओं के साथ होता है, क्योंकि किसी पार्टी के उम्मीदवार को अपनी पसंद से वोट देता है, पर चुने जाने के बाद मे मंत्री पद या पैसे के प्रलोभन में वह अपना पुराना दल छोड़कर सत्ताधारी दल का सदस्य बन जाता है. इस दल-बदल और निर्वाचित प्रतिनिधियों के खरीद फरोख्त के कारण ही किसी भी सरकार बनने के पहले निर्वाचित प्रतिनिधियों को निर्लज्जता पूर्वक अपहृत करने, डराने, धमकाने, बाड़े में बंद करने, हवाई जहाज से अज्ञात स्थान पर ले जाकर रखने और पूरे कुनबे को किसी पंच सितारा होटल में कैद करने की परंपरा चल निकली है. क्या किसी के द्वारा यह जांच आज तक की गई कि इस प्रक्रिया में जो हज़ारों करोड़ रुपये खर्च होते हैं, उसका भुगतान कौन करता है? या कि वह पैसा कहां से आता है? हमारे संविधान में तो इतने परिवर्तन हो चुके हैं कि मूल प्रारूप अब लोगों को प्रायः याद भी न हो! भारतीय मतदाता भी कुछ हद तक इस बुरी स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं। मतदान से एक दिन पूर्व संध्याकाल में पचास से लेकर हज़ार रूपये में अपने मत का सौदा इसमें सबसे बड़ा कारण है. उम्मीदवार की योग्यता से अधिक उसकी जाति, धर्म, उपजाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र के आधार पर आम मतदाता निर्णय लेता है. क्या ऐसे मतदाता को शिकायत करने का कोई नैतिक अधिकार है? पर लोकतंत्र की रक्षा के लिए आवश्यक है कि किसी एक दल से चुनकर आने के बाद उसे दल छोड़ने पर न ही उसकी बर्तमान सदस्यता समाप्त हो, बल्कि उसे अगले दस वर्षों तक किसी भी चुनाव में उम्मीदवार बनने से वंचित कर दिया जाय! सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल के लिए आवश्यक हो कि किसी परिवार के एक सदस्य के निर्वाचित होने के बाद उसके परिवार के किसी सदस्य को दल का उम्मीदवार नहीं बनाएं! भारतीय लोकतंत्र को इस पारिवारिक मकड़जाल से निकलना ही होगा. तभी इस राजतंत्रीय लोकतंत्र से मुक्ति मिलेगी! आप क्या सोचते हैं?

शिव की तपोस्थली : अमरकंटक

यायावर
डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय

बात 2001 की है. अमर कंटक का नाम तो बहुत पहले सुन रखा था और यह भूगोल की किताबों में यह पढ़ा था कि नर्मदा और सोन नदियां अमर कंटक से ही निकली है, लेकिन इसे देखने का सौभाग्य 2001 में मिला. अमरकंटक में स्थापित आदिवासी विश्वविद्यालय में एक साक्षात्कार के बहाने वहां जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. तपस्विनी एक्सप्रेस से रांची से राउरकेला और वहां से गीतांजलि मेल से बिलासपुर और वहां से ट्रेन द्वारा पिंड्रा रोड स्टेशन से उतर कर टैक्सी से अमरकंटक पहुंचा. विश्वविद्यालय के कार्य क्रम को संपन्न कर एक दिन रुक गया और दूसरे दिन धार्मिक और भौगोलिक स्थलों का भ्रमण किया.

अमरकंटक देवाधिदेव महादेव की तपोस्थली है. अमरकंटक तीर्थ पूर्व में मध्य प्रदेश (संप्रति छत्तीसगढ़) के अनूपपुर जिले में सघन वनों के मध्य स्थित छोटा सा सुंदर दिव्य तीर्थ स्थल है. यहां पर्यटकों को विशेष प्रकार की धार्मिक एवं आध्यात्मिक अनुभूति होती है. अमरकंटक पौराणिक रहस्यों से भरी दिव्य तपोभूमि है. किंवदंती है कि यहां ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं अनेक देवी देवताओं और ऋषि मुनियों ने तपकर मनोवांछित वरदान प्राप्त किया है. पौराणिक कथानुसार जब देव और दानवों ने समवेत रूप से सागर मंथन किया था तो 14 रत्न निकले थे-

श्रीमणि, रंभा, वारुणी, अमिय,शंख, गजराज.
कल्पतरु, शशि, धेनु, धनु, धनवंतरी, विष, बाज.

देव दानवों के समवेत आग्रह पर शिव ने विषपान कर जगत का कल्याण तो किया, लेकिन विष के प्रभाव से उनका कंठ नीला हो गया, इसीलिए शंकर का एक नाम नीलकंठ पड़ा. विष के प्रभाव से विक्षिप्त हो शंकर इसी स्थान पर आकर वे ध्यान मग्न हो गये और शांति को प्राप्त किया. विष को निष्प्रभावी करने के कारण वे अमर हो गये और वनों से आच्छादित होने के कारण यह स्थान कंटक कहलाया. पुराणों से प्राप्त कथानुसार ध्यान मग्न शंकर जी के कंठ से श्री नर्मदा जी श्वेद- धारा के रूप में प्रकट हुई और कलयुग के पापों को नाश करने के लिए श्री नर्मदा जी निरंतर प्रवाहित हो रही हैं. अमरकंटक ही सोन नदी का भी उद्गम स्थान है, जो छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, झारखंड और बिहार के एक बड़े भूभाग को सिंचित करते हुए अंत में कोइलवर के पास गंगा में जा मिलती है.

भौगोलिक स्थिति के अंतर्गत 24 डिग्री से 44 डिग्री अक्षांश पर तथा 54 डिग्री से 81 डिग्री देशांश पर स्थित है. समुद्र की सतह से अमरकंटक की ऊंचाई लगभग 1070.70 मीटर है. यहां सभी ऋतुओं में मौसम सुहाना और मनोरम रहता है. अमरकंटक ऐसा पर्यटन क्षेत्र है, जो प्रत्येक मौसम में भ्रमण हेतु खुला रहता है. यहां कोई विशेष बोली के लोग नहीं, अपितु हिंदी, बघेली, बुंदेली और छत्तीसगढ़ी आदि भाषा के बोलने वाले लोग रहते हैं. अमरकंटक के महत्वपूर्ण पर्व (मेला) हैं-महाशिवरात्रि, वैशाख पूर्णिमा और नर्मदा जयंती. भौगोलिक दृष्टि से मैकल पर्वत एक शिव लिंग की भांति है, जिसको सतपुड़ा तथा विंध्य पर्वत चारों ओर से घेर कर शिव लिंग का रूप प्रस्तुत करते हैं और नर्मदा शिव लिंग से होकर बहती हुई धारा के समान दिखाई देती है. पौराणिक मान्यता है कि राम भक्त शबरी की जन्मस्थली अमरकंटक ही है. यहां उसका मंदिर भी है. इस रमणीक, प्राकृतिक ,धार्मिक और सांस्कृतिक तपोभूमि को देखकर मन प्रसन्न हो गया और देवाधिदेव महादेव के दर्शन से मन को अपार शांति मिली और जग कल्याण हेतु सहसा महाकवि तुलसी की पंक्ति याद आ गईः-

आशुतोष तुम औघड़ दानी. आरती हरहु दीन मम जानी.

अबकी बारी चुटियाधारी

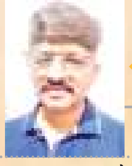

नश्तर
सुधीर राघव

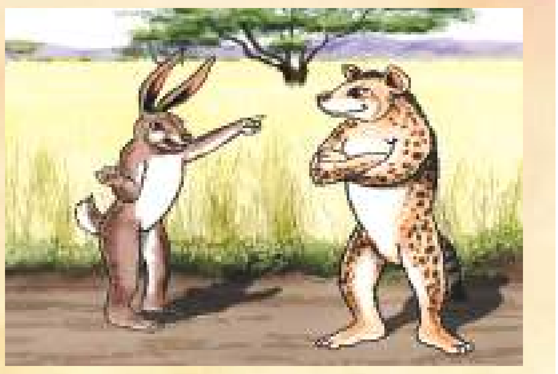

सबसे बड़े मुनाफाखोर सेठ दुलीचंद सुनामी की शानदार कैबिन में जंगल का मुख्य चुनाव आयुक्त लक्कड़बग्घा हाथ जोड़े खड़ा था. लक्कड़बग्घा सेठ से लगातार विनती कर रहा था, हजूर आपकी इजाजत हो तो जंगल में चुनाव की तिथियां घोषित कर दी जाएं. मैं राजा गधेजी से भी पूछ चुका हूं, उन्हें कोई आपत्ति नहीं है. उनका यही कहना था कि मतदान की तारीखें आप ही तय करेंगे. इसलिए आपके पास आने की गुस्ताखी की. तारीखें समय से घोषित हो जाएंगी तो हमें भी चुनाव की सारी व्यवस्था करने का पर्याप्त समय मिल जाएगा.

लक्कड़बग्घा लगातार बोले जा रहा था और सेठ सुनामी अपने सामने रखी फाइल के कागजों को पढ़ता पलटता, उन पर हस्ताक्षर कर रहा था. फिर उसने हूं कहते हुए एक नजर लक्कड़बग्घे पर डाली और बोला - ठीक है. जब तारीख तय कर लेंगे, आपको बता देंगे. इसके बाद सेठ ने अपना सिर ठोढ़ी के लंबवत हल्का सा हिलाया, जिसका अर्थ था कि अब तुम जा सकते हो. लक्कड़बग्घे के जाते ही सेठ ने अपनी कंपनी केलोबेलो के सीईओ झेंगा झकोई को बुलवाया और आदेश दिया, आज से ही सब न्यूज चैनलों पर चर्चा चलाओ, 'अबकी बारी, चुटियाधारी'.

यह सुनकर झेंगा चौंक गया और बोला, ₹हजूर! हमने जंगल में जो ताजा सर्वे कराया है, उसमें गधे की रिपोर्ट अच्छी है. वह इस बार भी आसानी से जीत जाएगा. फिर क्यों उसे बदलना.₹ सुनामी सेठ मुस्कुराया - हर गधा यही समझता है कि गधा जीत रहा है. गधा इसलिए नहीं जीत रहा, क्योंकि वह गधा है, वह इसलिए जीत रहा है क्योंकि उसकी इमेज बनाए रखने के लिए मैं पानी की तरह पैसा लुटा रहा हूं, तुम दिन रात टीवी चैनल पर उसके हर ग़लत काम को सही बताने के लिए दिमाग लगाते और मेहनत करते हो. जिस दिन हमारे न्यूज चैनल सच बताने लगेंगे, गधा एक मिनट में खत्म...! मुख्य बात यह है कि गधा अब इम्प्रोवाइज करने लगा है! दिमाग चलाने लगा है! झकोई तेजी से बोला, ₹ हां! गधे ने शुरू में एक-दो बार इम्प्रोवाइज किया था. अपने मन से नाले की गैस जैसी बातें भी कह दी थीं...मगर जब आपने इसके लिए फार्म हाउस पर बुलाकर पूरी रात उसकी पीठ पर चाबुक बरसाए तब से वह सुधर गया है. अब उतना ही बोलता है, जितना हम उसे टेलीप्रोम्पटर पर लिखकर देते हैं.₹ सुनामी ने घूरकर झेंगा को देखा - तुमसे जितना कहा है, उतना ही करो! अबकी बारी चुटियाधारी!

न्यूज चैनलों ने एक ही दिन में पूरे जंगल का माहौल बदल दिया था. हर कोई यही चर्चा कर रहा था, अबकी बारी चुटियाधारी! इस नई चर्चा ने मोर, मोनल, कठफोड़वा, सिपाही बुलबुल, चांदी तीतर और जंगली मुर्गे में जोश भर दिया था. वे खुद को जंगल का नया राजा मान रहे थे. उधर, सेठ दुलीचंद सुनामी की कैबिन में अलग ही नजारा था. गधा साष्टांग सेठ के चरणों में लेटा आंसू बहा रहा था. सेठ उसके सिर पर प्यार से हाथ फेर रहा था.

आदि महोत्सव में झारखंड की सोहराय कला

कला-संवाद
मनोज कुमार कपरदार

झारखंड में लोक कला का विकास विभिन्न रूपों में हुआ. उसका एक रूप परंपरागत विश्वासों, रहस्यात्मक और अतीत के संस्कारों पर आधारित था. उसका दूसरा रूप वह था, जिसमें सामाजिक रीति रिवाजों की प्रमुखता थी. झारखंड में लोक कला के माध्यम से जो कार्य हुआ, विज्ञान और दर्शन की दृष्टि से उसकी तुलना नहीं की जा सकती. ऐसी ही लोक कला में से एक है सोहराय पेंटिंग. माना जाता है कि इसका उदय और प्रचलन हजारीबाग जिले के बादम में आज से हजारों वर्ष पूर्व हुआ था. हजारीबाग जिले के बादम क्षेत्र के इस्को की पहाड़ियों की गुफाओं में आज भी इस कला के नमूने देखे जा सकते हैं. ऐसा कहा जाता है कि बादम के राजा कला के अच्छे पारखी और प्रेमी थे. इन राजाओं ने इस कला को काफी प्रोत्साहित किया. जिसकी वजह से यह कला गुफाओं की दीवारों से बाहर निकल कर घरों की दीवारों में अपना स्थान बना पाने में सफल हुई. उस समय ऐसा कोई घर नहीं था, जहां की महिलाएं इस कला से अपने घरों को सजाना नहीं जानती हो. बदलते परिवेश में इसके कलाकार और इसे जानने वाले लोगों की संख्या कम होती गई. यूं तो हजारीबाग क्षेत्र में यह कला ज्यादा लोकप्रिय है, लेकिन धीरे धीरे इस कला को अब अन्य क्षेत्र की महिलाएं भी उकेरने लगी हैं. सोहराय पेंटिंग में कलाकार काले रंग की सुंदर लकीरों के तहत आकृति को उभार देकर इसके विशेष महत्त्व को बढ़ाते हैं और सफेद रंगों को छोटी जगहों में भरते हैं. बदलते समय में बाजार को देखते हुए मिट्टी की दीवारों पर बनने वाली सोहराय पेंटिंग अब कैनवस पर जल रंग, एक्रेलिक रंग और तैल रंगों के प्रयोग से बनने लगी है और इसे अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलने लगी है. अब तो यह पेंटिंग दूसरे राज्यों के हस्तशिल्प पर भी उकेरा जा रहा है.

10 फरवरी 2024 से नई दिल्ली के मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में चल रहे आदि महोत्सव में झारखंड के वरिष्ठ कलाकार दिलेश्वर लोहरा को ट्राइफेड क्षेत्रिय कार्यालय झारखंड की ओर से भाग लेने का अवसर मिला. दिलेश्वर लोहरा ने मणिपुर के कलाकार द्वारा बनाये गये पत्थर के एक पॉट में इस सोहराय पेंटिंग को उकेर कर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को भेंट किया . पत्थर का यह पॉट कास्टिंग करके बनाया जाता है. यह आदि महोत्सव न केवल आदिवासी कलाकारों की असाधारण प्रतिभा और शिल्प कौशल को प्रदर्शित करने का एक मंच है, बल्कि जनजातीय संस्कृति, जीवनशैली और वैभवशाली परंपराओं को प्रदर्शित करने का एक प्रयास भी है. इस वर्ष 1000 कलाकारों की भागीदारी ने इस आयोजन की जीवंतता को बढ़ा दिया है, जिससे आगंतुकों को उत्कृष्ट जनजातीय कृतियों के रचनाकारों के साथ जुड़ने का एक अनूठा अवसर मिला . दिलेश्वर लोहरा ने कला एवं शिल्प महाविद्यालय से हालांकि मूर्तिकला का विधिवत प्रशिक्षण लिया है, लेकिन इन्हें झारखंड की लोक कला से गहरा लगाव है. दिलेश्वर पिछले एक दशक से सोहराय कला पर कार्य कर रहे हैं. दिलेश्वर लोहरा अपनी सोहराय पेंटिंग में सदियों पुरानी झारखंड की वास्तविक पारंपरिक शैली को उभारने का प्रयास रत है. इनकी सोहराय कला में झारखंड के प्राचीन रंगों का ही समावेश दिखता है. वर्ष 2023 में भी देश के राजधानी नई दिल्ली में आयोजित आदि महोत्सव में भाग लेकर ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मिला था.

इलेक्टोरल बॉन्ड

सुप्रीम कोर्ट ने निरस्त किया, लोगों के बीच चर्चा जारी

बॉन्ड का बेजा इस्तेमाल, भाजपा चंदे की बदौलत बनी देश की सबसे धनवान पार्टी

राजनीतिक दलों के नेताओं और आम लोगों के बीच सुप्रीम कोर्ट द्वारा निरस्त किए गए इलेक्टोरल बॉन्ड की चर्चा जोरों पर है. पार्टी नेता अपने अपने तरीके से इसकी समीक्षा कर रहे हैं. कांग्रेस सहित सारा विपक्ष इस बॉन्ड के निरस्त होने से खुश है और इस निर्णय का तहेदिल से स्वागत किया है. इलेक्टोरल बॉन्ड को लेकर लोगों के बीच तरह तरह के सवाल उठ रहे थे. इस बॉन्ड के माध्यम से पार्टियों को मिलने वाले चंदे का चुनाव में बेजा इस्तेमाल हो रहा था. इस कारण लोग इस बॉन्ड को शक की निगाह से देखते थे. उन्हें लगता था कि इस चंदे के पैसे से चुनाव प्रभावित होता है. यानी इस पैसे का ठीक इस्तेमाल नहीं हो रहा था. साथ ही किसने कितना और किसको चंदा दिया, इसका भी पता नहीं चलता था. जिससे सूचना के अधिकार का हनन हो रहा था. लोकतंत्र में सभी चीजें पारदर्शी होनी चाहिए. विपक्षी पार्टियों का कहना है कि चंदे के नाम पर ही भाजपा देश की सबसे धनवान पार्टी बन कर बैठी है.वह एक तरफ बड़े-बड़े पूंजीपतियों एवं कॉर्पोरेट घरानों का कर्ज माफ करती है, दूसरी ओर इलेक्टोरल बॉन्ड के नाम पर उससे चंदा भी वसूल रही थी. यह नाइंसाफी है. इस लिहाज से इस बॉन्ड के निरस्त होने की मांग की जा रही थी. शुभम संदेश की टीम ने सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले पर विभिन्न जिलों से राजनीतिक पार्टी के नेताओं की राय जानी है. पेश है रिपोर्ट...

विपक्षी पार्टी के नेताओं ने कहा - भाजपा इलेक्टोरल बॉन्ड के नाम पर करती थी खेला

एक तरफ कॉरपोरेट घरानों की कर्ज माफी, दूसरी ओर बॉन्ड के नाम पर चंदा वसूली

बहुत नाइंसाफी, जांच होनी चाहिए

चांडिल

कोर्ट के इस फैसले से स्वच्छ राजनीति को बढ़ावा मिलेगा : नारायण गोप

विधानसभा चुनाव में प्रत्याशी रहे नारायण गोप ने कहा कि इलेक्टोरल यानी चुनावी बॉन्ड को असंवैधानिक घोषित करते हुए इसे निरस्त करने का फैसला स्वच्छ राजनीति को बढ़ावा देगा. सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले का सभी राजनीतिक दलों को स्वागत करना चाहिए. किसी राजनीतिक दल को चंदा कहां से मिलता है और कितना मिलता है यह जानने का हक देशवासियों को है. सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले का कांग्रेस समेत सभी विपक्षी दलों ने जोरदार स्वागत किया है. इस फैसले पर सत्ताधारी दलों के नेताओं को भी खुशी मनाना चाहिए. सुप्रीम कोर्ट केस फैसले से देश की राजनीति में पारदर्शिता आएगी. भविष्य में देश में स्वच्छ राजनीति होगी. देश और राज्य का संचालन करने वाली राजनीतिक दलों में पारदर्शिता जरूरी है. जिससे देश और राज्य की जनता को राजनीतिक दलों के फंडिंग के बारे में सही जानकारी मिल सके.

धनबाद

कोर्ट का फैसला मोदी सरकार के लिए शर्मनाक पल : मोफिज साहिल

फारवर्ड ब्लॉक के नेता मोफिज साहिल ने कहा कि चुनावी बांड असल में भाजपा के लिए अवैध कमाई का साधन था, मोदी सरकार इस बांड के बहाने अपने कई उल्लू सीधे कर रही थी, देश की जनता को अंधेरे में रखकर रुपये के दम पर अपनी मनमर्जी का काम रही थी. कहीं सरकार गिराना-बनाना सारे खेल इन्हीं अवैध रुपयों के दम पर ही तो हो रहा था. ये बांड जबरन उगाही का भी एक हथियार हो सकता है. जैसे ही एसबीआइ बैंक चुनावी बांडों का ब्योरा अपलोड करेगी, बहुत सारे राज खुद ब खुद खुलकर सामने आ जाएंगे. यह मोदी सरकार के लिए शर्मनाक पल है, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने सरकार के मंसूबों पर पानी फेर दिया है. अब इस ईमानदार सरकार के नए खुलासों के लिए इंतजार कीजिए.

देश की न्यायपालिका ईमानदारी से निभा रही अपना कर्तव्य : इनामुल हक

धनबाद जिला ट्रक ऑनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष इनामुल हक कहते हैं कि सुप्रीम कोर्ट ने इस फैसले से साफ कर दिया है कि देश की न्यायपालिका अपना कर्तव्य ईमानदारी से निभा रही है. ये चुनावी बांड सिर्फ भाजपा ही नहीं बल्कि जो भी पार्टी सत्ता में रहेगी, उसको बेजा लाभ पहुंचाएगी. इस बांड को असंवैधानिक करार दिया जाना चाहिए था, ये बेहतर कदम है, इसके लिए माननीय सुप्रीम कोर्ट को सलाम. ऐसे ही बड़े निर्णय देश के लोकतंत्र को जीवित रखते हैं, वर्ना नेताओं का क्या है, अपना फायदे के लिए कुछ भी कर सकते हैं. चुनावी बांड के नाम पर हो चुकी गड़बड़ियों को भी सार्वजनिक किया जाना चाहिए. ताकि इस फैसले का देश को व्यापक असर भी दिखे.

रांची

सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हम स्वागत करते हैं,पारदर्शिता आएगी : नसर इमाम

अधिवक्ता नसर इमाम ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने इलेक्टोरल बॉन्ड को असंवैधानिक बताते हुए निरस्त कर दिया है. सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले का हम स्वागत करते हैं. इससे राजनीति में पारदर्शिता आएगी. साथ ही चुनाव प्रभावित नहीं होगा. कारण राजनीतिक दल के नेता ऐसे पैसे का ज्यादातर बेजा इस्तेमाल ही करते आए हैं.

फैसला स्वागतयोग्य,लंबे समय से उठ रही मांग पूरी हुई : अकरम राशिद

जन सूचना अधिकार मंच के संयोजक मो. अकरम राशिद ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला स्वागतयोग्य है. जन सूचना मंच लंबे समय से इसकी मांग उठा रही थी, जो पूरी हो गई है, सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हम स्वागत करते हैं. साथ ही उम्मीद करते हैं कि इस फैसले से चुनाव में पारदर्शिता आएगी. जो बहुत जरुरी है.

फैसले का हम सम्मान करते हैं, चंदे की राशि सर्वजनक हो : मेहर इमाम

अधिव्कता मेहर इमाम ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने इलेक्टोरल बॉन्ड को असंवैधानिक बताते हुए निरस्त कर दिया है. सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले का हम सम्मान करते हैं. क्योंकि बॉन्ड के माध्यम से जिसे तरह से चंदे की वसूली की जा रही थी. वह अच्छी बात नहीं है. इसे सार्वजनिक होना चाहिए.

भाजपा के चेहरे से अब ईमानदारी का नकाब धीरे धीरे हट रहा है : राजेश रंजन

महगामा विधानसभा से कांग्रेस के पूर्व विधायक रहे राजेश रंजन कहते हैं कि भाजपा वाले अपने ईमानदारी का बहुत डंका पीट रहे थे. अब सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद उनका चेहरा बेनकाब होने लगा है. सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला केंद्र सरकार के खिलाफ बहुत बड़ा सैडबैक है. अब यह खुलासा होगा कि परदे के पीछे से कितने बड़े घोटाले का काम किया गया है.

चक्रधरपुर

चुनाव में गलत तरीके से पैसे खर्च करने वालों पर लगेगी रोक: विजय सिंह

सामडकांग्रेस पार्टी के प्रखंड अध्यक्ष विजय सिंह सामड ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा चुनावी बॉन्ड को असंवैधानिक घोषित किये जाने से चुनाव में गलत तरीके से पैसे लगाने वाले राजनीतिक पार्टी के नेताओं पर रोक लगेगी .साथ ही इससे पारदर्शीता भी आएगी .सुप्रीम कोर्ट द्वारा लिया गया निर्णय सम्मान योग्य है. इस फैसला पूर्व में भी लिया जाना चाहिए था. वहीं चुनाव में काला धन को सफेद करने वालों पर भी शिकंजा कसेगा .चुनाव में राजनीतिक पार्टी को सहयोग करने वाले उद्योगपतियों को भी डर सताएगा.

कोर्ट का फैसला सही,अब सबके सामने आएगा खर्चा का ब्योरा: बहादुर उरांव

चक्रधरपुर के पूर्व विधायक सह झामुमो नेता बहादुर उरांव ने कहा कि इलेक्टोरल बॉन्ड को सुप्रीम कोर्ट द्वारा असंवैधानिक बताते हुये निरस्त किये जाने का फैसला सही है. सुप्रीम कोर्ट का फैसला सर्वमान्य होता है .चुनाव के दौरान पूंजीपति व उद्योगपति नेताओं पर चंदा के बहाने पैसा खर्च कर पाते हैं जो बेहिसाब होता है,इसलिए इस पर रोक लगना जरुरी था .चुनावी बांड के नाम पर पैसा खर्च करने वालों का ब्योरा अब सबके सामने आएगा. ऐसा नहीं होने से सूचना अधिकार अधिनियम का भी उल्लंघन हो रहा था.

गोड्डा

पूरे चंदा राशि की जांच कर रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाए : संजय यादव

राष्ट्रीय जनता दल के पूर्व विधायक संजय प्रसाद यादव कहते हैं कि इलेक्टरल बॉन्ड को रद्द कर सुप्रीम कोर्ट ने बहुत ही अच्छा फैसला दिया है. इस फैसले का स्वागत करते हुए श्री यादव ने कहा कि मैं यह मांग करता हूं कि पूरे चंदा प्रकरण की न्यायिक जांच होनी चाहिए और इसके रिपोर्ट को अविलंब सार्वजनिक किया जाना चाहिए ताकि आम जनता यह जान सके कि किसी व्यक्ति या संस्था या कंपनी ने अपनी भक्ति किस पार्टी किस पार्टी के प्रति दिखाई और बदले में उसे सरकार से कितना लाभ मिला है.

बेरमो

चंदे के कारण ही भाजपा देश की धनवान पार्टी बन गई: राकेश कुमार

सीटू के राज्य कमेटी के सदस्य राकेश कुमार ने कहा कि हमारी पार्टी शुरू से ही इलेक्टोरल बॉन्ड से मिलने वाले चंदे के खिलाफ थी. इसी इलेक्टोरल बॉन्ड से मिलने वाले चंदा के बदौलत आज भाजपा देश की सबसे धनवान पार्टी बन चुकी है. एक तरफ बड़े-बड़े पूंजीपतियों एवं कॉर्पोरेट घरानों का कर्ज माफ किया जा रहा है, दूसरी तरफ इलेक्टोरल बॉन्ड के नाम पर उससे चंदा वसूली की जा रही थी. हमारी पार्टी ने ही इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी. अभी सुप्रीम कोर्ट का स्वागत योग्य फैसला इलेक्टोरल बॉन्ड पर आया है.

भाजपा देश को तानाशाही तरीके से चलाना चाहती है : पंकज पांडेय

कांग्रेस पार्टी के गोमिया प्रखंड अध्यक्ष पंकज पांडेय ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी देश को तानाशाही तरीके से चलाना चाहती है. इसलिए प्रधानमंत्री मोदीजी संवैधानिक संस्थाओं को नष्ट कर अपने हित में इलेक्ट्रोल बॉन्ड लाया ताकि पूंजीपतियों से सीधे चंदा ले सके. इसके बदले में वे पूंजीपतियों के हित में काम करती रही और देश की जनता मूकदर्शक बनी रही. सुप्रीम कोर्ट ने मोदी सरकार को करारा तमाचा मारा है.

जमशेदपुर

यह रिश्वत को कानूनी जामा पहनाने की साजिश थी : आनन्द बिहारी दुबे

पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस अध्यक्ष आनन्द बिहारी दुबे ने कहा है कि रिश्वत को कानूनी जामा पहनाने के उद्देश्य से इलेक्ट्रोल बांड योजना को असंवैधानिक रूप से मोदीजी की सरकार ने लुट की पटकथा तैयार कर ली थी. जिसे सुप्रीम कोर्ट ने भी तल्ख टिप्पणी करते हुए असंवैधानिक करार दिया है. इतना ही नही राजनीतिक पार्टी को नगद या चेक कर जरिए मिलने वाले चंदे का ब्योरा चुनाव आयोग को देना होता है, लेकिन बांड के जरिए ब्योरा नही देने का प्रावधान कर दिया गया था, इस पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने पहले ही सवाल खड़ा कर दिया था. एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म्स के अनुसार बांड में खरीदार या भुगतान करता का नाम नहीं होता है.

जनता को चंदा राशि के बारे में जनने का पूरा हक : बलजीत सिंह बक्शी

सुप्रीम कोर्ट की ओर से इलेक्ट्रोल बॉन्ड पर रोक लगाने के फैसले एवं इलेक्ट्रोल बॉन्ड स्कीम को अवैध करार देने के पूर्वी सिंहभूम कांग्रेस जिला प्रवक्ता बलजीत सिंह बक्शी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला स्वागत योग्य है. इससे भले ही राजनीतिक दलों में खलबली मची हुई है, लेकिन जनता एवं देश के सभी मतदाताओं को यह जानने का हक है कि राजनीतिक दलों को किसने और कितना चंदा दिया है. सभी दलों को इस खर्चे एवं चंदे को सार्वजनिक करना चाहिए. उसने एक इंसान को एहसास कराया कि वह भगवान नहीं है.

फैसले के बाद अब दानदाताओं के नाम सार्वजनिक करने होंगे : सन्नी सिंह

युवा कांग्रेस के जिला महासचिव सन्नी सिंह ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट या यह फैसला ऐतिहासिक है. इस फैसले से भाजपा समेत कई पार्टियों को भी अपना ब्योरा देश वासियों के समक्ष सौंपना होगा. इससे पारदर्शिता बनी रहेगी. इस फैसले के बाद राजनीतिक दलों को चंदा देनेवाले दानदाताओं का नाम भी सार्वजनिक करना होगा. इसके रद्द होने से सबसे अधिक नुकसान भाजपा को ही हुआ है.

चाईबासा

अब भाजपा और कॉर्पोरेट के नापाक रिश्ते का पर्दाफाश होगा : चित्रसेन सिंकू

चित्रसेन सिंकू पूर्व ससंद सह कार्यकारी केन्दीय अध्यक्ष, झारखंड पार्टी का कहना है कि भारत के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डी.वाई.चंद्रचूड़ की पांच सदस्य खंडपीठ ने इलेक्टोरल बॉन्ड से संबंधित ऐतिहासिक फैसला का स्वागत करता हूं.यह फैसला ऐसे समय में आया जब जनता न्यायपालिका की विश्वसनीयत पर उंगुली उठा रही थी, इस फैसले ने भारत की जनता का भरोसा पुन: न्याय व्यवस्था पर स्थापित कर दिया है, इस फैसले के अनुरुप अगर 13 मार्च तक स्टेट बैंक आफ इंडिया ने इलेक्टोरल बॉन्ड के सारे विवरण चुनाव आयोग को सौंपता है और वेबसाइट पर सार्वजनिक किया जाता है तो भाजपा और कॉर्पोरेट के नपाक रिश्ते का पर्दाफाश होगा, साथ ही पता चलेगा कि बॉन्ड के बदले कॉरपोरेट को सरकार ने कितना लाभ पहुंचाकर अनुग्रहित किया.

फैसले से लोकतंत्र मजबूत हुआ है लोगों का विश्वास बढ़ा : महेंद्र जामुदा

महेंद्र जामुदा अधिवक्ता सह झारखंड पार्टी केंद्रीय सचिव सह प्रवक्ता का कहना है कि चीफ जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़ के पांच सदस्यीय बेंच ने राजनीतिक दलों को गुप्त चंदा वाले चुनावी बॉन्ड को अंसवैधानिक टहराते हुए जो फैसला सुनाया है इसका मैं तहे दिल से समर्थन करता हूं और प्रशंसा करता हूं,भारतीयों के न्याय व्यवस्था पर विश्वास को पुन: बहाल क्या है और लोकतंत्र को मजबूत किया है,मुझे थोड़ा भी विश्वास नहीं हो रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी इस फैसले को बर्दाश्त कर पाएंगे, कोई न कोई तिगड़म भिड़ा कर इस फैसले के निस्प्रभावी करने के लिए कोई कोर कसर नहीं छोड़ेंगे.

न्याय व्यवस्था पर लोगों का विश्वास बढ़ा है : दुर्गा प्रसाद

दुर्गा प्रसाद जामुदा, पूर्व संसद सह विशेष अमित्रित सदस्य, झारखंड पार्टी का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट ने राजनीतिक दलों को गुप्त चंदा वाले चुनावी बॉन्ड को अ ंस व ैध ानिक टहराते हुए जो फैसला सुनाया है, उसे देश की जनता को भारतीय न्याय व्यवस्था पर पुन: विश्वास होने लगा हैं, नहीं तो आज के युग में प्रजातंत्र नहीं राजतंत्र चल रहा है, अब देखना है कि प्रधानमत्री मोदी इस फैसले का तोड़ कैसे निकालते हैं, लेकिन हमें भरतीय सविधान पर विश्वास हैं.

लातेहार

सूचना का अधिकार कानून की जीत है: पंकज तिवारी

कांग्रेस के प्रदेश प्रतिनिधि पंकज तिवारी ने कहा कि कांग्रेस की सरकार ने सूचना का अधिकार कानून लाया था. चुनावी बांड को रद्द करने का फैसला सूचना का अधिकार कानून की जीत है. अब किस दल को कितना चंदा मिलता है वह सार्वजनिक हो सकेगा. एक स्वच्छ लोकतंत्र के लिए यह बहुत आवश्यक है. केद्र की भाजपा सरकार ने देश में एक अजीब सा माहौल ला दिया है. पूंजीपतियों को संरक्षण देने के लिए हर प्रकार के हथकंडे अपनाये जा रहे हैं. सरकार पूंजीपतियों की कटपुतली बन कर रह गयी है. लेकिन कोर्ट के इस फैसले से भाजपा को बहुत बड़ा झटका लगा है.

- खिताबी मुकाबले में आज थाईलैंड से भिड़ेगी भारतीय टीम

अनमोल ने भारत को फाइनल में पहुंचाया

अनमोल को दुनिया की 29वें की खिलाड़ी नातसुकी निडायरा को हराने की जिम्मेदारी सौंपी गयी और इस भारतीय ने भी उम्मीदों के अनुरूप 52 मिनट में 21-14, 21-18 से जीत दर्ज कर भारत को पहली बार फाइनल में पहुंचाया.

बैडमिंटन : एशिया टीम चैंपियनशिप के रोमांचक सेमीफाइनल में भारतीय महिला टीम ने किया कमाल

जापान को हराकर भारत पहली बार फाइनल में

भारतीय टीम ने पूर्व चैंपियन जापान को 3-2 से हराया

शाह आलम (मलेशिया)

भारतीय महिला टीम ने शनिवार को यहां रोमांचक सेमीफाइनल में दो बार की पूर्व चैंपियन जापान को 3-2 से हराकर पहली बार बैडमिंटन एशिया टीम चैंपियनशिप के फाइनल में प्रवेश किया, जिससे देश की पहला स्वर्ण पदक जीतने की उम्मीदें जीवंत हैं. तृषा जॉली और गायत्री गोपीचंद की दुनिया की 23वें नंबर की जोड़ी ने पहला युगल, दुनिया की 53वें नंबर की खिलाड़ी अस्मिता चालिहा ने दूसरा एकल और 17 वर्षीय अनमोल खरब ने निर्णायक एकल जीतकर भारत को खिताबी भिड़ंत तक पहुंचाया. भारतीय महिला टीम अब रविवार को फाइनल में थाईलैंड के सामने होगी. भारत ने 2016 और 2020 के चरण में पुरुष टीम स्पर्धा में दो कांस्य पदक जीते थे. जापान की टीम हालांकि अकाने यामागुची (दुनिया की चौथे नंबर की खिलाड़ी), युकी फुकुशिमा और सयाका हिरोटा (दुनिया की सातवें नंबर की जोड़ी) तथा मायु मातसुमोटो और वाकाना नागाहारा (दुनिया की आठवें नंबर की जोड़ी) के बिना खेल रही थी. लेकिन इसके बावजूद मजबूत टीम थी और उसने भारत के सामने कड़ी चुनौती पेश की.

एकल वर्ग में हारीं सिंधू

चोट के कारण लंबे समय बाद वापसी कर रही पीवी सिंधू हालांकि पहले एकल में अया ओहोरी के खिलाफ जीत दर्ज नहीं कर सकी और 13-21, 20-22 से हार गयीं.

तृषा व गायत्री की जोड़ी ने किया शानदार प्रदर्शन

तृषा और गायत्री ने पहले युगल में शानदार प्रदर्शन किया और नामी मातसुयामा और चिहारू शिडा की दुनिया की छठे नंबर की जोड़ी पर 73 मिनट में 21-17, 16-21, 22-20 की जीत से भारत को 1-1 की बराबरी पर ला दिया.

उलटफेर कर अस्मिता चालिहा ने किया कमाल

अस्मिता ने फिर पूर्व विश्व चैंपियन नोजोमी ओकुहारा (20वीं रैंकिंग) के खिलाफ आक्रामक खेल दिखाया. इस भारतीय ने अपने क्रास शॉट और स्मैश का बखूबी इस्तेमाल कर 21-17, 21-14 से उलटफेर भरी जीत से भारत को 2-1 से आगे कर दिया.

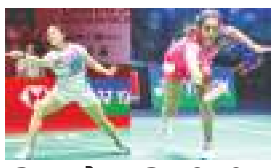

सिंधू और अश्विनी की जोड़ी ने किया निराश

तनीषा क्रास्टो को चोट लगी है, जिससे सिंधू ने अश्विनी पोनप्पा के साथ जोड़ी बनायी लेकिन वे रेना मियायूरा और अयाको साकुरामोटो की दुनिया की 11वें नंबर की जोड़ी की बाधा पार नहीं कर सकी और 43 मिनट में 14-21 11-21 से हारकर भारतीय टीम को निराश किया. अब दोनों टीमें 2-2 की बराबरी पर थीं.

ब्रीफ खबरें

जारा लेंगी अवनी प्रशांत की जगह

नयी दिल्ली। युवा गोल्फर जारा आनंद अगले महीने न्यूजीलैंड में होने वाले 44वें क्वीन सीरीकिट कप के लिए भारतीय टीम में गत चैंपियन अवनी प्रशांत की जगह लेंगी. इससे जारा भारतीय टीम में अनुभवी गोल्फर विधात्री उर्स और हीना कांग के साथ शामिल हो जायेंगी. यह टूर्नामेंट न्यूजीलैंड के क्राइस्टचर्च में 20 से 23 मार्च तक क्लीयरवाटर गोल्फ कोर्स में खेला जायेगा. अवनि इस टूर्नामेंट के पिछले चरण में व्यक्तिगत खिताब जीतने वाली पहली भारतीय बनी थीं जबकि भारतीय टीम दूसरे स्थान पर रही थीं. पर अवनि को इस साल अमेरिका में सेज वैली जूनियर इंविटेशनल टूर्नामेंट के लिए विशेष आमंत्रण मिला है.

गोल्फ अदिति और दीक्षा कट से चूकीं

रियाद। भारतीय गोल्फर अदिति अशोक और दीक्षा डागर शनिवार को यहां दूसरे दौर में सुधरे प्रदर्शन के बावजूद अरामको सऊदी लेडीज इंटरनेशनल टूर्नामेंट में कट से चूक गयीं. अदिति (78, 71) का कुल स्कोर पांच ओवर और दीक्षा (76, 74) का कुल स्कोर छह ओवर का था. कट तीन ओवर का था. अदिति पहले दौर में एक भी बर्डी नहीं लगा सकी थीं और दूसरे दौर में वह केवल एक बर्डी लगा पायीं. दीक्षा ने 5,000,000 डॉलर पुरस्कार राशि की इस प्रतियोगिता में दो बर्डी और चार बोगी लगायी थीं.

मुंबई ने असम को पारी व 80 रन से हराया

मुंबई। ऑल राउंडर शार्दुल ठाकुर के 10 विकेट और शिवम दूबे के शतक की बदौलत मुंबई ने रणजी ट्राफी में ग्रुप बी चरण का समापन असम पर दो दिन में पारी और 80 रन की जीत से किया. 41 बार की चैंपियन मुंबई का प्रदर्शन इस सत्र में शानदार रहा है जिसमें उसने पांच जीत हासिल की हैं. इन पांच में से चार जीत बोनस अंक वाली हैं जिससे ग्रुप बी तालिका में टीम 37 अंक लेकर शीर्ष पर रही. पिछले मैच से पहले ही मुंबई ने क्वार्टरफाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया था और असम के खिलाफ मैच अभ्यास मुकाबले की तरह था. ठाकुर ने दूसरी पारी में चार विकेट झटके.

राजकोट टेस्ट : दूसरी पारी में दो विकेट पर 196 रन बनाकर भारत ने कसा शिकंजा

सिराज और कुलदीप के बाद जायसवाल ने अंग्रेजों को धोया

भाषा।राजकोट

भारत ने सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल (104 रन रिटायर्ड हर्ट) के तीसरे टेस्ट शतक और शुभमन गिल के नाबाद 65 रन से इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट के तीसरे दिन स्टंप तक दूसरी पारी में दो विकेट पर 196 रन बनाकर मैच में शिकंजा कस दिया. जायसवाल (133 गेंद, नौ चौके, पांच छक्के) ने आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए मैदान के चारों ओर शॉट लगाये और श्रृंखला में दूसरा सैकड़ा जड़कर वह 400 से ज्यादा रन बना चुके हैं. उनकी इस पारी की बदौलत भारत की कुल बढ़त 322 रन की हो गयी है. दिन का खेल समाप्त होने तक गिल (120 गेंद, छह चौके, दो छक्के) के साथ दूसरे छोर पर रात्रि प्रहरी कुलदीप यादव तीन रन बनाकर खेल रहे हैं. जायसवाल के रिटायर्ड हर्ट होने के बाद रजत पाटीदार क्रीज पर उतरे लेकिन वह खाता भी नहीं खोल सके और रेहान अहमद की गेंद पर आउट हो गये. जायसवाल शुरू में आक्रामक नहीं थे, लेकिन फिर उन्होंने इंग्लैंड के गेंदबाजों के खिलाफ तेजी से रन जुटाने का फैसला किया. इसकी शुरूआत उन्होंने जेम्स एंडरसन पर दो चौके और एक छक्का लगाकर 19 रन बनाकर की. इसके बाद अगले ओवर में टॉम हार्टले पर दो छक्के जड़ दिये. इंग्लैंड ने अपनी गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण में बदलाव किया लेकिन जायसवाल की आक्रामकता बरकरार रही. इस भारतीय बल्लेबाज ने फिर अहमद पर दो रिवर्स स्वीप शॉट लगाये. इंग्लैंड के मार्क वुड को गेंदबाजी पर लगाने के बाद जायसवाल थोड़े शांत हुए लेकिन तब वह 90 रन के करीब पहुंचे तो एक एक रन लिये. वुड पर चौका लगाकर उन्होंने अपना तीसरा शतक पूरा किया.

इंग्लैंड की टीम ने 29 रनों के अंदर पांच विकेट गवाएं

इंग्लैंड की टीम ने 29 रनों के भीतर अपने पांच विकेट गवाएं. इंग्लैंड ने लंच तक पांच विकेट पर 290 रन बना लिये थे लेकिन इसके बाद पूरी टीम 71.1 ओवर में 319 रन पर सिमट गयी. इसमें सिराज ने 84 रन देकर चार विकेट झटके जबकि कुलदीप ने दो विकेट प्राप्त किये. सीनियर गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और रविंद्र जडेजा ने क्रमशः एक और दो विकेट झटककर सुनिश्चित किया कि भारत को अश्विन की अनुपस्थिति से मुश्किल नहीं हो जिन्हें शुक्रवार देर रात परिवार में चिकित्सीय आपात स्थिति के कारण टेस्ट से हटना पड़ा. इंग्लैंड के बल्लेबाज अपनी आक्रामक शैली के अनुरूप खेले लेकिन इसका उन्हें खामियाजा निचले क्रम के चरमराने से उठाना पड़ा। कप्तान बेन स्टोक्स (41) ने जडेजा (51 रन देकर दो विकेट) पर हावी होने का प्रयास किया लेकिन उनकी टाइमिंग सही नहीं थी और बुमराह ने डीप मिडविकेट पर शानदार कैच लेकर लंच के बाद सबसे बड़ा विकेट दिलाया.

शतक के बाद रिटायर हुए यशस्वी

यशस्वी को 104 रनों की शानदार पारी खेलने के बाद पीठ में खिंचाव के कारण रिटायर होना पड़ा. इंग्लैंड को पहली पारी में 319 रन पर समेटने के बाद खेलने उतरी भारतीय टीम ने दूसरे सत्र में कप्तान रोहित शर्मा (19) का विकेट जल्दी गंवा दिया. पहली पारी के शतकवीर रोहित जो रूट की गेंद पर स्लॉग स्वीप शॉट लगाने की कोशिश में पगबाधा आउट हुए.

शुभमन गिल ने जड़ा पांचवां अर्धशतक

गिल ने पहली पारी की निराशा को पीछे छोड़ते हुए पांचवां अर्धशतक जड़ा. भारत की कोशिश विकेट बचाते हुए अपनी बढ़त में इजाफा करने की थी क्योंकि अभी खेल में काफी समय बचा है. रविवार को टीम इस बढ़त को 400 से आगे बढ़ाना चाहेगी. रोहित के जल्दी आउट होने के बाद भारत की चिंता बढ़ सकती थी क्योंकि बढ़त इतनी ज्यादा नहीं थी लेकिन जायसवाल और गिल ने दूसरे विकेट के लिए नाबाद 155 रन की भागीदारी निभायी. दोपहर के सत्र में मोहम्मद सिराज और कुलदीप यादव ने रविचंद्रन अश्विन की अनुपस्थिति में अच्छी गेंदबाजी करते हुए भारत को पहली पारी में 126 रन की महत्वपूर्ण बढ़त दिलायी.

155 रन जोड़े शुभमन गिल व यशस्वी ने

104 रन बनाए यशस्वी जायसवाल ने

04 विकेट चटकाए मोहम्मद सिराज ने

322 रन से आगे है भारतीय टीम

319 रन बनाए इंग्लैंड ने पहली पारी में

एशियाई इंडोर एथलेटिक्स चैंपियनशिप

राष्ट्रीय रिकॉर्ड में सुधार के साथ ज्योति ने जीता स्वर्ण

- 60 मी. बाधा दौड़ ने ज्योति ने अपने ही रिकॉर्ड में सुधार किया
- 8.12 सेकेंड के समय के साथ ज्योति ने जीता स्वर्ण

भाषा। तेहरान

भारतीय धाविका ज्योति याराजी ने शनिवार को यहां एशियाई इंडोर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में महिलाओं की 60 मीटर बाधा दौड़ में 8.12 सेकेंड का समय लेकर अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड में सुधार करते हुए स्वर्ण पदक जीता. सौ मीटर बाधा दौड़ में 2022 एशियाई खेलों की रजत पदक विजेता ने पिछले साल इसी स्पर्धा में 8:13 सेकेंड का अपना सर्वश्रेष्ठ समय निकाला था. वह तब उपविजेता रही थीं. इससे पहले 24 साल की इस एथलीट ने 8:22 सेकेंड के समय के साथ अपनी हीट में शीर्ष स्थान के साथ फाइनल के लिए क्वालीफाई किया था. फाइनल में उन्होंने जापान की असुका टेरेडा (8.21 सेकेंड) से काफी बेहतर प्रदर्शन किया. हांगकांग की लुई लाई यियू (8:26 सेकेंड) ने तीसरा स्थान हासिल किया. ज्योति 100 मीटर बाधा दौड़ में मौजूदा एशियाई आउटडोर चैंपियन हैं. उन्होंने पिछले साल बैंकॉक में खिताब जीता था. उन्होंने हांगझोउ एशियाई खेलों में रजत पदक जीता था.

विश्व टेबल टेनिस टीम चैंपियनशिप

भारतीय पुरुष टीम ने पहले मैच में चिली को पराजित किया

- भारतीय टीम ने चिली को 3-0 से हराया
- आज पोलैंड से भिड़ेगी भारतीय टीम

भाषा।बुसान (कोरिया)

भारतीय पुरुष टीम ने शनिवार को यहां चिली को आसानी से 3-0 से हराकर विश्व टेबल टेनिस टीम चैंपियनशिप में अपना अभियान जीत से शुरू किया. स्टार भारतीय पैडलर (टेबल टेनिस खिलाड़ी) शरत कमल (95 रैंकिंग) ने दुनिया के 53वें नंबर के निकोलस बुरगोस पर 11-5 11-8 11-6 से जीत हासिल की. फिर भारत के शीर्ष रैंकिंग के खिलाड़ी और मौजूदा राष्ट्रीय चैंपियन हरमीत देसाई ने इसी लय को जारी रखते हुए गुस्तावो गोमेज को 11-8 11-7 11-6 से हरा दिया. जी साथियान को ओलिवारेस फेलिप के खिलाफ पहले गेम में थोड़ी चुनौती मिली लेकिन उन्होंने 12-10 11-8 11-8 की जीत हासिल की. इस जीत से भारत दो अंक लेकर ग्रुप तीन में दक्षिण कोरिया (चार अंक) और चिली (तीन अंक) से पीछे तीसरे स्थान पर पहुंच गया. अब भारतीय टीम रविवार को पोलैंड से भिड़ेगी जिसके बाद उसका सामना सोमवार को दक्षिण कोरिया और मंगलवार को न्यूजीलैंड से होगा. भारतीय महिला टीम रविवार को हंगरी के सामने होगी.

चयन ट्रायल 25 फरवरी से शॉटगन निशानेबाजों के लिए पटियाला में होने वाला था ट्रायल

किसान आंदोलन के बीच ओलंपिक ट्रायल पर संशय

भाषा।नयी दिल्ली

किसान आंदोलन और अंतरराज्यीय यात्रा पर लगाए गए प्रतिबंधों के मद्देनजर 150 से अधिक शॉटगन निशानेबाज इस महीने के अंत में पटियाला में प्रस्तावित राष्ट्रीय ओलंपिक ट्रायल में भाग लेने को लेकर ऊहापोह की स्थिति में हैं. भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) ने इस मसले का हल निकालने के लिए दो बैठकें की हैं लेकिन 'व्यस्त कार्यक्रम' और आम चुनाव की घोषणा के अंदेशे के बीच तीसरे चयन ट्रायल के लिए स्थान या तारीखों में अभी तक कोई बदलाव नहीं किया है. एनआरएआई ने 22 जनवरी को एक बयान में कहा था कि 25 फरवरी से दो मार्च तक पटियाला के 'मोती बाग गन क्लब रेंज' में आयोजित होने वाले चयन ट्रायल में प्राप्त अंकों को 'पेरिस ओलंपिक खेलों के लिए टीमों के चयन के लिए विचार किया जाएगा'. इस चयन ट्रायल को लेकर पीटीआई ने जिन कई शॉटगन निशानेबाजों से बात की. उन्होंने कहा कि किसानों के आंदोलन के बीच सड़क मार्ग से उनके लिये बंदूक और गोली' ले जाना सुरक्षित नहीं होगा. राज्य (पंजाब) की सीमा बंद होने के कारण चंडीगढ़ के लिए हवाई किराया आसमान छू रहा है. एनआरएआई के महासचिव सुल्तान सिंह से जब पूछा गया कि क्या परिस्थितियों को देखते हुए महासंघ पटियाला में ट्रायल आयोजित करने में सक्षम होगा, उन्होंने कहा कि यह एक बहुत ही कठिन सवाल है.

निशानेबाजों ने कहा

- सीमा बंद होने से आसमान छू रहा है हवाई किराया
- सड़क मार्ग से बंदूक व गोली ले जाना सुरक्षित नहीं

दिल्ली में ओलंपिक ट्रायल स्थानांतरित करना मुश्किल

एनआरएआई के महासचिव सुल्तान सिंह ने कहा कि दिल्ली में छह से 15 मार्च तक आगामी पैरा निशानेबाजी विश्व कप के कारण ट्रायल को दिल्ली में स्थानांतरित करना मुश्किल होगा. कर्णी सिंह रेंज में पैरा निशानेबाजी विश्व कप से पेरिस पैरालंपिक के लिए 24 कोटा स्थान है .इसमें 52 देशों के 500 पैरा निशानेबाज प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं. एक शीर्ष निशानेबाज ने गोपनीयता की शर्त पर पीटीआई को बताया कि मौजूदा परिदृश्य को देखते हुए जयपुर और यहां तक कि भोपाल निशानेबाजी परिसर भी पटियाला की तुलना में बेहतर विकल्प होंगे. उन्होंने कहा कि राज्य की सीमा पर अर्धसैनिक बल बहुत सारे दस्तावेज मांगेंगे कि हम किस उद्देश्य से इतनी बड़ी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद ले जा रहे हैं. चंडीगढ़ के लिए उड़ानें बहुत महंगी हो गई हैं क्योंकि लोग सड़क मार्ग से बच रहे हैं.

रांची में 22 से 27 फरवरी तक वुशु प्रतियोगिता का फेडरेशन कप

खेल संवाददाता।रांची

7 वीं फेडरेशन कप वुशु प्रतियोगिता और खेलो इंडिया सीनियर नेशनल वीमेन वुशु लीग का आयोजन रांची में 22 फरवरी से किया जायेगा. शनिवार को झारखंड वुशु एसोसिएशन की होटल सिटी पैलेस में बैठक हुई. झारखंड वुशु एसोसिएशन के महासचिव शैलेन्द्र दुबे ने जानकारी देते हुए बताया कि वुशु एसोसिएशन ऑफ इंडिया और झारखंड वुशु एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किये जा रही इस प्रतियोगिता में भारत के विभिन्न राज्यों के बेहतरीन खिलाड़ी भाग लेंगे. फेडरेशन कप वुशु प्रतियोगिता मे भारत के विभिन्न

राज्यों के तक़रीबन 800 खिलाडी और अधिकारी भाग लेंगे. झारखंड से 32 खिलाड़ी इस प्रतियोगिता में भाग लेंगे. फेडरेशन कप का उद्घाटन 22 फ़रवरी को दोपहर 3 बजे और समापन 24 फरवरी को शाम में होगा. वहीं खेलो इंडिया सीनियर नेशनल वीमेन वुशु लीग का आयोजन 24 से 27 फ़रवरी तक किया जायेगा. इस प्रतियोगिता मे जोनल प्रतियोगिता के विजेता खिलाड़ी भाग लेंगे. इसका उद्घाटन 25 फरवरी को और समापन 27 फरवरी को किया जायेगा. इस प्रतियोगिता में 256 खिलाड़ी व 40 टेक्निकल भाग लेंगे. इस प्रतियोगिता में एक से आठ स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों के बीच कुल 12 लाख रूपय पुरस्कार के रूप में दिया जायेगा.

ब्रीफ खबरें

प्रतिमा विसर्जन के दौरान तालाब में डूबा युवक

गया। गया जिले में जहां मां सरस्वती की प्रतिमा विसर्जन के दौरान एक युवक की डूबने से मौत हो गई है. फिलहाल एसडीआरएफ की टीम युवक को तालाब से बाहर नहीं निकाल पाई है. उसकी खोजबीन जारी है. मिली जानकारी के अनुसार, गया में प्रतिमा विसर्जन के दौरान रामकुंड तालाब में एक युवक डूब गया. घटना की जानकारी होते ही मौके पर अफरा-तफरी का मच गई. लोगों ने एसडीआरएफ की टीम को इसकी जानकारी दी, जिसके बाद मौके पर पहुंची टीम घंटों के मशक्कत बाद भी युवक लापता है.

दुकान पर घेरकर एक को मारी गोली, मौत

नालंदा । नालंदा में अधेड़ को घेरकर गोलियों से छलनी कर दिया गया. जब इससे भी जी नहीं भरा तो चाकू से शरीर को गोद डाला. मामला घटना चेरो ओपी क्षेत्र का है. पुलिस मामले की तफ्तीश में जुट गयी है. कहा जा रहा है कि पूर्व के आपसी रंजिश में वारदात को अंजाम दिया गया. मृतक की शिनाख्त विश्वनाथ यादव के 50 वर्षीय पुत्र राजेश यादव के रूप में हुई है. बताया जाता है कि पूर्व से घात लगाए हथियार से लैस अपराधियों ने दुकान को घेर लिया और 4 गोली मार दी. इसके बाद चाकू से भी प्रहार किया. जिससे घटनास्थल पर ही राजेश की मौत हो गई.

इनामी अपराधी छोटू यादव गिरफ्तार

नवादा । बिहार के टॉप वांटेड क्रिमिनल की गिरफ्तारी के लिए पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है. मामला नवादा जिले का है जहां पुलिस ने जिले के मोस्ट वांटेड टॉप-10 अपराधियों की लिस्ट में शामिल छोटू यादव को गिरफ्तार किया है. मिली जानकारी के अनुसार, अपराधी छोटू यादव पुलिस को चकमा देकर कस्टडी से फरार हो गया था. पुलिस को कई दिनों से उसकी तलाश थी. ऐसे में एसटीएफ द्वारा अभियुक्त की गिरफ्तारी को लेकर 2 लाख रुपए का इनाम भी रखा था. जिसके बाद पुलिस ने उसे आखिरकार गिरफ्तार कर लिया है.

राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के 'दरवाजे खुले हैं' कथन से सियासी तूफान

कौन क्या बोलता है, चक्कर में मत आइए : नीतीश

- तेजस्वी सहित 3 मंत्रियों के कार्यों का जांच आदेश जारी

ज्ञानवर्द्धन मिश्र/पटना

राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद के 'दरवाजे खुले हैं' कथन ने सियासी तूफान ला दिया है. पक्ष-विपक्ष इस सवाल पर आमने-सामने है. लालू प्रसाद ने उपरोक्त कथन सीएम नीतीश कुमार के लिए कहा था. इस पर डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी की त्वरित प्रतिक्रिया रही कि यह नीतीश जी को तय करना है कि उनका गठबंधन भाजपा के साथ रहेगा या राजद के साथ. लेकिन यह लालू थोड़े ही तय करेंगे. यह तय नीतीश जी को तय करना है. मामले को टूल पकड़ता देख शनिवार को नीतीश कुमार ने कहा- कौन क्या बोलता है उसके चक्कर में मत आइए. हम सब एक साथ हो गए हैं, जैसे पहले थे. स्पष्ट है उनका इशारा एनडीए की पुरानी दोस्ती और फि उसके नवीकरण व मजबूती की ओर रहा है.

मुद्दा शराबबंदी का : बिहार में लागू शराबबंदी को लेकर सीएम नीतीश कुमार ने एक बार फिर कहा है कि वे जन नायक कर्पूरी ठाकुर के रास्ते पर हैं. कर्पूरी ठाकुर ने शराबबंदी की थी. लेकिन कर्पूरी ठाकुर के सीएम पद से हटने के बाद फिर राज्य में शराब की बिक्री लागू हो गई. लेकिन, हम आए तो फिर से कर्पूरी ठाकुर का सपना साकार कर रहे हैं. राज्य में शराबबंदी लागू किया. इसे लेकर कई लोग हमारे खिलाफ में रहते हैं.

जांच आदेश जारी

पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी प्रसाद सहित पूर्व मंत्रियों रामानंद यादव और ललित कुमार यादव के पास रहे विभागों में बीते एक साल के भीतर हुए घपले, घोटालों व अन्य गड़बड़ियों की जांच कराने संबंधी सरकार के निर्णयों के बारे में सीएम नीतीश ने कहा कि जो गड़बड़ी हुई है उसकी जांच होगी, चीजें ठीक नहीं चल रही थीं. 1 अप्रैल 2023 से अब तक किये कार्यों की जांच का आदेश निर्गत हो गया है. मंत्रिमंडल सचिवालय ने उपरोक्त मंत्रियों के पास रहे विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रधान सचिव और सचिव को पत्र भेजा है. उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि मंत्रिमंडल का शीघ्र विस्तार किया जाएगा.

बिहार : लोकसभा चुनाव

सीमांचल से अधिक उम्मीदवार उतारने की है योजना : औवैसी

संवाददाता। किशनगंज

ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) आगामी आम चुनावों में बिहार के सीमांचल क्षेत्र से अधिक उम्मीदवार उतारने की योजना बना रही है. पार्टी अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने शनिवार को इस बात की जानकारी दी. उन्होंने कहा कि एआईएमआईएम वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में झारखंड में दो या तीन सीट पर उम्मीदवार उतारने की भी योजना बना रही है. ओवैसी ने यहां संवाददाताओं से कहा, हम आगामी लोकसभा चुनाव में बिहार के सीमांचल क्षेत्र से अधिक संसदीय सीट पर उम्मीदवार उतारने की योजना बना रहे हैं. पिछले लोकसभा चुनाव में हमने इस क्षेत्र में केवल एक सीट पर चुनाव लड़ा था और वह किशनगंज सीट थी. उन्होंने कहा, इस बार किशनगंज के अलावा हम तीन और सीट पर अपने उम्मीदवार उतारने की योजना बना रहे हैं.

लोन का पैसा लेकर पत्नी हुई फरार

पति ने बच्चों के साथ लगा ली आग, तीन की मौत

संवाददाता। कटिहार

जिले में पत्नी के भाग जाने के बाद पति ने अपने तीन बच्चों के साथ पेट्रोल छिड़क कर खुद को आग के हवाले कर दिया. इस घटना में तीनों बच्चों की मौत हो गई है. वहीं, पुरुष काफी गंभीर रूप से घायल है, जिसका इलाज सदर अस्पताल में चल रहा है. घटना के बारे में घायल दिनेश सिंह के भाई होरन सिंह ने बताया कि वे कदवा थाना क्षेत्र के जाजा गांव के निवासी हैं. कुछ दिन पहले उनके भाई की पत्नी सुर्पजन देवी लोन का सारा पैसा लेकर घर छोड़कर चली गई थी. पत्नी के घर छोड़कर चले जाने के बाद उनका भाई काफी सदमे में था और शुक्रवार देर रात अपने बच्चों के साथ खुद को आग के हवाले कर दिया. इस घटना में शुभंकर कुमार (9), 7 वर्षीय राजा कुमार (7) और रिंकी कुमारी (6) की मौत हो गई है, जबकि घायल दिनेश सिंह का इलाज कटिहार सदर अस्पताल में चल रहा है. वहीं, इस घटना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची. पुलिस तीनों बच्चों के शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया. पुलिस घटना के अनुसंधान में पुलिस जुट गई है. वहीं, मृतक के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है. इस घटना के बाद पूरे गांव में मातम छा गया है.

अपराधियों ने घर से बुलाकर युवक को मारी गोली, मौत

बेगूसराय : जिले के बछबारा थाना क्षेत्र में बदमाशों ने शनिवार सुबह एक छात्र को गोली मारकर हत्या कर दी. मृतक छात्र की पहचान बछबारा थाना क्षेत्र के रानी पंचायत तीन के निवासी शंकर राय के 24 वर्षीय पुत्र प्रेमचंद राय के रूप मे हुई है. बताया जाता है कि प्रेमचंद ग्रेजुशन का छात्र था. परिजनों ने बताया कि आज सुबह करीब चार बजे किसी ने उसे दौड़ने के लिए घर पर बुलाने आया था और घर से बुलाकर ले गया. घर से निकलते ही उसके सिर मे दो गोली मार दी, जिससे उसकी मौत घटनास्थल पर ही हो गई.

सेना की तैयारी कर रहा था : बताया जाता है कि प्रेमचंद भारतीय सेना की परीक्षा की तैयारी करता था और दो बार शारीरिक परीक्षा पास भी कर चुका था. वह प्रतिदिन सुबह दौड़ लगाता था.

कल दो लुटेरे घूम रहे थे, एक ने देश को दूसरे ने बिहार को लूटा : सम्राट

पटना । उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने राहुल गांधी और तेजस्वी यादव पर तंज कहते हुए कहा कि बिहार में पिछले (शुक्रवार) को दो लुटेरे घूम रहे थे. एक ने देश को लूटा और दूसरे ने बिहार को लूटने का काम किया है. भाजपा के दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन में शामिल होने के लिए दिल्ली पहुंचे सम्राट चौधरी ने बिना नाम लिए राहुल और तेजस्वी पर निशाना साधते हुए कहा कि देश को लूटने वाले राहुल और बिहार को लूटने वाले तेजस्वी हैं, जिनके परिवार ने सिर्फ बिहार को लूटा है. दोनों बिहार में एक साथ नजर आए. लालू यादव इस देश में लुटेरे के प्रतीक हैं.

बिहार सरकार से मिली मंजूरी

17 संस्थानों में एएनएम, जीएनएम बीएससी नर्सिंग की होगी पढ़ाई

संवाददाता। पटना

बिहार सरकार ने 17 नर्सिंग संस्थानों को भारतीय नर्सिंग परिषद (आईएनसी) के दिशानिर्देशानुसार ऑक्जिलरी नर्सिंग मिडवाइफरी (एएनएम), जनरल नर्सिंग एंड मिडवाइफरी (जीएनएम) तथा बीएससी नर्सिंग पाठ्यक्रम शुरू करने की अनुमति दे दी है. राज्य स्वास्थ्य विभाग ने इस संबंध में पिछले शुक्रवार को एक अधिसूचना जारी की थी. अधिसूचना के अनुसार, सभी 17 नर्सिंग संस्थानों में कुल 1,020 सीट (प्रत्येक संस्थान में 60-60) होंगी. एएनएम दो साल का डिप्लोमा पाठ्यक्रम है और जीएनएम तीन साल का (छह महीने की इंटर्नशिप सहित) है. बीएससी नर्सिंग चार साल का स्नातक डिग्री कार्यक्रम है. अधिसूचना में कहा गया है कि नौ संस्थान एएनएम पाठ्यक्रम मुहैया कराएगे, वहीं चार संस्थान जीएनएम पाठ्यक्रम पेश करेंगे. चार संस्थान बीएससी (नर्सिंग) पाठ्यक्रम पेश करेंगे. एएनएम पाठ्यक्रम संचालित करने वाले संस्थान मंझौल (बेगूसराय), मधेपुरा, नौगछिया, पालीगंज (पटना), पकड़ीदयाल (पूर्वी चंपारण), रक्सौल (पश्चिम चंपारण), फुलपरास (मधुबनी) और धमदाहा और बायसी (पूर्णिया) में स्थित हैं.

पटना में दिनदहाड़े ज्वेलरी शॉप से 5 लाख की लूट

पटना । राजधानी पटना में अपराधियों ने दिनदहाड़े एक ज्वेलरी दुकान से लाखों रुपए के ज्वेलरी की लूट की घटना को अंजाम दिया है. मामला शहर के गौरीचक थाना क्षेत्र की है. जहां संपतचक में मां शीतला ज्वेलरी शॉप में लुटेरों ने एक बड़ी लूट की घटना को अंजाम दिया है. इस दौरान दुकान संचालक को लुटेरों को पिस्टल दिखाकर शांत कर दिया. फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच में जुट गई है. लूट की यह पूरी घटना दुकान में लगे सीसीटीवी में रिकॉर्ड हो गया है. सिटी एसपी भारत सोनी ने घटना की पुष्टि करते हुए कहा है दो बाइक से करीब 5 अपराधी आये थे और करीब 5 लाख के गहने की लूट कर ली है.

विस में हार्स ट्रेडिंग के आरोपों पर ईओयू ने शुरू की जांच

पटना । बिहार विधानसभा में फ्लोर टेस्ट में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विश्वास मत तो हासिल कर लिया था, लेकिन उस दिन जदयू के दो विधायक बीमा भारती और डॉ. संजीव कुमार लेट से पहुंचे थे जबकि जदयू विधायक दिलीप राय विधानसभा नहीं आए थे. इस मामले में विधायकों के खरीद फरोख्त मामला भी आया था. जदयू विधायक सुधांशु शेखर ने पटना के कोतवाली थाने में 10 करोड़ रुपए की ऑफर दिए जाने की बात पर मामला दर्ज कराया था. अब इस मामले की जांच ईओयू को सौंप दिया गया है. पुलिस मुख्यालय के निर्देश पर ईओयू ने जांच भी शुरू कर दी है. ईओयू की टीम जांच कर रही है कि किसने कितने रुपए दिए थे और वह पैसा कहां से आया है?

इंडिया गठबंधन अब अकाल मृत्यु की ओर चल रहा है : सुमो

संवाददाता। पटना

पूर्व उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि जैसे-जैसे राहुल गांधी की न्याय यात्रा आगे बढ़ रही है वैसे-वैसे आईएनडीआई गठबंधन अकाल मृत्यु के निकट पहुंच रहा है. कांग्रेस के बड़े नेता और गठबंधन के प्रमुख दल एक-एक कर साथ छोड़ते जा रहे हैं. मोदी ने शनिवार को यहां कहा कि 28 जनवरी को कांग्रेस नेतृत्व वाले गठबंधन के सूत्रधार नीतीश कुमार के साथ छोड़ने और बिहार में फिर से एनडीए की सरकार बनने के साथ विपक्षी खेमे में भगदड़ मच गई. राष्ट्रीय लोकदल के जयंत चौधरी और नेशनल कान्फ्रेंस के नेता फारुख अब्दुल्ला ने आईएनडीआई गठबंधन से किनारा कर लिया.

कारोबार

बंधन बैंक राजस्व संग्रह के लिए किया अधिकृत

कोलकाता। बंधन बैंक को पश्चिम बंगाल की कर और गैर-कर प्राप्तियों के संग्रह के लिए अधिकृत किया गया है. निजी ऋणदाता ने शनिवार को यह जानकारी दी. यह अधिदेश बैंक को सरकारी रसीद पोर्टल तंत्र के माध्यम से राजस्व इकट्ठा करने में सक्षम बनाएगा. बैंक ने कहा कि इस अधिदेश के आधार पर लोग इस पोर्टल का उपयोग करके संपत्ति कर, मोटर वाहन कर और व्यावसायिक कर जैसे विभिन्न करों का भुगतान कर सकेंगे. राज्य में बैंक की 1,700 से अधिक लेनदेन शाखा हैं.

पेरनोड रिकार्ड की बिक्री 4 प्रतिशत बढ़ी

नयी दिल्ली । स्पिरिट बनाने वाली फ्रांसीसी कंपनी पेरनोड रिकार्ड की भारतीय बाजार में बिक्री चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में चार% बढ़ गई है. कंपनी जुलाई से जून के वित्त वर्ष का अनुपालन करती है. पेरनोड रिकार्ड ने हाल ही में वित्तीय आंकड़ों की घोषणा करते हुए कहा कि भारतीय बाजार में उसकी मांग मजबूत रही है. इसके अलावा, भारत में दूसरी छमाही में 'मजबूत वृद्धि' की उम्मीद है. भारत पेरनोड रिकार्ड के लिए वैश्विक स्तर पर अमेरिका के बाद दूसरा सबसे बड़ा बाजार है.

पीएम नरेंद्र मोदी ने भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी इकॉनमी बनाने का रखा लक्ष्य

जापान से आगे निकल सकता है भारत

भाषा । नयी दिल्ली

विश्व के कई देश भले ही मंदी की चपेट में आते जाते रहे हैं, लेकिन भारत की रफ्तार कायम है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने तीसरे कार्यकाल में भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी इकॉनमी बनाने का लक्ष्य रखा है. उनका यह लक्ष्य जल्दी ही पूरा हो सकता है. इसकी वजह यह है कि जापान की इकॉनमी मंदी की चपेट में आ चुकी है जबकि यूरोप की सबसे बड़ी इकॉनमी जर्मनी संघर्ष कर रही है. अभी भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी इकॉनमी है. उससे आगे अमेरिका, चीन, जर्मनी और जापान हैं. जर्मनी ने हाल में जापान को पछाड़कर तीसरा स्थान हासिल किया है. पहले माना जा रहा था कि भारत 2026 में जापान को पछाड़कर दुनिया की चौथी बड़ी इकॉनमी बन जाएगा. लेकिन अब भारत और जापान की इकॉनमी में अब मामूली अंतर रह गया है. इसलिए जापान से आगे निकलने के लिए भारत को लंबा इंतजार नहीं करना पड़ेगा. इसी साल भारत उससे आगे निकल सकता है.

पिछले साल जापान की इकॉनमी 1.9 फीसदी की रफ्तार से बढ़ी लेकिन इसके बावजूद वह जर्मनी से पिछड़ गया.

डॉलर टर्म में जापान की इकॉनमी 4.2 ट्रिलियन डॉलर पर है जबकि जर्मनी की इकॉनमी का साइज 4.5 ट्रिलियन डॉलर है. किसी जमाने में जापान अमेरिका को पछाड़ने के बेहद करीब पहुंच गया था लेकिन 1990 के दशक में उसकी इकॉनमी में ठहराव आ गया था. साल 2010 में जापान को पछाड़कर चीन दुनिया की दूसरी इकॉनमी बन गया और आज उसका साइज जापान से करीब चार गुना बड़ा है. वहीं यूरोप की सबसे बड़ी इकॉनमी जर्मनी को भी कई मोर्चों पर संघर्ष करना पड़ रहा है. यहां तक कि उसे यूरोप का बीमार भी कहा जाने लगा है. जर्मनी में महंगाई चरम पर है, एनर्जी की कीमत आसमान छू रही है और ग्रोथ में ठहराव आ गया है.

लक्ष्य कायम

- भारत व जापान की इकॉनमी में अब मामूली अंतर
- जापान की इकॉनमी 4.2 ट्रिलियन डॉलर पर
- जर्मनी की इकॉनमी का साइज 4.5 ट्रिलियन डॉलर

भारत की इकॉनमी रॉकेट की रफ्तार से बढ़ रही है

जापान और जर्मनी जहां संघर्ष कर रहे हैं, वहीं भारत की इकॉनमी रॉकेट की रफ्तार से बढ़ रही है. पिछले साल भारत की इकॉनमी सबसे तेजी से बढ़ी थी. आईएमएफ के अनुमानों के मुताबिक अगले दो साल भी भारत दुनिया की सबसे तेज इकॉनमी बना रहेगा. आईएमएफ के आंकड़ों के मुताबिक भारत के साल 2026 में जापान और 2027 में जर्मनी से आगे निकलने का अनुमान है. लेकिन जापान और जर्मनी में जिस तरह के हालात हैं, उससे भारत के जल्दी ही इन देशों से आगे निकल सकता है. जापान को तो भारत इसी साल पछाड़ सकता है. फोर्ब्स के मुताबिक अभी अमेरिका 27.974 ट्रिलियन डॉलर के साथ दुनिया की सबसे बड़ी इकॉनमी है. आईएमएफ के मुताबिक जापान की इकॉनमी 4.291 ट्रिलियन डॉलर की है जबकि भारत का इकॉनमी का साइज 4.112 ट्रिलियन डॉलर पहुंच चुका है.

इकॉनमी चीन को भी कई मोर्चों पर संघर्ष करना पड़

दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी इकॉनमी चीन को भी कई मोर्चों पर संघर्ष करना पड़ रहा है. देश में बेरोजगारी चरम पर है, लोग खर्च करने के बजाय बचत करने में लगे हैं, रियल एस्टेट गहरे संकट में है, विदेशी कंपनियां और निवेशक अपना बोरिया बिस्तर समेट रहे हैं और अमेरिका के साथ तनाव कम होने का नाम नहीं ले रहा है. करीब दो दशक तक दुनिया का ग्रोथ इंजन रहे चीन से निवेशकों का मोह अब भंग होने लगा है. चीन की इकॉनमी में आने वाले वर्षों में लगातार गिरावट आने की आशंका है. माना जा रहा है कि रियल एस्टेट का संकट चीन की पूरी इकॉनमी को डुबो सकता है. चीन की जीडीपी में रियल एस्टेट की करीब 30 फीसदी हिस्सेदारी है. इस संकट का असर अब बैंकिंग सेक्टर पर भी दिखने लगा है.

हिमाचल बजट

मुख्यमंत्री सुक्खू ने दूध के लिए एमएसपी बढ़ाने की घोषणा की

भाषा। शिमला

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने शनिवार को वित्त वर्ष 2024-25 के लिए राज्य सरकार का 58,444 करोड़ रुपये का बजट पेश किया. बजट में कृषि क्षेत्र पर खासतौर से जोर देते हुए गाय और भैंस के दूध के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) बढ़ाने का ऐलान किया गया. सुक्खू ने अपना दूसरा बजट पेश करते हुए कहा कि एमएसपी गाय के दूध पर 38 रुपये से बढ़ाकर 45 रुपये प्रति लीटर और भैंस के दूध पर 38 रुपये से बढ़ाकर 55 रुपये प्रति लीटर कर दी गई है. राज्य में वित्त विभाग मुख्यमंत्री के पास है. उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश दूध के लिए एमएसपी घोषित करने वाला पहला राज्य है. उन्होंने कहा कि सभी दुग्ध सहकारी समितियों की देनदारियों को माफ कर दिया जाएगा और दूध खरीद तथा प्रसंस्करण अवसंरचना को मजबूत करने के लिए 150 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे.

अडानी ने लगाई सबसे बड़ी बोली

30,000 करोड़ का प्रोजेक्ट लगा हाथ

एजेंसी । मुंबई

गौतम अडानी की कंपनी ने लार्सन एंड टुब्रो को मात देते हुए बांद्रा वर्ली के पास बांद्रा रिक्लेमेशन में महाराष्ट्र राज्य सड़क विकास निगम (एमएसआरडीसी) की 24 एकड़ भूमि के रि-डेवलपमेंट के लिए सबसे बड़ी बोली लगाई है. खबर है कि दिग्गज कंपनी मानी जाने वाली लार्सन एंड टुब्रो को पीछे छोड़ते हुए अडानी रियल्टी सबसे ऊंची बोली लगाने वाली कंपनी बन गयी है. जानकारी के अनुसार अडानी रियल्टी ने राज्य सरकार निकाय को 23.15 प्रतिशत राजस्व हिस्सेदारी की पेशकश की है. लार्सन एंड टुब्रो द्वारा परियोजना के राजस्व का 18 प्रतिशत हिस्सा पेश किये जाने की सूचना है. इस डील पर अंतिम फैसला महाराष्ट्र राज्य् सड़क विकास निगम द्वारा लिया जाना है.

कार्यक्रम में बोले आरबीआई के कार्यकारी निदेशक पी वासुदेवन ने कहा- क्रिप्टोकरेंसी मुद्रा नहीं

बिटकॉइन जोखिम भरा, विदेशी मुद्रा भंडार 5.24 अरब डॉलर घटा

एजेंसी । नयी दिल्ली

आरबीआई के कार्यकारी निदेशक पी वासुदेवन का कहना है कि क्रिप्टोकरेंसी को 'मुद्रा' नहीं माना जा सकता है क्योंकि इनका कोई अंतर्निहित मूल्य नहीं होता है. आईआईएम कोझिकोड के एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा, इस पर फैसला आखिरकार सरकार को लेना है कि क्रिप्टो मुद्राओं से किस तरह निपटा जाए. वर्तमान में बिटकॉइन को भारत में कोई कानूनी समर्थन नहीं है. निवेशकों को इसमें कारोबार से अर्जित आय पर कर देना पड़ता है. आरबीआई ने बिटकॉइन जैसी नए जमाने की क्रिप्टो मुद्राओं को लेकर आलोचनात्मक रुख अपनाया हुआ है. उसका कहना है कि ये मुद्राएं वित्तीय प्रणालियों के लिए प्रणालीगत जोखिम पैदा करती हैं. पेटीएम पेमेंट्स बैंक के खिलाफ नियामकीय कार्रवाई व प्रतिबंधों पर वासुदेवन ने कहा कि स्व-नियमन वित्तीय प्रौद्योगिकी क्षेत्र की बेहतर सुरक्षा कर सकता है.

अपनी वार्षिक समीक्षा में बोले : घरेलू प्रौद्योगिकी उद्योग का राजस्व चालू वित्त वर्ष में 3.8 फीसदी बढ़कर 254 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है. हार्डवेयर को छोड़ इस उद्योग का राजस्व पिछले वित्त वर्ष की तुलना में 3.3 फीसदी बढ़कर 2023-24 में 199 अरब डॉलर पहुंच सकता है. सॉफ्टवेयर उद्योग निकाय नैसकॉम ने शुक्रवार को अपनी वार्षिक समीक्षा में कहा, अकेले इंजीनियरिंग शोध एवं विकास (ईआरएंडडी) क्षेत्र की चालू वित्त वर्ष में कुल निर्यात राजस्व वृद्धि में 48 फीसदी हिस्सेदारी रहने वाली है. संगठन ने कहा, वैश्विक स्तर पर 2023 में तकनीकी खर्च में 50 फीसदी और तकनीकी अनुबंधों में छह फीसदी की गिरावट आने के बावजूद चालू वित्त वर्ष में 3.8 फीसदी की बढ़ोतरी का अनुमान है.

विदेशी मुद्रा भंडार 5.24 अरब डॉलर घटा

देश का विदेशी मुद्रा भंडार 9 फरवरी को समाप्त सप्ताह में 5.24 अरब डॉलर घटकर 617.23 अरब डॉलर रह गया. 2 फरवरी वाले सप्ताह में यह भंडार बढ़कर 622.5 अरब डॉलर रहा था. आरबीआई के आंकड़ों के मुताबिक, 9 फरवरी वाले सप्ताह में विदेशी मुद्रा संपत्ति 4.81 अरब डॉलर घट गई. देश का स्वर्ण भंडार 35 करोड़ डॉलर घट गया.

आयात पर डंपिंग रोधी जांच होगी शुरू

भारत ने चीन और वियतनाम से कुछ सौर ग्लास के आयात पर डंपिंग रोधी जांच शुरू की है. व्यापार उपचार महानिदेशालय (डीजीटीआर) चीन और वियतनाम में बने 'टेक्सचर्ड टेम्पर्ड कोटेड' और 'अनकोटेड ग्लास' की कथित डंपिंग की जांच कर रहा है. घरेलू उद्योग की ओर से बोरोसिल रिन्यूएबल्स ने जांच और आयात पर उचित डंपिंग रोधी शुल्क लगाने के लिए आवेदन किया है.

अगले सप्ताह खुलेंगे 4 कंपनियों के शेयर

2000 करोड़ रुपये से ज्यादा के आईपीओ, 7 शेयर होगी लिस्टिंग

एजेंसी । नयी दिल्ली

घरेलू शेयर बाजार में आईपीओ की धूम मची हुई है. सोमवार से शुरू हो रहा सप्ताह भी अलग नहीं रहने वाला है. नए सप्ताह के दौरान घरेलू शेयर बाजार में दो एसएमई आईपीओ समेत कुल 4 कंपनियों के आईपीओ खुलने वाले हैं, जो मिलकर 2000 करोड़ रुपये से ज्यादा जुटाने वाली हैं. सप्ताह के दौरान खुलने वाला सबसे प्रमुख आईपीओ जुनिपर होटल्स का है. यह कंपनी हयात ब्रांड नाम से पांच सितारा होटल चलाती है. 1,800 करोड़ रुपये का यह आईपीओ 21 फरवरी को खुलेगा और 23 फरवरी को बंद होगा. आईपीओ का प्राइस बैंड 342 रुपये से 360 रुपये रखा गया है. यह आईपीओ पूरी तरह से फ्रेश इक्विटी वाला है. कंपनी आईपीओ से जुटाई गई रकम में ज्यादातर हिस्से का इस्तेमाल कर्ज के पुनर्भुगतान में करने वाली है.

जीपीटी हेल्थकेयर आईपीओ : जीपीटी हेल्थकेयर कोलकाता बेस्ड कंपनी है, जो आईएलएस हॉस्पिटल्स ब्रांड के तहत मध्यम आकार के मल्टी स्पेशियलिटी अस्पतालों का परिचालन करती है. कंपनी का आईपीओ 22 फरवरी को खुलेगा और 26 फरवरी को बंद होगा. अभी कंपनी ने आईपीओ के प्राइस बैंड, लॉट साइज आदि के बारे में जानकारी नहीं दी है.

सरकार ने एफसीआई की अधिकृत पूंजी बढ़ाई

नयी दिल्ली । सरकार ने परिचालन क्षमताओं को बढ़ाने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) की अधिकृत पूंजी 10,000 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 21,000 करोड़ रुपये कर दी है. खाद्य मंत्रालय ने शनिवार को यह जानकारी दी. एफसीआई केंद्र सरकार की नोडल एजेंसी है जो किसानों के हितों की रक्षा के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खाद्यान्न की खरीद करता है. यह रणनीतिक भंडारण भी बनाए रखता है और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के तहत अनाज वितरित करता है. मंत्रालय ने बयान में कहा, अधिकृत पूंजी में वृद्धि अपने अधिदेश को प्रभावी ढंग से पूरा करने में एफसीआई की परिचालन क्षमताओं को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है.

▼ ब्रीफ खबरें

मुंबई के गोवंडी में आग, 15 दुकानें राख

मुंबई । मुंबई के गोवंडी इलाके में एक चॉल में आग लगने से लगभग 15 छोटी दुकानें और कुछ मकान क्षतिग्रस्त हो गए, हालांकि दुर्घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है. एक अधिकारी ने यह जानकारी दी. अधिकारी ने बताया कि दमकल विभाग को शनिवार सुबह आग लगने की सूचना मिली. बताया की गोवंडी के आदर्श नगर इलाके में बैंगनवाड़ी की एक चॉल में आग लगने से भूतल पर करीब 15 छोटी दुकानों और पहली मंजिल पर कुछ मकानों को नुकसान पहुंचा है.

पूर्व विधायक अंशुमन मोहंती बीजद में शामिल

भुवनेश्वर । कांग्रेस के पूर्व विधायक अंशुमन मोहंती यहां सत्तारूढ़ बीजू जनता दल (बीजद) में शामिल हो गये. कांग्रेस की केंद्रपाड़ा जिला इकाई के अध्यक्ष रहे मोहंती ने दो दिन पहले पार्टी छोड़ दी थी. मोहंती, शुक्रवार को यहां बीजद मुख्यालय में संगठन सचिव प्रणब प्रकाश दास सहित वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति में अपने कई समर्थकों के साथ बीजद में शामिल हुए. मोहंती ने बाद में नवीन पटनायक के आवास 'नवीन निवास' जाकर मुख्यमंत्री से मुलाकात की.

राष्ट्रपति जेलेंस्की ने किए हस्ताक्षर

पेरिस । यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने फ्रांस के साथ 10 वर्षीय द्विपक्षीय सुरक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किये. जेलेंस्की ने इससे कुछ घंटे पहले ही जर्मनी के साथ भी इसी तरह के आधिकारिक समझौते पर हस्ताक्षर किये थे. यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के दो साल पूरे होने वाले हैं और ऐसे में यूक्रेन पश्चिमी देशों से अधिक सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रयास कर रहा है. इस कड़ी में ये समझौते कीव के लिए काफी अहम माने जा रहे हैं.

पाकिस्तान : विपक्ष में बैठेगी इमरान की पार्टी

इस्लामाबाद । जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी ने अपनी अगली सरकार बनाने के प्रयास विफल होने के बाद संसद में विपक्ष में बैठने का फैसला किया है. खान की पीटीआई पार्टी समर्थित निर्दलीय उम्मीदवारों ने चुनाव परिणामों में दबदबा बनाए रखा जबकि पीएमएल-एन ने सरकार बनाने के लिए पर्याप्त संख्याबल होने का दावा किया, क्योंकि चुनाव के बाद कुछ निर्दलीय उम्मीदवार नवाज शरीफ के नेतृत्व वाली पार्टी में शामिल हुए हैं.

जयशंकर ने द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की

म्यूनिख । कनाडा में एक सिख अलगाववादी की हत्या को लेकर दोनों देशों में राजनयिक विवाद के बीच विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कनाडा की अपनी समकक्ष मेलानी जोली के साथ द्विपक्षीय संबंधों की मौजूदा स्थिति और वर्तमान वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की.दोनों नेताओं ने शुक्रवार को यहां जर्मनी में म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन से इतर मुलाकात की. यह बैठक पिछले साल कनाडा में खालिस्तानी अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या को लेकर द्विपक्षीय संबंधों में कड़वाहट के बीच हुई है.

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में हुई अनोखी शादी

तीन फीट 7 इंच का दूल्हा, चार फीट की दुल्हन...

- 14 फरवरी (वैलेंटाइन डे) के दिन हुई दोनों की शादी

एजेंसी। बुलंदशहर (उप्र)

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर के स्याना में अनोखी शादी हुई. यहां के अरशद की लंबाई लगभग साढ़े तीन फीट है. लंबे इंतजार के बाद उन्हें लगभग उनके ही बराबर की दुल्हन मिली है. उनकी शादी चर्चा में आ गई. अरशद ने शादी के लिए काफी मशक्कत की, लेकिन कम लंबाई के कारण रिश्ते की बात नहीं बनी. कई बार लड़कियां देखीं, अरशद के बराबर लंबाई न होने की वजह से रिश्ता नहीं हो सका. अरशद फर्नीचर बनाने का काम करते हैं. उनकी उम्र लगभग 35 वर्ष के आसपास है. उनके परिवार के लोग काफी समय से अरशद के लिए दुल्हन तलाश कर रहे थे, लेकिन अरशद की लंबाई के बराबर कोई लड़की नहीं मिल पा रही थी.

अरशद के एक रिश्तेदार ने स्याना क्षेत्र के गांव बैरा फिरोजपुर में कम लंबाई की दुल्हन के बारे में जानकारी अरशद के परिजनों को दी, साथ ही यह भी बताया कि कम लंबाई की दुल्हन उन्हीं के समाज से है. शादी में कोई अड़चन नहीं आएगी. इसके बाद अरशद के परिजनों ने गांव बैरा फिरोजपुर में कम लंबाई की लड़की के परिजनों से अरशद की शादी के बारे में बात की. इस पर लड़की के परिजन सहमत हो गए और वैलेंटाइन डे 14 फरवरी को दोनों की शादी कर दी.

अरशद की बारात में ट्रैफिक जाम हो गया

अरशद जब शेरवानी पहनकर ओपन रूफ कार में निकले तो देखने के लिए आसपास के लोग घरों से निकल आए. अरशद की बारात में ट्रैफिक तक जाम हो गया. कई गाड़ियों का काफिला दूल्हे अरशद को दुल्हन के घर तक छोड़ने गया. अरशद और सोना की शादी क्षेत्र में चर्चा में है. सोशल मीडिया पर भी इस शादी की चर्चा हो रही है. आसपास के लोग अरशद से बात कर रहे हैं. हालांकि अरशद ने मीडिया से दूरी बना ली है. किसी भी बात पर वह अपनी शादी के बारे में जानकारी देने से बच रहे हैं. हालांकि सोशल मीडिया पर अरशद की शादी के फोटो और वीडियो वायरल हो रहे हैं.

इनसैट-3 डीएस मौसम उपग्रह के प्रक्षेपण की उल्टी गिनती शुरू

भाषा। श्रीहरिकोटा (आंध्र प्रदेश)

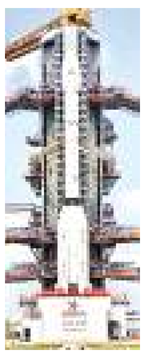

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने शनिवार को कहा कि जियोसिन्क्रोन स लॉन्च व्हीकल (जीएसएलवी) रॉकेट से इनसैट-3डीएस मौसम उपग्रह के प्रक्षेपण की उल्टी गिनती सुचारू रूप से जारी है. मिशन का उद्देश्य मौजूदा उपग्रहों इनसैट-3डी और इनसैट-3डीआर को उन्नत मौसम संबंधी जानकारियों के लिए निरंतर सेवाएं प्रदान करना, मौसम पूर्वानुमान, भूमि व महासागर सतहों की निगरानी कर आपदा संबंधी चेतावनियां देना, उपग्रह सहायता प्राप्त अनुसंधान और बचाव सेवाएं प्रदान करना है.

सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के दूसरे लॉन्च पैड से शनिवार को पूर्व-निर्धारित समय शाम 5:35 बजे उपग्रह का प्रक्षेपण होना है. इससे पहले शुक्रवार दोपहर 2:30 बजे इसकी उलटी गिनती शुरू हो गई थी. लगभग 20 मिनट की उड़ान के बाद, 2,274 किलोग्राम वजन वाले उपग्रह भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली (इनसैट) को जीएसएलवी रॉकेट से अलग किए जाने की उम्मीद है.

दो दिवसीय राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक को संबोधित करते हुए बोले मोदी-

लोस चुनाव में 370 सीट जीत कर मुखर्जी को दें श्रद्धांजलि

एजेंसी । नयी दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को भाजपा कार्यकर्ताओं से कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव में 370 सीट जीतने के लिए जी-जान से जुट जायें. कहा कि इस लक्ष्य को हासिल कर पार्टी के विचारक श्यामा प्रसाद मुखर्जी को श्रद्धांजलि अर्पित करें. प्रधानमंत्री ने यह बात यहां भारत मंडपम में राष्ट्रीय परिषद की बैठक से पहले हुई भाजपा के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक को संबोधित करते हुए कही. पदाधिकारियों की बैठक की जानकारी देते हुए भाजपा महासचिव विनोद तावड़े ने कहा, प्रधानमंत्री मोदी ने सबसे महत्वपूर्ण बात यह कही कि भाजपा को लोकसभा चुनाव में 370 सीट जीतना है. तावड़े के अनुसार मोदी ने कहा,370 सीट हमारे लिए आंकड़ा नहीं है. यह श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान को श्रद्धांजलि होगी.

370 अधिक वोट हासिल करने का लक्ष्य : उन्होंने कार्यकर्ताओं से इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए अगले सौ दिन तक जी-जान से जुट जाने का आह्वान किया. तावड़े ने बताया कि प्रधानमंत्री ने बैठक में भाजपा और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के उम्मीदवारों को लेकर कहा कि उम्मीदवार भाजपा का चुनाव चिह्न कमल का फूल होगा.

मोदी ने देश, पार्टी व समाज में नया आयाम स्थापित किया : नड्डा

नई दिल्ली । भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने केंद्र में मोदी सरकार के 10 वर्षों के कार्यकाल की उपलब्धियों को बताते हुए दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश, पार्टी और समाज को नेतृत्व प्रदान कर राजनीति में नया आयाम स्थापित किया है. अयोध्या में भव्य राम मंदिर के निर्माण और रामलला के विराजमान होने के लिए नड्डा ने राष्ट्रीय अधिवेशन की तरफ से प्रधानमंत्री मोदी को धन्यवाद भी कहा. नड्डा ने प्रधानमंत्री के नेतृत्व की तारीफ करते हुए कहा कि देश के प्रधान सेवक, जो देश के प्रशासन के कामों में पूर्णतया व्यस्त रहते हैं, इसके बावजूद पार्टी उनकी प्राथमिकता है और वो पार्टी के लिए हमेशा खड़े रहे हैं. भाजपा राष्ट्रीय अधिवेशन की बैठक में उद्घाटन भाषण देते हुए भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने उत्तर प्रदेश, असम, त्रिपुरा और उत्तराखंड सहित कई राज्यों में पार्टी की लगातार जीत का जिक्र करते हुए कहा कि 7 दशक के भारतीय जनसंघ और भाजपा के इतिहास में हमने हर कालखंड देखा है. संघर्ष और उपेक्षा का काल देखा है, जमानत बचाने के लिए चुनाव लड़ने वाला काल देखा है.

आज 17 राज्यों में एनडीए की सरकारें हैं

नड्डा ने आगे कहा कि वर्ष 2014 से पहले भाजपा की सिर्फ 5 प्रदेशों में सरकारें थी और लंबे समय तक पार्टी 5-6 पर ही रुकी हुई थी, 2014 के बाद, आज 17 राज्यों में एनडीए की सरकारें हैं और 12 प्रदेशों में विशुद्ध भाजपा की सरकार है. उन्होंने कहा कि 2014 से पहले लोग हमारा उपहास करते थे. लेकिन, 2014 में केंद्र में हमारी सरकार बनी और 2019 में फिर से हमारी सरकार बनी.

तमिलनाडु की पटाखा फैक्ट्री में भीषण विस्फोट

हादसे में 9 की मौत, कई अन्य घायल

एजेंसी तमिलनाडु

तमिलनाडु के विरुधुनगर जिले के वेम्बाकोट्टई में एक पटाखा फैक्ट्री में शनिवार को विस्फोट हो गया. इस हादसे में यहां काम करने वाले 9 श्रमिकों की मौत हो गई, जब 6 अन्य मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गए. यह पटाखा फैक्ट्री मुथुसामीपुरम में स्थित थी, जिसके मालिक का नाम विजय बताया जा रहा है. विस्फोट के बाद सात लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो ने अस्पताल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया.

हादसे की सूचना मिलने पर पुलिस, फायर ब्रिगेड की टीमें मौके पर पहुंची और रेस्क्यू अभियान शुरू किया. हादसे की प्रारंभिक जांच में पता चला कि विस्फोट फैक्ट्री के केमिकल मिक्सिंग रूम में हुआ. इस विस्फोट में फैक्ट्री के पास स्थित चार इमारतों को भी नुकसान पहुंचा है. विस्फोट इतना जबर्दस्त था कि जिस मकान में पटाखा फैक्ट्री चल रहा था, वह जमींदोज हो गया. पुलिस ने कहा कि मलबे कुछ और लोगों के दबकर मरने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता.

खास बातें

- विस्फोट फैक्ट्री के केमिकल मिक्सिंग रूम में हुआ
- विस्फोट में दो मंजिला मकान जमींदोज हो गया

एक्ट्रेस सुहानी भटनागर का 19 की उम्र में निधन

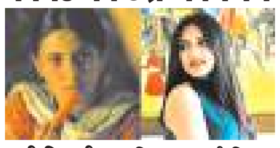

नयी दिल्ली । आमिर खान की फिल्म 'दंगल' में नजर आईं चाइल्ड आर्टिस्ट सुहानी भटनागर का निधन हो गया है. 19 की उम्र में सुहानी ने दुनिया को अलविदा कह दिया है. सुहानी का निधन शनिवार को दिल्ली में हुआ. बताया जा रहा है कि गलत ट्रीटमेंट मिलने की वजह से उनकी जान गई है. सुहानी ने फिल्म 'दंगल' में छोटी बबीता का रोल निभाया था. अब इंडस्ट्री में शोक की लहर दौड़ गई है. जानकारी के मुताबिक कुछ वक्त पहले सुहानी भटनागर के पैर में चोट लगी थी. उनके पैर में हुए फ्रैक्चर के लिए उन्होंने ट्रीटमेंट करवाई. उनकी दवाइयों से उन्हें साइड इफेक्ट होने लगे. बताया जा रहा है कि एक्ट्रेस की बॉडी में फ्लूइड बनने लगा था.

बंगाल 'राशन घोटाला' मामला

गिरफ्तार ज्योतिप्रिय मलिक को मंत्री पद से हटाया गया

एजेंसी। कोलकाता

पश्चिम बंगाल सरकार ने करोड़ों रुपये के राशन वितरण घोटाला मामले में संलिप्तता के आरोप में जेल में बंद ज्योतिप्रिय मलिक को वन मंत्री के पद से हटाकर यह विभाग बीरबाहा हांसदा को सौंप दिया है. हांसदा वन एवं स्वयं सहायता-स्वरोजगार समूह (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री हैं. एक वरिष्ठ अधिकारी ने शुक्रवार को कहा कि मलिक का एक अन्य विभाग

सार्वजनिक उद्यम एवं औद्योगिक पुनर्निर्माण ,पार्थ भौमिक को सौंपा गया है. भौमिक सिंचाई एवं जलमार्ग विभाग के प्रभारी मंत्री हैं. अधिकारी ने बताया कि यह फैसला मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की सलाह के मुताबिक लिया गया है.

मणिपुर में गोलीबारी में बीएसएफ का जवान घायल

इंफाल । मणिपुर के काकचिंग जिले में शनिवार को हुई गोलीबारी में बीएसएफ का एक जवान घायल हो गया. अधिकारी ने बताया कि घायल हेड कांस्टेबल सोम दत्त (45) हिमाचल प्रदेश के रहने वाले हैं. उन्होंने बताया कि सुगनू गांव में गोली लगने से दत्त घायल हो गये और उन्हें एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है. अधिकारी ने कहा, सुगनू में पिछले तीन दिन से हथियारबंद लोग लगातार हमले कर रहे हैं.

टीएमसी नेताओं पर गैंगरेप का केस दर्ज

कोलकाता । पश्चिम बंगाल पुलिस ने संदेशखाली मामले में आरोपी टीएमसी नेताओं के खिलाफ गैंगरेप के आरोप में केस दर्ज कर लिया है. पुलिस ने टीएमसी नेता उत्तम सरदार, शिबाप्रसाद हाजरा के खिलाफ धारा 376 डी भी जोड़ी है. दोनों टीएमसी नेता एसके शाहजहां के करीबी सहयोगी हैं. कुछ दिन पहले गांव की महिलाओं की लिखित शिकायत के आधार पर थाने में मामला दर्ज किया गया था.

अमेरिकी उप विदेश मंत्री करेंगे भारत मालदीव और श्रीलंका की यात्रा

एजेंसी। वाशिंगटन

अमेरिका के वरिष्ठ राजनयिक रिचर्ड वर्मा अगले सप्ताह भारत, श्रीलंका और मालदीव की छह दिवसीय आधिकारिक यात्रा करेंगे. वर्मा की इस यात्रा का उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र के प्रमुख साझेदार देशों के साथ अमेरिका के द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाना और क्षेत्र को स्वतंत्र, सुरक्षित व समृद्ध बनाने के लिए अमेरिका की स्थायी प्रतिबद्धता की पुष्टि करना है. अमेरिका के उप विदेश मंत्री वर्मा 18 से 23 फरवरी तक तीन देशों की यात्रा करेंगे. शुक्रवार को एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया, अमेरिका की हिंद प्रशांत रणनीति के दो साल पूरे होने के बाद होने वाली उनकी यह यात्रा एक स्वतंत्र, सुरक्षित और समृद्ध क्षेत्र के लिए अमेरिका की स्थायी प्रतिबद्धता की पुष्टि करेगी. विज्ञप्ति के अनुसार, यह यात्रा इन प्रमुख हिंद-प्रशांत साझेदार देशों में से प्रत्येक के साथ अमेरिका के सहयोग को मजबूत बनाएगी. आधिकारिक बयान में कहा गया है कि नयी दिल्ली में वर्मा आर्थिक विकास, सुरक्षा और प्रौद्योगिकी समेत कई मुद्दों से संबंधित अमेरिकी-भारत वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को बढ़ाने के लिए मुलाकात करेंगे.

सिपाही भर्ती परीक्षा

नकल की योजना बनाते 15 लोगों को पकड़ा

एटा (उप्र) : उत्तर प्रदेश में पुलिस सिपाही भर्ती परीक्षा में अनुचित साधनों का उपयोग करने की योजना बनाने के आरोप में 15 लोगों को शनिवार को गिरफ्तार किया गया है. अपर पुलिस अधीक्षक धनंजय कुशवाहा ने कहा, हमने सिपाही भर्ती परीक्षा में अनुचित साधनों का उपयोग करने की योजना बनाने के लिए 15 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है. आरोपियों से पूछताछ की जा रही है. कोतवाली पुलिस थाने की निगरानी टीम ने गिरफ्तारी की है. 17 और 18 फरवरी को हो रही उत्तर प्रदेश पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड की इस परीक्षा के मद्देनजर पूरे प्रदेश में पुलिस व स्थानीय प्रशासन सतर्क है.

ट्रंप पर धोखाधड़ी का मामला

अदालत ने लगाया 36 करोड़ 40 लाख डॉलर का जुर्माना

एजेंसी। न्यूयॉर्क

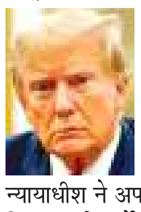

न्यूयॉर्क के एक न्यायाधीश ने पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को धोखाधड़ी के एक मामले में दोषी करार देते हुए उन पर 36 करोड़ 40 लाख डॉलर का जुर्माना लगाया. न्यायाधीश ने अपने फैसले में कहा कि ट्रंप की वर्षों पुरानी योजना में ऐसे वित्तीय विवरण पेश किए गए जिससे ऐसा भ्रम पैदा हो कि उनकी संपत्तियां वास्तव में बहुत महंगी हैं और इस प्रकार खुद को अधिक अमीर दिखाकर ट्रंप बैंकों से बेहतर शर्तों पर ऋण हासिल करने, ब्याज बचाने और ऐसी परियोजनाएं पूरी करने में कामयाब रहे जो उनके बूते के बाहर थीं. ट्रंप को तीन वर्ष के लिए न्यूयॉर्क के किसी भी कार्यालय में अधिकारी या निदेशक के पद पर काम करने पर भी रोक लगाई गई है. न्यायाधीश आर्थर एंगोरोन ने ढाई महीने की सुनवाई के बाद अपना फैसला सुनाया. ट्रंप के खिलाफ यह मामला न्यूयॉर्क अटॉर्नी जनरल लेटिशिया जेम्स ने 2022 में दर्ज कराया था.

कॅरियर-काउंसिलिंग

रजनीश प्रसाद। रांची

कृषि देश में आने वाले अनाज और खाद्य पदार्थों की मांग को पूरा करती है. बढ़ती आबादी के साथ भोजन की मांग और जरूरत दोनों में तब्दीली देखने को मिली है, जिससे एग्रीकल्चर से जुड़ी तकनीकों में वृद्धि की मांग भी बढ़ गई है. बेहतर तकनीक के साथ साथ बेहतर प्रोडक्शन और ग्रोथ के लिए मैन पॉवर का स्किल्ड होना और बेहतर आइडियाज की भागीदारी भी आवश्यक है. जिसके चलते कृषि में कोर्सेज की पॉपुलैरिटी भी बढ़ती नजर आ रही है. एग्रीकल्चर में ब्रॉड रेंज में सब-फील्ड्स देखने को मिलती है कृषि के क्षेत्र में छात्रों का रुझान और विश्व में इससे जुड़े कोर्सेज की मांग बढ़ने के कारण करियर में मिलने वाली नौकरियों की रेंज भी बढ़ जाती है.

आवश्यक स्किल्स

कृषि जैसे प्रैक्टिकल और क्रिटिकल क्षेत्र में प्रवेश के लिए आपको कुछ चीजों में स्किल्ड होने की आवश्यकता होगी, जो एक एग्रीकल्चर कोर्स करने वाले छात्र के लिए अनिवार्य है और कोर्स में सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक मानी गई है. कृषि के क्षेत्र में सफलता के लिए निम्नलिखित स्किल्स का होना है ज़रूरी...

- ऑर्गनाइजेशनल स्किल्स
- मैनेजमेंट स्किल्स
- पीपल स्किल्स
- लाइफ लॉन्ग लर्नर
- एनालिटिकल और क्रिटिकल थिंकिंग स्किल्स
- मैकेनिकल माइंड
- टीम वर्क
- लीडरशिप
- प्रोफेशनल कम्युनिकेशन

12वीं के बाद स्पेशलाइज़्ड विषय

- सॉइल साइंस
- बायोकेमिस्ट्री
- एग्रोनमी
- एक्सटेंशन एजुकेशन
- प्लांट पैथोलॉजी
- बायोटेक्नोलॉजी
- एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स
- एंटोमोलॉजी
- प्लांट
- एनिमल साइंस

12वीं के बाद कृषि की पढ़ाई

12वीं पास होने के बाद अगर आप कृषि के क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो आप बीएससी एग्रीकल्चर करने का विचार कर सकते हैं. बीएससी एग्रीकल्चर एक 4 साल अंडर ग्रेजुएट बैचलर डिग्री का कोर्स होता है. बीएससी एग्रीकल्चर कृषि आप नीचे दिए गए विषयों से कर सकते हैं.

- एग्रोनोमी
- बागवानी
- हॉर्टिकल्चर
- मृदा
- विज्ञान
- जीव विज्ञान
- गणित
- अंग्रेजी
- पैथोलॉजी
- भूमि सर्वेक्षण
- विधि विज्ञान
- जल संसाधन प्रबंधन
- पशु और कुक्कुट प्रबंधन

भारतीय कॉलेज

- इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली
- तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबटूर
- आचार्य एनजी रांगा कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- केन्द्रीय संस्थान कृषि अभियांत्रिकी, भोपाल
- पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना
- अंबिल धर्मलिंगम कृषि कॉलेज और अनुसंधान संस्थान, थिरुचिरापाली
- भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
- इंडियन वेटरनरी रिसर्च इंस्टिट्यूट, बरेली
- राष्ट्रीय डेयरी रिसर्च इंस्टिट्यूट, करनाल

मुद्रक तथा प्रकाशक लगातार इंफोटेनमेंट प्राईवेट लिमिटेड द्वारा लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में, सिमलिया, रिंग रोड, पीएस-रातू, रांची - 835222 से मुद्रित तथा राजकमल प्लाजा, रूम नंबर 102 जयप्रकाश नगर, डीनोवली स्कूल रोड बरटांड़, धनबाद-826001 झारखंड द्वारा प्रकाशित.
संपादक - सुरजीत सिंह, स्थानीय संपादक - दीपक कुमार अम्बष्ठ*. फोन नंबर- 0651-2961734 आर.एन.आई. नंबर - JHAHIN/2023/84487 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार.)